प्रस्तावना.

प्रिय विज्ञ पाठक वृन्द :—

लिखते हुये मुझे अत्यानन्द होता है कीं, श्री महावीर ग्रंथमालाके यह अंक सजधजके साथ लुप्त प्राय विद्याओंका और औषधियोंका बडीही खोजके और परिश्रमके साथ पुनः प्रचार किया जा रहा है.

यद्यपि इस बीसमींशदीमें अधिकांश महानुभवोंका इतना विश्वास इन विद्याओंपर नहीं रहा हैं और वे इस विषयमें अनेक प्रकारकी शकाएँ किया करते हैं लेकिन इस साम्प्रतिक कालमेंभी यह विद्याएँ पहिले जितनीही सिद्ध और कार्यकारिणी हो सकती हे वशर्तेकि यथाविधी दृढ विश्वासपूर्वक इनकी साधना की जावे। क्योंकि " विश्वासों फलदायक " इस न्यायानुसार विश्वासहीसे फलकी सिद्धि होती हैं उपेक्षा करना ठीक नहीं हो सकता । अतः इस विषयमें अब जादा न लिखकर आपके समक्ष जो लिखनेका हैं वही लिखा जा रहा है ।

सिद्धबिसाकल्पः—यह कल्प वही है का, जो श्रीपद्मावती देवीने महामहोपाध्याय श्रीमेघविजयजी गणिको स्वप्नमें बताया था

देव्यापद्मावत्या स्वप्नकथित यंत्रस्यप्राहुबाहुबल्याद्याः मुनयाः नयकोविदाः

उसीको हमने ४५० यंत्र प्रति कृती ओर करीबन २५०० श्लोक मूल भाषांतरके साथ पाठकोंके सामने उपस्थित किया है उसके अंदर **'अर्हं'** शब्दसे बिसा किस तरह बनता हैं वह बडीही सरल युक्ति-योंसे समजाया गया है इस ग्रंथको देखकर पाठकोंकी यह शंका निवृत्त होती है की बिसा यंत्र नव कोठेमें भी बनता है इस ग्रंथमें तिखुणा चोखुणा पद्माकार पचासोंही प्रकारके बिसा सिद्ध करके दिखला दिया है. लौकीक कहावत हैं कीं, **" जिसके घर बिशा । उसका क्या करेगा जगदीशा ॥** यह ग्रंथ बहोत उपादेय वा संग्राहणीय है यह यंत्र राजदरबारमें विजय दिलाता है, वसीकरणमें इसका सानि दुसरा नहीं रखता व्यापारमें लाभ दिलानेमें इसके ढंगका यह एकही है, आरोग्यादी प्राप्तिमें अपने जोडका दुसरा नहीं रखता बन्दीखानेसे छुटकारा दिलानेमे यह अद्वितीय है, और दुखीयोंका दुखको यह बीसा क्षणभरमें कापुर कर देता हैं इत्यादि—

नोट—आजकल दुनियामे यंत्रोकी हरिफाई बहुतसी चलती हे परंतु हमारे भाईयोंको उसीका कुछ भी लाभ नहीं मिल सकता है इस लिये, उनसे हमारा निवेदन हैं कीं इस ग्रंथको संग्रह करे ताकी इस ग्रंथके आधारसे कोईभी यंत्रकी हरिफाई करनेमें ठीक पडेगा यह ग्रंथ यंत्रोकी हरिफाईमे रामबाण है (मेघविजयजी के हस्तलिखित ग्रंथोकी यादी ओर उनके समयका वर्णन अर्हद् गीताग्रंथके देखें)

गाहाजुअल स्तुतिः ...ीय श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वरजी टीकाकार पूण्यसा... वाचकने किया है दुसरी ...है आम्नाय बहुत सरल है ईसमें

आठानीक हेमसिद्धि आदि गुप्तविचार है जो थोडासा श्रम करनेपर सिद्ध हो सकती है स १३८० में जिनप्रभसूरिने अपने हातोंसे टीका रची है और लिखी है वहभी समयपर छपाया जायगा पुस्तकोंकी प्रेस कॉपी तयार हो रही है

बावन तोला पावरती—यह कल्प उन्ही महात्माका बनाया हुवा है की जिन्होंने सवालाख अजैनकों जैन बनाया था उन्ही महात्माका यहकल्प पाठकोंके सामने रखा जाता है वही श्रीदादाजी जिनदत्तसूरीश्वरजी महाराज जो दुनीयामें धर्मार्थ काम और मोक्षके आले-दरजेके डॉक्टर या वैद कहे जाते है

धर्मके लिये बडे बडे ग्रंथ निर्माण करगये है उदाहरणार्थ [उपदेशरसायन, कालिकोश, चरचरी इत्यादि] दुनीयामें ३५ महान बिमारी या [देहरोग] ३६ मी दरिद्रावस्था और ३७ मी मौत [कर्मरोग] है इसकल्पकेद्वारा ३५ महानबिमारी [देहरोग] और ३६ मी दरीद्रावस्था नस्ट होती है और मौत (कर्मरोग) के लिये उपदेश रसायन आदि ग्रंथ मोजुद है

पाठकगण—इसकल्पको परीक्षा करदेख सकते है उस महात्माका निर्वाण वि सवत १०११ मे अजमेरमें हुवा है इससे समयका निर्णय की कल्पना हो सकती है

उग्रवीर कल्प—यहएक महात्माका अनुभूत किया हुवा कल्प है इसके विषयमें अधिक तारीफ करना व्यर्थ होगी जबकि इसकी महत्ता इसके नामसेही प्रगट होती है। इसकी साधनासे अनेकों प्रकारकी बाधाएँ और दरिद्रता देखतेही देखते नष्ट हो जाती है साधना बहुतही सरल है। पर प्रयोगोमे चलता है

चन्द्रकल्प—श्रीमान् जगतशेठजीका सिद्ध किया हुवा। यह चन्द्रकल्प बडीही खोज और परिश्रमसे जगतशेठकी उनपुस्तकोंमे प्राप्त हुवा है जिनका कि वे हमेशा अध्ययन किया करतेथे।

इसकी दृढ विश्वासपूर्वक यथाविधी साधना करनेसे ६ महिनेमें चन्दका साक्षातकार होता है यह लिखना कोई गलतफहमी नही होगी कि जगतशेठने इसकी साधनासेही अतुल यश प्राप्त किया था।

हम अपने उत्तर दायित्व पूर्ण कृतकार्यमें कहातक सफल हुवे है इसका निर्णय विज्ञ पाठकोंपर ही निर्भर हैं।

प्रेसके भूतोंकी कृपामे यदि कहीं शुद्धाशुद्धीका नियम भंग हुवा हो तो विज्ञ उसे सुधारकर पढें।

यह सिद्ध विसाकल्प आदि ६ कल्प समाजमें नई लहर पैदा करही देगी यदि पाठकोंने इसे अपनाया तो फीरसे मै दुसरा ग्रंथ लेकर उपस्थित होउगा एसी आशा है।

निवेदन,
एम् के कोटेचा.

॥ श्रीरावण पार्श्वनाथस्तवम् पाठः ॥

श्रीपार्श्वः प्रकट· प्रभाकर इव प्राज्यप्रभावैभवा·
तेजोनन्ततया जगत्त्रयमपिप्रोद्भासयनंजसा ॥
श्रीमद्रावणनामतीर्थविषये ख्यातस्तमोनाशक ।
स्तुत्यादर्शन निर्मलश्रियमयं पुष्णातु मे नित्यशः ॥ १ ॥

अर्थः–विशाळ प्रभावना वैभवथी अनन्त तेजवडे त्रणे [illegible] उद्भासन करता (प्रगट करता) अेवा, तथा श्रीमद्रावण [illegible] विषयमां (संबधमां अथवा ते क्षेत्रथी) प्रसिद्ध थयेला, [illegible] रुपी अंधकारनो नाश करनारा अेवा प्रगट सूर्यसरखा [illegible] (अेटले श्रीरावण पार्श्वनाथ), ते हमेशा मारी सम्यक्[illegible] पुष्ट करो [वृद्धि पमाडो]॥१॥

श्रीमद्श्रावणमासवत् त्रिजगतीसन्तापविच्छि[illegible] ।
प्रोन्नीताम्बुदगर्भे (वस्त्व) देहविमलज्योति[illegible] ॥
यो वै रावण मेघवत्सितरुचिश्चिन्तामणी नाम[illegible] ।
लोकालोक नमो ददान विधिना जागर्तिमूर्त्या[illegible] ॥ २ ॥

अर्थः–आकाशमां चढेला मेघना गर्भ सरखा [illegible] पामेली निर्मल कांति वडे [अर्थात् मेघ सरकी कृष्ण कान्ति [illegible]] श्रीमद्[illegible] जळनी लक्ष्मी वाला) श्रावण मास सरखा जे पार्श्वप्रभु [illegible] जगतना [illegible] नाश करनारा छे, तथा जे प्रभु श्रीरावण[illegible] कृष्ण कान्तिवाला छे, अथवा जे प्रभु मुख्य चिंतामणी [illegible] छे, तथा लोकना [illegible] आलोकनथी [ज्ञानथी] [illegible] मूर्तिमान [illegible] जागृत छे–प्रगट छे [संबंध

यस्यश्रावणगोचरेपि विचरन्नामापिनिर्मापित ।
त्रैलोक्याद्भुतवैभवान्भवभृतां प्रोद्भावयेद्भावत ॥
स श्रीरावणनामधेय भगवान् पार्श्वः सदा सम्पदे ।
भूयाद्मगलमालिकाकमलिनी प्रोल्लासभानूदयः ॥ ३ ॥

अर्थः–तथा जे प्रभुनु नाम पण श्रावणना विषयमा वर्ततुं निर्माण छे [य रहित करता रावण पार्श्वनाथ नाम थयेलु छे], तथा त्रणे लोकना अद्भुत वैभवथी प्राणीओने भावथी जे प्रभु ज्ञानादि वडे प्रगट करनारा [अर्थात् जीवोनी ज्ञानादिलक्ष्मीनो वैभव प्रगट करनारा] छे, ते मंगलीकनी माळा [मगळना समुह] रुपी कमलिनीने विकस्वर [प्रगट] करवामा सूर्योदय सरखा श्रीरावण पार्श्वनाथ नामना प्रभु हमेशां सपदानेमाटे थाओ ॥ ३ ॥

स्पष्टश्चाष्टम एव यः प्रतिहरि र्नाम्नातिधाम्नाहरि ।
पूर्वंरावण एप ते चलनयो भक्ति प्रसक्तोभवत् ॥
ते न त्वत् प्रतिमासमान महिमा कैलाशशैलाशयात् ।
निन्येऽर्चारचनैः स्तवादि वचनैः स्वीयं पुर पावितुम् ॥ ४ ॥

अर्थ –स्पष्ट (प्रगट थयेला) अेवो जे आठमोज प्रतिवासुदेव के जे पोतान नाम वडे अने अत्यत तेज वडे हरि=इन्द्र सरखोथयो ते रावण प्रति वासुदेवज प्रथम तारा बे चरण कमळनी भक्तीमा अत्यत लीन थयो, अने ते रावणेज तारी समान महिमावाळी [उत्तम महिमावाळी] प्रतिमा कैलाशपर्वतन स्थान उपरथी (अष्टापद पर्वत उपरथी) पुजा रचवा पुर्वक अने स्तुति विगेरेन वचनो सहीत (अर्थात् पुजा स्तुती करीने) पोतानु नगर पवित्र करवाने लइ गयो [अर्थात रावण पोताना नगरमां श्रीपार्श्व प्रभुनी प्रतिमा लाव्यो]॥४

जानेतज्जनकात्मजाव्यतिकर प्रोद्भूयमानानया-
न्मत्वा त्व ननुभङ्गमेवभगवन्नेतत्स्थले तस्थिवान् ॥
भुविरावणाख्यनगरं तत्तेन सवासितम् ।
श्वे चेन्द्रपथ सुतेन विहित तेनेन्द्रजिच्छर्मणा ॥ ५ ॥

र्थः—जाणे ते सीताना वृत्तान्तथी प्रगट थयेला अन्यायथी हे भगवन् नेश्चय आ नगरनो भंगज थशे अेम जाणीने तमो ते स्थळे न रह्या, तेथी तेणे रेवाने माटे पृथ्वीमां रावण नामनुं नगर वसाव्युं, अने तेनी पासे इन्द्रजीत गमना पुत्रे पोताना कर्म वडे (पोतानी इच्छा वडे) इन्द्रप्रस्थ नामनुं नगर त्साव्युं || ५ ||

तत्तीर्थं प्रथितं पुराणकथितं त्वत्संज्ञयैव प्रभो ।
लोकाभ्यर्थनयार्थसार्थयुगपद्दानेन देवार्चितम् ॥
श्रीवामेयममेयमेत्रभवताद्धिर्भवेत्सेवने ।
यस्याश्चक्रिरमा रसेन परमा वश्याभवेदाभवम् ॥ ६ ॥

अर्थः— तेथी लोकनी प्रार्थना वडे लोकना वांछितार्थना समूहने समकाळे—शीघ्र पूर्ण करवाथी हे प्रभु ! देवोने पण पूजनीक अेवुं ते नगर तारा नामवडेज तीर्थ रूपे प्रसिद्ध थयुं, अने पुराणमां—शास्त्रमां पण तेनुं वर्णन करायुं अेवा तीर्थमां रहेला ते श्री वामेय=पार्श्व प्रभु के जे अमेय=अपार महिमा वाळा छे तेमने सेववाथी बुद्धि=ज्ञान लक्ष्मी प्रगट थाय छे, तेमज जे सेवा थी चक्रवर्तिनी पण उत्कृष्ट लक्ष्मी हर्ष सहित संपूर्ण भवपर्यन्त पोताने वशवर्ती थाय छे. ॥ ६ ॥

त्वज्जन्मन्यमृतं जगत्समभवद्दुःखोपशान्तेर्जने ।
साकल्याणमयी तदामृतरसैः वृष्टिःसुरैर्निर्मिता ॥
विस्तीर्णं जिनशाशनं तवगिरा यत्रामृतस्थापना ।
लोकेनामृतमस्ति तेनसुलभं देवप्रमादोदयात् ॥ ७ ॥

अर्थः—जे वखते हे प्रभु ! तमारो जन्म थयो त्यारे लोकमां दुःखनी शान्ति थवाथी आ जगत अमृत (मरणादि दुःख रहित) थयुं ते वखते देवोअे पण कल्याणकारी अेवी ते अमृत रसनी वृष्टि करी, तेमज तारुं विस्तीर्ण अेवुं जिनशासन के जेमां त्हारी वाणी वडे अमृतनी स्थापना थयेली छे (अर्थात् जिनशासनमां तारी वाणी रूप [illegible] सदा विद्यमान छे), तेथी लोकमां हे देव ! प्रमादना [illegible] सुलभ नथी (कारण [illegible] सघळुं श्री जीनेन्द्रनी व. [illegible] तो लोकमां बीजे क्या मळे

इन्द्रास्त्वज्जनने जिनेन्दुसहसा सर्वैसमीयुर्भुवि ।
वैरस्यापि विहाय सर्वमसुरा वैरस्यमभ्येयरुः ॥
इन्द्रैरग्निकुमारकासुरगणै' सत्राभवत्सौहृदम् ।
नक्षत्रस्यततोजनेऽजनिकथा देवर्द्धिदेवाख्यया ॥ ८ ॥

अर्थ —हे श्री जिनचंद्र ! त्हारा जन्म वखते सर्वे इन्द्रो आ सहसा-शीघ्र आव्या, तेमज पोतानी वैरी देवोनी साथेना वैरनो त्याग करी सर्वे असुरा=असुरेन्द्रो पण आव्या (सुर अने असुरनो वैर लोक प्रसिध्ध तेथी अेम कह्युं) तेमज [लोक प्रसिद्ध वैरवाळा अेवा] इन्द्रोने अने अ कुमारादि असुर देवोने पण अेक बीजा साथे परस्पर मित्राई थई, ते देवाधिदेवना नामथी लोकमा नक्षत्रनी कथा प्रसिद्ध थई [आ कथा बहुश्रुतथी जाणवी] ॥ ८ ॥

द्रागूविद्रावणमेतिमोहचरट स्तेवीक्षणात्तत्क्षणात् ।
नामश्रावणभावसौख्यकरणं निश्वेशितस्तावकम् ॥
श्रीमद्रावणपार्श्वमेघविजयाज्जोतिर्भवन्मूर्तिजा ।
नित्यानन्दपद ददातु विशद शैव च दैव शुभम् ॥ ९ ॥

अर्थ—हे प्रभु ! त्हारा दर्शनथी तत्क्षण-शीघ्र मोह रुपी चरट-चोर तु विनाश पामे छे, हे विश्वना ईश ! त्हारु नाम सामळवु (त्हारा नामनु श्रव ते) पण भावसुखने (मोक्षसुखने) करनारु छे हे श्रीमद् रावणपार्श्व प्रभु मेघना विजयथी उत्पन्न थयेली त्हारी मूर्त्तिनी ज्योति' [मेघने जितना त्हारा शरीरनी कान्ति अथवा श्री मेघविजयजी उपाध्याय जे आ स्तोत्र कर्ता तेमनाथी स्तुति करायली त्हारा शरीरनी कान्ति] ते निर्मळ, उपद्रवरहि अने शुभदैवरुप अेवु नित्यानदपद अेटले मोक्षपद आपो ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीरावणपार्श्वनाथ स्तोत्रम् ॥

श्रीअर्जुनपताकाख्ये, विजयापर नामनि ।
स्यादर्ध ५ भू १ मितेयंत्रम्, मध्ये पंचप्रतिष्टया ॥ १ ॥

अर्थः-जेनुं बीजुं नाम विजययन्त्र छे, ओवा अर्जुनपताका नामना यन्त्रमां [अर्ध=५ अने भू=१, अंकोनां वामतो गतिः ओ प्रमाणे] १५ प्रमाणनो ओटले पंदरीयो यन्त्र मध्यखानामां ५ नो अंक स्थापवाथी थाय छे ॥ १ ॥

एवं यत्र त्रिभागाप्ति – र्यन्त्राणि पूर्वसूरिभिः ।
सर्वाणि तानि फलदा – न्युक्तानि नव वेश्मसु ॥ २ ॥

अर्थः-ओ प्रमाणे ज्यां पूर्वाचार्योओ त्रीजा भागनी प्राप्तिवाळां यन्त्रो दर्शाव्या छे, ते सर्वे यंत्रो नव गृहमां-खानामां स्थपाय छे, अने ते सर्वे फळदाता कह्या छे[1] ॥ २ ॥

पूर्वनैऋतिकोदीची – वायु मध्याऽग्निदक्षिणः !
ऐशानी पश्चिमा तासु, क्रमादंकनिवेशनम् ॥ ३ ॥

अर्थः-प्रथम पूर्वदिशामां, त्यारबाद नैऋत्यकोणमां उत्तरदिशामां वायव्यकोणमां मध्यमां अग्निकोणमां दक्षिणदिशामां ईशानकोणमां अने पश्चिमदिशामां ओप्रमाणे क्रमपूर्वक कहेली दिशाओमां अनुक्रमे अंकस्थापन करवुं ॥ ३ ॥ आ ९ खानावाळा कोठामां पंदरीयो यन्त्र करवानो छे, तेथी उपर कह्या प्रमाणे पंदरनो त्रीजो भाग ५, तेने प्रथम मध्य खानामा स्थापवो. त्यारबाद ओ ५ जता वधेला दशमांथी ओक अंक न्यून करीने त्यारबाद ओकेक न्यून न्यून अंक त्रीजा श्लोकमां कहेला अनुक्रम प्रमाणे स्थापता पूर्वखानामा ९, नैऋत्य खानामां ८, उत्तर

१ दो अट्ठेहिं न दीजइ दीजइ छक्केण तह चउकोणे । सत्तमितइएवचा नव पंचेकेणआगमण॥ =५ जे मध्यमां स्थापेल छे तेनी साथे २-८ स्थापता ६-४ स्थापता ७-३ स्थापवा, अने ९-१ स्थापता पंद[illegible] थाय छे. उपरनो पंदरीयो यन्त्र ओ प्रमाणेज बन्यो छे ते अनुक्रमे इशान नैऋत्य [illegible] अग्नि ६-४, उत्तर दक्षिण ७-३ पश्चिम ९-१ ओ क्रमथी मध्यगत

ईशान	पूर्व	अग्नि	
उ			द
	२	•	४
	७	मध्य५	३
	६	१	८
वायु	पश्चिम	नैऋत	

१५ यन्त्रमिदम्

र	चं	मं
बु	वृ	शु
श	रा	के

४	९	२
३	५	७
८	१	६

नैऋत्ये मध्यमगति विजययन्त्रं

खानामा ७, वायव्य खानामा ६ मध्य खानामा ५ (नो अक तो प्रथमथी स्थापेलोज छे), अग्नि खानामा ४, दक्षिणखानामा ३, इशान खानामा २, अने पश्चिम खानामा १, पुनः दिशिना फेरद्वारथी [जे खानामा जे अक आ यन्त्रमा आवेल छे ते प्रमाणे नहिं आवता बीजी बीजी रीते] पण पदरीया यन्त्र अनेक बने छे जेम के-उपरना यन्त्रमा पूर्वदिशिने उर्ध्व स्थापी छे, तेने बदले जमणी बाजूमा स्थापीओ तो बीजी रीते पण पदरीयो यन्त्र थाय ते आ प्रमाणे-

वा	उ	ई	
प			पू
	६	७	२
	१	५	९
	८	३	४
नै	द	अ	

१

ओ रीते दिशिस्थापनना फेरफारथी जेम आ बीजो पदरीयो यन्त्र बने तेवी रीते मध्यखानु वर्जीने शेष ८ खानामा ९ ना अकने फेरवता आठ प्रकारना पदरीया यन्त्र बनी शके छे, परन्तु मध्यखानामां नवनो अक राखीने पदरीयो यन्त्र बनी शके नहिं

क्रमाद्कोल्लघनेऽपाच्या — मेकेऽधिके धृते भवेत् ।
रस ६ भू १ यन्त्रनिष्पत्ति , एवमेकोनविंशति. ॥ ४ ॥

अर्थः-पदरीयामा जे अनुक्रमे अंक स्थाप्या छे तेनु उल्लघन [ते कामनु उल्लघन] करीने जो दक्षिणादिशाथी प्रारभीने तेज क्रमथी अेकेक अक ५ स्थापता जईओ तो (रस = ६ भू = १) रसभू अेटले * १६ ना

यत्रनी उत्पत्ति थाय छे, अने अेज प्रमाणे १९ नो यत्र पण बने छे ॥४॥

वायावेकेधिकेतद्वत्, मुनिभू १७ यंत्र निर्मितिः ।
एवद्वयेधिके विश -- त्यादि यत्रं प्रसाध्यते ॥ ५ ॥

अर्थः-तेनी पेठे [१६ ना यत्रनी पेठे] वायुकोणमां [वायु- मध्य- अग्निमां] १ अधिक कर्याथी [मुनि ७ भू १ अेटले] १७ ना अकनो यंत्र थाय छे, अने अे प्रमाणे वे अधिक [तथा अेक] कर्याथी २० विगेरेनो यत्रो बने छे ॥ ५ ॥

दश१० द्व्यर२ ष्ट८ चतु४ सत७- नव९ षड्वेद् पव'५ शिवाः११ ।
त्रयचेत्यंक राजीस्यात्, साकस्माद्विंशयंत्रके ॥ ६ ॥

अर्थः-१०-२-८-४-७-९-६*-५-११ अे अंकश्रेणि जे २० ना यत्रमां आवे छे ते शा माटे ? -इति प्रश्नः- ॥ ६ ॥

तत्रोत्तरं नवस्थान्यां, शकुनार्थग्रहस्थितौ ।
भानुर्दशशतार्चिष्मान्, आदावुत्रोदिगं १० शत' ॥ ७ ॥

---

* इ.
१
२

३	९	४
७	५	४
६	२	८

द.

प.

१६ यन्त्रम्

३	९	५
७	६	४
७	२	८

१७ यन्त्रम्

अे प्रमाणे दक्षिण पश्चिम इशानमा अेकेक अंक अधिक करवाथी १६ नो यंत्र थयो अेमा वायुथी अग्नि कोणनी श्रेणिमा १६ थता नथी, तेमज४नो अंक वे वार आव्यो तेनो विरोध विचारवो नहिं. पुनः अेज१६ ना यंत्रमा वायुकोणथी वायु-मध्य अग्नि अे त्रणस्थाने अेकेक अंक वधारता १७ नो यत्र अे प्रमाणे थयो. १९-२० नो यत्र आगळ कहेवाशे.

* ३ नो अंक पण आवे छे.
१ २० नो यंत्र—
अहिं यंत्रमा ५-६ अंक छे आगळ कहेवाशे.

१० र	२ सो	८ म
४ बु	७ गु	९ शु
५-६ श	११ रा	३ के

२०

५ ६	४	१०
११	७	२
३	९	[illegible]

अर्थ'-उत्तर-ओ प्रश्ननो उत्तर आ प्रमाणे छे के-ग्रहस्थानोमां रहेला अर्थात् नव स्थानोमा रहेला नव ग्रहो उपरथी शकुन (शुभाशुभफळ) देखवाने अर्थे-जाणवाने अर्थे नव स्थानोमा जे नव अंक स्थपाय छे त्या प्रथम १० नो अंक स्थापवानु कारणके-सूर्यग्रह हजार किरणवाळो छे, अने पहेली राशिमा [मेष राशिमा] दिग्=१० अंश जेटलो होय त्यासुधी अति उच्च गणाय छे, माटे ९ खानावाळा यंत्रमा प्रथम १० नो अंक स्थपाय छे ॥ ७ ॥

उत्तरायणत पूर्वो - त्तरयोरंतरेस्थित' ।
श्रेष्ठोदिग्अर्के योगोस्मात्, एकोने नवमोपिच ॥ ८ ॥

अर्थ'-वळी ते सूर्य उत्तरायणथी (उत्तरायणमा वर्तती होय त्यारे) पूर्व अने उत्तर दिशाना आंतरामां (ईशानकोणमा) रहेलो [उगतो] होय छे तेथी (दिग्=१० अर्क=सूर्य अेटले) सूर्यनो १० अंशवाळो योग श्रेष्ठ कह्यो छे, अने तेथी १० नो अंक ईशान कोणमा स्थपाय छे अने तेमाथी १ न्यून करता नवमो सूर्ययोग पण श्रेष्ठ गण्यो छे ॥ ८ ॥

चंद्र प्राच्या वृषेप्युच्चो, द्विकेवारो द्वितीयेक' ।
अंशेऽप्युच्चः कृष्णपक्ष - हान्या चैकोन भावतः ॥ ९ ॥

अर्थ'-चद्र पूर्व दिशामा उदय पामे छे, अने बीजी वृषभराशिमा ते अति उच्च गणाय छे, ते त्रण अंश सुधी अति उच्च गणाय छे, जेथी बे अंशमा वर्ततो पण उच्च गणाय, तेमज चद्रनो वार (सोमवार) पण सूर्यवारथी [रवीवारथी] बीजो छे, पुन. त्रण अंशनी उच्चतामाथी अहिं बे अंशनी उच्चतागणी ते कृष्णपक्षमा हानि पामवाथी अहिं अंशमा पण अेकनी न्यूनता गणीने बे अंशनो उच्च गण्यो, जेथी दशना अंक पछी बीजो २ नो अंक स्थापवो ॥ ९ ॥

अगारकस्तथाग्नेय्या, नवार्चिष्मान् स चक्ररुक् ।
तदेकोनेस्थितोऽष्टाके, दशातोऽस्याष्टवार्षिका ॥ १० ॥

ग्रह अग्निकोणमा रहे छे, अने नव अर्चि [नव

जीव्हा] वाळो तथा मुखरोग वाळो गणाय छे, अथवा वक्री होय त्यारे रोग फळने आपनारो छे, ते नवमांथी अेक न्यून करता ८ अकमां रहेलो गणाय, अने ते कारणथी अे मंगळनी दशा पण ८ वर्षनी छे. ॥ १० ॥

पतिरष्टमराशेश्च, सिद्धैकोनांक ९ पाद्वान् ।
आगामिराशिफलदो, भवेदष्ट दिनांतरे ॥ ११ ॥

अर्थः-वळी अे मंगळ ग्रह आठमी राशिनो (वृश्चिक राशिनो) पति छे, तेथी (अेक न्यून अंक अेटले) ८ पादवाळो सिध्धिने अर्थे छे, तेमज ८ दिवसने आंतरे (८ दिवस याद) आगामी राशिनुं (वृश्चिक राशि पछी आवती धनराशिनुं) फळ आपवा वाळो छे [माटे वीसना यन्त्रमां ये पछी ८ नो अंक स्थपाय छे. ॥ ११ ॥

पंचार्चिष्मान् बुधोवक्र — भावादेकोनतः कृते ।
दशासप्तदशाह्वास्याऽ — र्कभागे शेषमाशुगाः ॥ १२ ॥

अर्थ-पाच अर्चिवाळो [पांच जीभवाळो] छे, अने ते वक्रभाव वाळो [वक्री] होवाथी ४ मास थया वळी अेनी १७ वर्षनी दशा छे, तेने [अर्क-यडे=] बार वडे भागतां शेष [आशुग-बाण अेटले] पांच रह्या ॥१२॥

तत्राप्येकोनतायां स्यात्, द्विगुणश्चन्द्रतो बुधः ।
अष्टस्थानाक्षरास्याद्गीः — पतिस्तस्या बृहस्पतिः ॥ १३ ॥

अर्थः-ते पाचमांथी पण अेक न्यून करतां ४ रह्या, जेथी चंद्रथी बुध द्विगुण थयो. [कारणके पूर्वे चंद्रमाटे २ नो अंक छे अने अहिं बुध माटे ४ नो अक थयो तेथी द्विगुणथयो], माटे विंशतियन्त्रमां ४ नो अंक स्थपाय छे तथा गीः=वाणी—सरस्वती आठ स्थानना अक्षरवाळी (कंठ्य-स्थानादि आठ स्थानथी अक्षरोचार गण्या छे माटे आठ स्थान वाळी) कही छे, अने ते गी [=वाणी पति गिष्पति=बृहस्पति छे] ॥ १३ ॥

अष्टबुद्धेर्गुणस्तद्वान्, स [illegible] गुरुः ।
वक्रत्वादेकहीनत्वे, [illegible] स्थपात् ॥ १४ ॥

अर्थ:-बुद्धिना ८ गुण वाळो गुरु छे, परतु वक्रपणाथी [शुक्रमी होवाथी] अेक न्यून करता ७ रह्या, ते माथ अंशमा वर्ततो गुरु मध्यम गणाय छे, [अर्थात् गुरु कर्कराशिनो ५ अश सुधी वर्ततो होय त्यारे अति उच्च गणाय छे, अने ते उपरान्त छ सात आदि अशमा वर्ततो मध्यम गणाय छे], तेमज सिद्ध छायावडे प्राप्त थयेला ७ ना अकथी गुरुस्वामी विंशतियन्त्रमा कर्यो छे ॥ १४ ॥

दशास्यैकोनविंशाब्दाऽ – र्के १२ भागेशेपसप्तकात् ।
वागिन्द्रियसप्तमत-स्स्वामी सप्ताकवान् गुरुः ॥ १५ ॥

अर्थ.-वळी जे गुरुनी दशा १९ वर्षनी छे, तेने अर्क-सूर्य अेटले बार वडे भागता शेप ७ रहेवाथी, तेमज वचनेन्द्रिय [१० कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रियमा] वचनेन्द्रिय सातमो छे, तेनो स्वामी गुरु छे, माटे गुरु विंशतियन्त्रमा ७ ना अकवाळो छे ॥ १५ ॥

अश्विन्यादशमपैत्र, तज्जातत्वात्कवेर्दश ।
नववक्रैकहीनत्वे, नवाह पश्चिमास्तत ॥ १६ ॥

अर्थ:-अश्विनी नक्षत्रथी दशमु पैत्र [मघा] नक्षत्र छे, ते दशमा पैत्र नक्षत्रमा जन्म थयाथी अने वक्रीहोवाथी अेक अंक न्यून करता शुक्रनो विंशतियंत्रमा ९ नो अक छे तेमज पश्चिम दिशामा नव दिवस वर्ततो होवाथी नव अक शुक्रना स्थापना करेला छे ॥ १६ ॥

दशैकविंशत्यब्दा – स्यादर्केनि नवशेपत ।
सिद्धसार्धाष्टपादेपु, राशिमध्यफलानमू ॥ १७ ॥

अर्थ –तथा शुक्रनी दशा अेकवीस वर्षनी छे, तेने सूर्यना बार अंकवडे बाद करता (अथवा भागता) ९ शेप रहेवाथी, तथा पोतानी राशिमा पादोमा वर्ततो शुक्र मध्यफळवाळो होवाथी (साडा आठ ते नवमानो अक छे माटे) शुक्रनो ९ नो अक विंशतियन्त्रमां स्थपाय छे ॥१७॥

कविसार्धाष्टमासान्प्राग्, प्रतीच्यां नवमासभुक् ।
ससार्चिष्मान्शनिर्वक्र — भावात्पट्चैकहानितः ॥ १८ ॥

अर्थः-शुक्र पूर्व दिशामा साढा आठ मास अने पश्चिम दिशामां ९ मास भुक्त होय छे, (भोगी होय छे), ते कारणथी शुक्रनो ९ नो अंक विंशतियंत्रमां होय छे तथा शनि सात आर्चि [७ जिव्हा] वाळो छे, अने ते वक्री होवाथी अेक बाद करतां ६ ना अंकवाळो गणाय छे ॥ १८ ॥

पन्मासानातिचरेत, फलद्द्यात्ताथग्रिम ।
वक्रत्वेपचमास्यस्य, युगाग्निभूदिनो१३४क्तितः ॥ १९ ॥

अर्थ'—तथा शनि ६ मास अतिचार गतिवाळो छे, तथा ६ मासे अग्रिम [पछीनी राशिनुं] फळ आपनारो होय छे, अने वक्र होवाथी ते बन्ने छमांथी १–१ बाद करतां पांचनो अंक आवे छे, तेमज वक्रीपणाना १३४ दिवस कहेला होवाथी चार मास उपरान्त पाचमो मास पण १४ दिवस सुधी वक्री छे ते कारणथी शनिनो ५ नो अंक विंशतियंत्रमा स्थपाय छे ॥ १९ ॥

राहुकेतुर्वक्रगती, त्रिभी३रुद्रै११स्तयोर्गतिः ।
स्थानद्वये वैपरीत्यात्, प्रतिष्ठाऽत्र द्वयोरिह ॥ २० ॥

अर्थः-तथा राहुनी अने केतुनी गति अनुक्रमे ३ मास तथा ११ मासनी छे माटे विंशतियंत्रना स्थानमां विपरीतपणे ते बन्ने अंकनी स्थापना करवी, अर्थात् प्रथम केतु संबंधि ११ नो अंक स्थापीने त्यारबाद राहु संबधि ३ नो अंक स्थापवो ॥ २० ॥

एवं शकुनखेटानां, स्थानाद्विंशतियंत्रकम् ।
निश्चित मेघविजय–श्रिया विभववृद्धिदम् ॥ २१ ॥

अर्थ'–अे प्रमाणे शकुन निमित्तवाळा ग्रहोना स्थानोथी [नव स्थानोथी]
श्री मेघविजयजी उपाध्याये ... वैभवनी वृद्धि आपनारो
२० ना अंकनो यंत्र [वि...]... नो निश्चय करेलो ॥ २१ ॥

दशावताराद्दाशार्हे, चन्द्राकौ दृशि जन्मना ।
अष्टमीदोश्चतुष्कंच, नगभृत्त्व७च नदजे९ ॥ २२ ॥

अर्थ'-दाशार्हना-कृष्णना १० अवतार थया, चन्द्र अने सूर्य बे छे [अथवा जम्बूद्वीपमा २ सूर्य २ चंद्र छे], तेनो जन्म-उदय ८ दिशिमा थाय छे [आठे दिशिमा भिन्न भिन्न क्षेत्रनी अपेक्षाओ उदय प्रकाश करनार होवाथी ८ दिशिमा उदय गणाय,], अथवा दिशाओ ८ होवाथी केवळ दिशाओ तथा अष्टमी तिथि, तथा [दोश्चतुष्क] चार भुजाओ कृष्णनी छे ते, तथा नगभृत्पणु अेटले [कृष्णे पर्वतने धारण कर्यो छे माटे कृष्णनु गिरिधर पणु, अने नद-नव थया छे माटे नंदपणु ॥ २२ ॥

बिंदुषट्कं पचहृषी – केशत्व च त्रिविक्रमे ।
एकादशीव्रतेष्टत्व, ध्येयं-विंशतियन्त्रत ॥ २३ ॥

अर्थ'-बिंदु छ छे, तेथी बिंदु पणु, तथा इन्द्रियो पाच छे, तेथी इन्द्रियपणु, [अथवा कृष्ण हृषीक=पाच इन्द्रियोनो ईश=पति होवाथी कृष्ण पोतेज हृषीकेश कहेवाय छे माटे हृषीकेशपणु अेटले पाच इन्द्रियोनु स्वामीपणु], अने त्रिविक्रम [३ पराक्रमवाळा] पण कृष्णनूज नाम छे, तेथी त्रिविक्रमपणु, अने अेकादशी व्रतनु इष्टपणु अे सर्व विंशतियन्त्रथी ध्येय-भावना योग्य छे ॥ २३ ॥

पार्श्वेदशभवाअष्ट – गणागणभृतस्तथा ।
युग्मजयस्यविजय – स्तुर्यावोपेक्षनगा७फल ॥ २४ ॥

---

१ विंशति यन्त्रमा कृष्णनी भावना आ प्रमाणे—

१० ना अकथी दश अवतार	९ ना अकथी नवनंदपणुं
२ ना अकथी चद्र सूर्य	६ ना अकथी बिंदुपणु
८ ना अकथी आठ दिशि अथवा अष्टमी तिथि	५ ना अकथी पाच इन्द्रिय स्वामीपणुं
४ ना अकथी चार भुजा	३ ना अकथी त्रिविक्रमपणु
■ ना अकथी गिरिधारणता	११ ना अकथी अेकादशी व्रतेष्टपणु

अर्थः-(हवे श्री पार्श्वनाथ प्रभुनी भावना विंशति यंत्रथी थाय छे ते आ प्रमाणे-) श्री पार्श्वनाथना दश भव थया छे माटे १० नो अंक भाववो. अर्थात् विंशतियंत्रमां स्थापेला १० ना अंकथी श्रीपार्श्वप्रभुना १० भव विचारवा ८ ना अंकथी श्रीपार्श्वनाथना आठ गणअने आठ गणधर थया छे ते विचारवा, जय अने विजय [कर्मोपर जय विजय ...] थी २ नो अंक विचारवो ४ ना अंकथी चार प्रकारना ... उपदेश विचारवो, ७ ना अंकथी सात फणा विचारवी ॥ २४ ॥

नवहस्ततनूरत्न – त्रयमेकादशीव्रते ।
शतानिपंचभूतांगादलि, वैक्रियर्धिभृतः प्रभोः ॥ २५ ॥

अर्थः-९ ना अंकथी नव हाथनुं शरीर, ३ ना अंकथी रत्नत्रयी [दर्शन ज्ञान चारित्र], ११ ना अंकथी अेकादशी व्रतनुं, ... अंकथी पांच भूत अने ते सहित अेक शरीर मळीने ... विचारवो अे प्रमाणे वैक्रियऋद्धि वाळा प्रभुना ... प्रकारना ... रना अंक विंशतियंत्रथी विचारवा ॥ २५ ॥

आयुर्विंशात्यधयः पूर्वं, भाव्यन्ते भव्यजन्तुभिः ।
द्वेषारिविजयात् सर्व–सिध्यै विंशति यंत्रके ॥ २६ ॥

अर्थः-विंशति यंत्रमां-यंत्रथी भव्य जिवोअे श्रीपार्श्वनाथ ... पूर्व भवनुं २० सागरोपमनु आयुष्य विचारवुं, तथा ... [राग द्वेष रूप शत्रुना] विजयथी सिद्धि पण विंशतियंत्रथी ...

॥ इति श्रीविजययंत्र प्रभावः ॥



हवे चार गति-रीतिवडे २० नो यंत्र थाय छे, तेनी रचना केटलीक ते आ प्रमाणे—

आद्यालिंगा पक्षे २ हया ७ ब्धयो ४ का' ।
द्वितीयपंक्तौ रस ६ दृक् २ समुद्रा ॥
अधोग ६ रामा ३ वसव ८ प्रसिद्ध ।
सिद्ध बुधा विंशति यत्रमाहु ॥ १ ॥

ईशान	पूर्व	अग्नि	
४	७	२	
४	मध्य२	६	२० द
८	३	६	
वायु	पश्चिम	नैऋत्य	

(grid flanked on the left by: उ)

अर्थः-विंशति यत्रमा पहेली पंक्तिने विषे पक्ष=२ हय=७ अने अब्धि=४ [=अकगति प्रतिलोम होवाथी अनुलोम-क्रमश' स्थापता ४-७-२] अे त्रण अंक छे, त्यारबाद बीजी पंक्तिमा रस ६ दृक=२ अने समुद्र=४, जेथी क्रमशः स्थापता ४-२-६ अे त्रण अंक छे, तथा त्रीजी पंक्तिमा अग=६राम =३ अने वसु=८प्रसिद्ध छे, जेथी क्रमश' स्थापता ८-३-६ अे त्रण अंक छे अे प्रमाणे बुध-पंडित जनोअे सिध्ध थयेलो आ २० नो यत्र कह्यो छे ॥ १ ॥

निधानमानैरिहशिष्टकोष्टै ।
स्वेष्टमये यत्र सुसूत्रणेयं ॥
मध्यस्थितांकैः ७ ६ ३-४ द्विगुणै १४-१२ ६-८ स्वपार्श्वो-
भयाक ४ २-२-६-६ ८ ८ ४ युक्तैर्गतय चतस्र' ॥ २ ॥

सातदू १४ तत्र ४-२ मेलने २० इत्येकागति. ६ छदू १२ तत्र २-६ मेलने २० द्वितीया तीन दू ६ तत्र ६-८ मेलने २० तृतीया चार दू ८ तत्र ४ ८ मेलने २० चतुर्थी

अर्थ -अेमां निधान=नव संख्यावाला करेला उत्तम कोठाओ-त्याना वडे पोतानी इंष्टा-ईच्छाप्रमाणें आ यत्रनी उत्तम सूत्रणा-गुथणी-रचना करेली-करेली छे ते आ प्रमाणे-मध्यवर्ती अंकोने ७-६-३-४ ने द्विगुण करता १४ १२ ६-८ थाय, ते दरेकने पोतानी पडखे रहेला बे बे अकोनी साथे [४-२ । २-६- । ६-८ । ८-४ नी साथे] युक्त करता चार गतिये (चारे रीतिये) २० नो अक आवे छे ॥ २ ॥ ते आ प्रमाणे-सात दू १४,

मां ४-२ मेळवतां २० थया ॥ इत्येका गतिः ॥ छ दू १२ मा २-६ मेळवतां २० थया ॥ इति द्वितीया गतिः ॥ त्रण दू ६ मा ६-८ मेळवता २० थया ॥ इति तृतीया गतिः ॥ चार दू आठमा ४-८ मेळवता २० थया ॥ इति चतुर्थी गतिः अे प्रमाणे चार रीते २० नो अंक प्राप्त थाय छे

हये ७ गुणे ३ चद्विगुणे १४-६ पिविशा ।
कृते ४ रसे ६ पि द्विगुण ८ १२ तथा सा २० ॥
कोणेप्यथांगे ६ जलधौ ४ द्विनिघ्ने १२-८ ।
गजे ८ भुजे २ चद्विगुणे १६ ४ तथान्या ॥ ३ ॥

अर्थः-हय=७ ने गुण=३ अे बेने द्विगुण करतां १४-६ थाय ते बेने मेळवता पण २० थाय छे, ॥ इति पंचमी गतिः ॥ पुनः कृत=४ तथा रस=६ ने द्विगुण करतां ८-१२ थाय, ते बेने मेळवतां २० थाय ॥इति षष्ठी गतिः॥ (अे बे गति मध्योर्ध्वपंक्ति तथा मध्यतिर्यक्पक्तिनी अेटले दिशिअंकनी थई, अे प्रमाणे विदिशिपक्तिनी पण बे गति आ प्रमाणे-] विदिशिमां पण अग=६ तथा जलधि=४ अे बेने द्विगुण करता १२-८ थाय, ते बेने मेळवता २० थाय ॥ इति सप्तमि गतिः ॥ पुनः गज=८ तथा भुज=२ ने द्विगुण करतां १६-४ थाय, ते बेने मेळवतां बीजा २० थाय, ॥ अष्टमी गति ॥ ३ ॥

१ उपर स्थापेला यत्रमा मध्यवर्ती अेटले पूर्व दिशानो ७ नो अक छे तेने बमणा करवाथी १४ थया तेमा पडखे रहेला बे अक अेटलें ईशाननो ४ अने अग्निनो २ मेळवता २० थया. अे अेक रीति थई. पुनः दक्षिणनो ६ अक मध्यवर्ती छे, तेने द्विगुण करवाथी १२ थया तेमा अेज छनी बे पडखेना बे अक अेटले अग्निनो २ अने नैऋत्यनो ६ अे बे अक मेळवता २० थया—अे बिजी रीति, पुनः पश्चिमनो ३ अक मध्यवर्ती छे तेने द्विगुण करता ६ थया, तेमा अे त्रणनी पडखेना ८ तथा ६ ने मेळवता २० थया—अे त्रीजी रीति पुनः उत्तरनो अंक ४ मध्यवर्ती छे, तेने द्विगुण करता ८ थया, तेमा अे चारनी पडखेना बे अक ८-४ मेळवता २० थया—अे चोथी रीति.

२ ७-२-३ अे त्रण अकवाळी मध्योर्ध्वपंक्ति अेटले पूर्व पश्चिम पंक्ति, अने ४-२ अे त्रण अकवाळी म [illegible] उत्तरदक्षिण पक्ति.

दिगक ७ ६-३ ४ योगे नवमीगति स्या
द्विदिग्गतांके ४ २-६-८ दशमी स्फुटैव ॥
आद्यालिकोष्टद्वितये ४ ७ पिचाद्ये ।
युक्तेतृतीयालिमकोष्टयुग्मे ३ ६ ॥ ४ ॥

अर्थ -तथा पश्चमा दिशिने विषे स्थापेला ७-६-३-४ अंकोने मेळवता पण २० थाय ते नवमी गति-रीति छे ॥ इति नवमी गति ॥ तेमज विदिशिमा रहेला अंको ४-२-६-८ ने मेळवता पण २० थाय, ओ दशमी गति तो स्पष्टज छे ॥ इति दशमी गति ॥ तेमज पहेली पंक्तिना पहेला बे कोठामा-स्थानामा रहेला ४-७ अे बे अंकमा त्रीजी पंक्तिना छेल्ला बे कोठामा रहेला ३-६ अे बे अंक मेळवीअे तो पण २० थाय ॥ इति एकादशी गति ॥ ४ ॥

एकादशीय गतिरित्थमुक्ता ।
तथाद्य पंक्तावचले ७ भुजे २ च ॥
युक्ते तृतीयालिमुराष्ट ८ रामे ३ ।
स्याद्वादशीयगतिरर्क १२ तुल्या ॥ ५ ॥

अर्थ-अे प्रमाणे अे अगिआरमी गति कही, तथा पहेली पंक्तिमा छेल्ला ने अंक अचल=७ तथा भुज=२ छे, ते बेने त्रीजी पंक्तिना पहेला अष्ट=८ अने राम=३ अे बे अंकमा युक्त करीये तो ते २० ना अंकनी [अर्क-तुल्य सूर्य जेटली अेटले] बारमी गति थई इति द्वादशी गतिः ॥ ५ ॥

द्विकेन २ तर्केण ६ कृतेन ४ सिध्या ८ ।
त्रयोदशी साग ६ रसै ६ समुद्रः ४ ॥
प्रमाण ४ युक्तेश्च चतुर्दशीसा ।
जानागति विंशतिसंख्ययैव ॥ ६ ॥

अर्थः-तथा द्वि=२ तर्क=६ कृत=४ सिद्धि=८ अे [अर्थात् अग्नि दक्षिणना ने मा उतर वायव्यना ४-८] मेळवता जे २० थाय ते तेरमी गति

गति जाणवी ॥ इति त्रयोदशी गतिः ॥ तथा अग=६ रस=६ समुद्र=४ अने प्रमाण=४ [अर्थात् दक्षिण नैऋत्यना ६-६ मा उत्तर ईशानना ४-४] मेळवतां पण २० थाय ते विंशति सख्या संबंधि ज चौदमी गति थई इति चतुर्दशी गति ॥ ६ ॥

अधःस्थिताष्ट ८ द्विगुणस्क मध्य-
स्थितद्वयेनेत्यपि पोडशामी ।
मुख्यैश्चतुर्भि' सहिताहिविंश-
संख्याततः पंचदशीयमत्र ॥ ७ ॥

अर्थः-पुनः यंत्रमां नीचे रहेला ८ ने द्विगुण करी १६ थाय तेमां मध्य कोठामां रहेला २ ने पण द्विगुण करतां थयेला मुख्य अंक ४ ने मेळवीअे तो अे रीते पण [८×२=१६ २×२=४ १६+४=२०] वीसनो अंक प्राप्त थाय, तेथी विंशतियत्रमां अे पदरमी गति थई॥इति पचमदशागतिः॥७॥

कोणस्थपड्मध्यगतद्वयेन, द्विघ्नाततोद्वादशतेऽष्टयुक्ता ।
स्यात्पोडशीयंगणनातथैव, साविंशते स्तोरणसञ्ज्ञयेह ॥८॥

अर्थः-तथा खूणामा रहेला ६ ने मध्यमां रहेला २ वडे द्विगुण करीअे, तो १२ थाय, तेमा खूणामा रहेला ८ ने युक्त करीअे तो २० थाय, अे सोलमी गणत्री (गति) छे, अे प्रमाणे करेली वीसनी गणत्री ते आ यत्रमां तोरण गति नामनी छे ॥ इति पोडशी तोरणगतिः ॥ ८ ॥

सिध्या ८ऽथमध्याऽब्धि ४ भुजां २ ग ६ भाजा
त्पष्टि १२ प्रमाण गणानापताका ॥
धृति १८ प्रमाष्ट ८ त्रि ३ भुजा २ चलां ७ कै. ।
पिपीलिका शकुगति प्रवृत्त्या ॥ ९ ॥

अर्थः-सिध्धि=८ तथा म ...ध्य-४ भुजा=२ अंग=६
(८-४-२-६) वडे मत्तर प्रमा... अेटले सत्तरमी) ग...

२० थाय छे, ते सत्तरमी पताकागति जाणवी ॥ इति सप्तदशी पताका गति' ॥ तथा अष्ट=८ त्रि=३ भुजा=२ अने अचल [पर्वत]=७ ऐ (८-३-२-७) अंकवडे शकुगतिनी प्रवृत्ति गणत्रीथी २० ना पिपीलिका गति जाणवी अ धृतिप्रमा [=धृति=१८ प्रमाणनी अेटले १८ मी गति छे ॥ इति अष्टादशी पिपीलिका शकुगतिः ॥ ९ ॥

मध्यस्थ षड् ६ द्वि १२ कृत ४ सागरां ४ कैः ।
एकोनविंश प्रमितापि सख्या–
द्विघ्ने १४ नगा ७ के पिचकोणषड् ६ भिः ।
युक्तेच सा विंशतिरेवगण्या ॥ १० ॥

अर्थ.–तथा मध्यवर्ती ६ ने द्वि=गुण करता १२ थया तेमा कृत=४ सागर =४ मेळवता [६×२=१२+४+४=] २० थाय छे अे ओगणीसमी प्रमाणवाळी सख्यागति (अेटले ओगनीसमी गति थई)॥ इति एकोनविंशति गति' ॥ तथा नग=७ ना अकमा पण तेवी रीते अेटले द्विगुण करीने तेमा विदिशिमा रहेलो ६ नो अक मेळवता (७×२=१४+६=)२० थाय छे अे वीसची गति गणवी ॥ १० ॥

अस्मिन् दशत्रिंशदथाभ्रवेदा ४० ।
पचाशता ५० षष्टिरपिप्रबोध्या ॥
सप्त ७ त्रि ३ योगेंग ६ चतुष्क ४ सगे–
ऽष्ट ८ द्वि २ प्रयोगे प्रकटादशापि ॥ ११ ॥

अर्थः–वळी अे विंशतियत्रमा दश=१० त्रिस=३० अभ्रवेद [अभ्र=०, वेद=४=] ४०, तेमज ५० अने ६० नी अकगणत्री पण थाय छे अेम जाणवु ते आ प्रमाणे—सात अने त्रणना योगे १०, अग=६अने ४ ना

१ अहिं ८-४-२-६ अे अक वायव्य-उत्तर-मध्य-अने दक्षिण स्थानीय होवाथी अे रीते पताका आकार थयो अने शकुगतिनो अे आकार थयो. इत्यादि रीते वीस गतिओना वीस आकार दर्शावाने

योगे पण १०, तेनज आठ अने बेना योगे पण प्रकट रीते १० थाय छे [अे प्रमाणे ७+३=१०, ६+४=१०, ८+२=१० अे त्रण रीते १० थाय छे ॥ ११ ॥

तथाऽब्धयः ४ सप्तगुणा २८ द्वयाढ्या २ ।
त्रिंश ३० तथाऽष्टौ त्रिगुण २४ स षट्का ६ ॥
३० चतुर्गुणा अष्ट ३२ मुखेऽब्धयो ४ द्विः ८ ।
खवार्द्धि संख्येति ४० बुधै र्विबोध्या ॥ १२ ॥

अर्थः-तथा अब्धि=४ ने ७ गुणा करता २८ थाय तेमा २ उमेरता ३० थाय छे तथा आठने त्रण गुणाकरी छ उमेरतां पण ३० थाय छे अे प्रमाणे बे रीते (४-७=२८+२=३० । ८×३=२४+६=३०) त्रीसनो अंक प्राप्त थाय छे तथा आठने चार गुणाकरी प्रथमना [ईशान गत] चार ने द्विगुण मध्यगत बे वडे तेमां उमेरतां [ख=०, वार्धि=४=] ४० नो अंक [८×४=३२, ४×२=८ ३२+८=४०] प्राप्त थाय छे, अे प्रमाणे बुध्धिमानोओ जाणवुं ॥ १२ ॥

चतुर्गुणा अष्ट ३२ चतुर्गुणत्वे ।
कृते ४ कृते १६ मध्यगताद्वि २ योगे ॥
पंचाशदेव फलितास्तिषष्टिः ।
षड्वर्ग ३६ मध्ये त्रिगुणाष्ट २४ युक्ते ॥ १३ ॥

अर्थः-आठने चार गुणाकरी तेमां चारने चारगुणाकरी मेळवी तेमां मध्यगत बेने मेळवतां ५० जवाब (८-४-२ अे त्रण अंकथी) प्राप्त थयो तथा अे प्रमाणे पहेला [दक्षिणगत] छनो नीचेना छ साथे वर्ग=गुणाकार करी तेमा त्रण अने आठनो गुणाकार उमेरवो अेथी ६० नो जवाब (६-६-३-८ अे चार अंकथी) प्राप्त थाय छे (८×४=३२, ४×४=१६ ३२+१६+२=५० तथा ६×६=३६ ३×८=२४ ३६+२४=६०) ॥ १३ ॥

कोणस्थयण्णां ६ त्रिगुणेतरस्य-द्वयेनयुक्विंशतिकाप्युपेति ॥
कोणद्वयेसप्तगुणेचमध्य । पट्सगतो सा नाविनिक्षणीया ॥ १४ ॥

अर्थः–खूणामां रहेला छ ने त्रण गुणा करी मध्यगत बे ने उमेरता [६–२ ना अकथीज ६×३-१८+२=]२० पण थाय छे तथा खूणामां रहेला बे वडे सातने गुणता चौद थाय तेमां मध्यगत ६ [दक्षिणना ६] उमेरता पण २० थाय परन्तु ओ बे गतिनी अहिं विवक्षा करी नथी।१४।

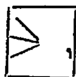
प्राच्यासुरेन्द्र सहसोमराजो-पाच्यायमस्तीव्ररुचातिचारुः ॥
पाशीप्रतीच्यासहशेषनागो। ब्रह्मान्वित श्रीदइहास्त्युदीच्याम् ॥१५॥

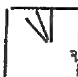
अर्थ'–पूर्व दिशामां सुरेन्द्र सोमराज [सोम लोकपाल] सहित जाणवो दक्षिण दिशिमा कान्तिवडे अति मनोहर यम लोकपाल छे, पश्चिम दिशामा शेषनाग सहित वरुण नामनो लोकपाल देव छे, अने उत्तर दिशामा ब्रह्मा सहित कुबेर नामे लोकपाल छे ॥ १५ ॥

श्रीयत्रमेतद्विहरज्जिनाना । नाम्नाधियास्तापरित परीतम् ॥
सर्वार्थसिध्यादिगुणे प्रतीत । चिंतामणीव त्रिदशाग्रणीनाम् ॥१६॥

अर्थ –वीस विहरमान जिननो आ विंशतियंत्र नाम वडे तथा बुध्धिवडे सर्वत्र व्याप्त छे सर्व अर्थनी सिध्धि आदि गुणोवडे प्रसिद्ध छे, अने देवता ईन्द्रोने पण चिंतामणि रत्न सरखो छे ॥ १६ ॥

॥ इति विंशति यन्त्राम्नाय. ॥







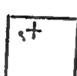












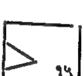






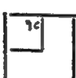


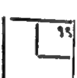


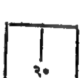












८	१	६
३	५	७
४	९	२

१५ १५

९	१	६
३	५ ६	८
४	१०	२

१६

९	१	७
३	६ ५	८
५	१०	२

१८ १७

९	२	७
४	६	८
५	१०	३

१८

१०	२	७ ८
४	६	९
५	११	३

१८ १९

१०	२	८
४	७	९
६ ५	११	३

२१ २०

१०	३	८
५	७	९
६	११	४

२१

९	२	८
४	७	८
६	१०	३

१९

४	७	२
	२	

१ ली

		२
	२	६
		६

२ री

	२	
८	३	६

३ री

४		
४	२	
८		

४ थी

	७	
	३	

५ वी

४		६

६

४		
		६

७

		२
८		

८

	७	
४		६
	३	

९

४		२
८		६

१०

४	७	
	३	६

११

	७	२
८	३	

१२

		२
४		६
८		

१३

४		
४		६
		६

१४

	२	
८		

१५

	२	
८		६

१६

४	२	६
८		

	७	
	२	
८	३	

१८ वांक

४		
४	२	६

१९

	७	
	२	६

२० वी

पक्षा२हि९सिंधु ४ नग ७ वाण५गुण३र्त्तु६चंद्र १ ।
नागै ८ क्रमांक धरणै र्विजयार्जुनस्य ॥
अस्यांगतौ क्रमिक पंचक लंघनेन ।
षट्स्थापने भवति विंशति यंत्र मंत्र ॥ १ ॥

अर्थः–पक्ष=२, अहि=९, सिंधु=४, नग=७, बाण=५, गुण=३, ऋतु=६, चंद्र=१ [परन्तु अहिं बिंदु सहित १०], नाग ८ अे (२–९–४–७–५–३–६–१०–८) अकोने अनुक्रम प्रमाणे स्थापता [अेटले २–३–४–५–६–७ ८–९–१० ने अनुक्रमे बीजा श्लोकमां दर्शाव्या प्रमाणे स्थापतां] अर्जुननो विजय यंत्र नामनो बने छे। बाळि अे विंशति यत्रनी गतिमा (अंक-स्थापन पद्धतिमा) ५ नो अंक उल्लंघीनें ६ थी स्थापन करता अहिं विंशतियत्र बने छे[जेथी १० ने स्थाने ११[1] नो अंक प्राप्त थाय छे] ॥१॥

तत्रैक कोण गणने खलु त्रिंशति स्यात् ।
सैकाथ तत्रतु षडक पदेपि पंच ॥
भाव्यात्ततो भवति कोपिन दोषलेशः ।
क्लेशोन्यथा न किलयत्र गते र्निवेशः ॥ २ ॥

अर्थः–त्या अे विंशति विजय यत्रमा [दिशिश्रेणि तो वीस वीसनी थाय छे, परन्तु] विदिशिश्रेणि गणता अेक विदिशिश्रेणिमां निश्चय २० गणाय छे, परन्तु बिजी विदिशिश्रेणि गणतां २१ थाय छे, माटे ते अेक श्रेणिमा ते कोठाने विषे [६ ना कोठामां] ६ ना अंकने स्थाने ५ नो अंक पण स्थापवो, अने ते रीते ते बिजी विदिशिश्रेणि विचारवी, गणवी, तेथी कोई लेशमात्र पण दोष नथी, अने जो तेमन गणीये तो (६ स्थाने ५ न गणीये तो) क्लेशरूप गणाय, तेमज यंत्र गतिनो [यंत्रनी रीतिनो] निवेश पण थाय नहिं (यत्र रचना पण सम्यक् गणाय नहिं) ॥२॥

[1] ५ ना अंकनु उल्लंघ करीनें (पांचने बदले) ६ नो अंक स्थापता अन्ते ११ नो अंक आवे छे, जेथी यत्रमा स्थपाता अंक अनुक्रमे २–३–४– (५) ६–७–८–९–१०–११ अे प्रमाणे पू०–नै०–उ०–वा०–म० -अ०–द०–ई०–प० दिशामा स्थपाय छे.

स्याद्भावनातिशयतः शकुनेऽशुभेपि ।
सम्यक् फलं तदितर सुशुभे विहगे ॥
स्वप्नेप्युपश्रुतिषु धर्म विधौ तथात्र ।
मंत्रेपि चित्य फलदा किलभाव नैव ॥ ३ ॥

अर्थ—भावनाना अतिशयथी अशुभ शकुनमा पण सम्यक् शुभ फलनी प्राप्ति थाय छे, अने शुभ [विहगमा =] शकुनमा अशुभ फलनी प्राप्ति थाय छे, ओ प्रमाणे स्वप्नमा उपश्रुतिओमा अने धर्मविधिओमा पण जेम शुभाशुभ फळनी प्राप्ति भावना विशेषथी छे, तेवी रीते अहिं मंत्रमां (यंत्रमा) पण निश्चय भावनाज अचिंत्य फळ आपनारी छे. ॥३॥

ते तैवसा यवन विंशति यंत्र मध्ये—
ऽर्कांके १२ द्वयस्यरवत षड् गणने कलाके १६ ॥
प्राज्ञैःफलाय कथिता हदि भावनैव ।
नैवान्यथी भवति विंशति यंत्रसिद्धि ॥ ४ ॥

अर्थ—ते कारणथीज यवनना विंशति यंत्रमा अर्क=१२ ना अंकमा २ नी गणत्री अने फला=१६ ना अंकमा ६ नी गणत्री थाय छे बुद्धिमानोओे हृदयनी भावनाज फळ आपनारी कही छे, नहितर विंशति यंत्रनी सिद्धी थती नथी ॥ ४ ॥ [यवननो विंशतियंत्र आगळ दर्शावशे]

तत्रायं केषा चिदभिनिवेशः क्लेशः कृमपाशारुं लोपे पुनस्तत्कार्यं नथार्यं प्रसक्ता दर्शन लोपः तस्मिन् जाते यदि तेन कार्यस्या त्तर्हि कानि सतीत्यादौ पकार॰ स्यात् धातोरकार लोपेपि तत्कार्य प्रसगात् मृतो ज्जीवन प्राप्त्यादशुद्धमिद यत्र लोपस्य ध्वस रूपस्य नित्यत्वात् नचभावनैव सवत्र फलदा ‘ गुडोय ’ मिति मुग्ध भावनया खाद्यमानेन विषेन मरणात् अशुद्धे नाणकादौ शुद्ध धिया गृह्यमाणेपि न तत्फल तस्मान्नैकाँक’ कार्यद्वये गम्य इति अत्रोच्यते नायमेकान्त॰कान्तः अचकथ दित्यादौ लुप्ताकारस्य वृध्यभाव प्रयोजकत्वात् अकाविधायामपि चलस्य विंदोरनकृत्वेपि अक संनिधानैकत्वाच नचेदकगणना नपातै

वदशमांकः कनमः अंक शद्वेन नव संख्यानात् अतएव अंक संकलने विंदुः प्रसक्तोपि तल्लघने सकलना अंक गणने एकः दश इत्यादौ तद पेक्षा च दृश्यते अंकप्रधान ज्योतिशास्त्रेपि उभयीगतिः उदया पेक्षया तिथिलोपेपि प्राच्यतिथौ घटिकापेक्षया तिथिच्छेदादि दोष प्रयोजकत्वात् अतएव प्रत्यय लोपे प्रत्यय लक्षणं न याति १ स्थानिवदादेशो ऽनलविधा विति परिभाषाद्वयं युक्तं अलकारशास्त्रेपि एकस्मात् शद्वात् यथायोगं नानार्थलाभः यथा अनुदराकन्या अलोमाएडका इत्यादौ विशिष्टार्थे शक्तेश्च वैद्याअपि लंघनस्यायोग लघु भोजने तदेव व्यवहरंति उत्सर्गोप वादयोरेकार्थविपयात् नचैवं षडंकस्थाने पंचकभावेनेइति प्रसंगः साव- र्णस्य नियोजकत्वात् तथाहि प्रथमेकद्विकयो सावर्ण्यं संख्यादिरा धर्म्यात् द्विकस्यसख्यादित्वं लह्संखिज्जंदुचियइति सिद्धान्तात् तत्रापि एकस्य वस्त रूपत्वाभिप्रायात् आद्यद्वितीययोरघोपत्वमपि एव मेव नवक- दशकयोः सावर्ण्यं सख्यांत साधर्म्यादेव विषम समभावेपि एकद्विकयोः संबधः यथा पूर्वं दिन तदनुगारात्रिरित्यनयोः संबधः अतएव द्वाभ्यां केवलाणुभ्यां द्व्णुकं न तथा तार्किक मते अणुक तस्य षडणूमानात् यद्यपि सिद्धांतमध्ये त्रिभिरणुकैस्त्र्यणुकं तथापिनद्विकत्रिकयोः सार्थका नर्द्धक विरोधात् यद्यपि एकोऽनर्थकोऽणुस्तथापि न त्रिकेण सावर्ण्यभाक् द्विकेनव्यवधानात् एकस्मिन्ननर्थकत्वेपि अव्यवधानात्सावर्ण्यं एकं हि वस्त सदपिनसत् द्वयोभावेतु आस्तिक्यं संयोगादेव सिद्धेः संयोगाविद्वयं। ततएव सम्यग्ज्ञान क्रियाभ्यामोक्षः इतिसूत्रं शाद्विक मते सर्वादिपाठोपि एकद्वि शद्वयोर्न त्रिशब्दस्य अतएव एक समुलोद्विकः शाब्दिका अपि प्रथमा द्वितीयपो ' सावर्ण्य माह्' मुने रित्यादौ षष्टी पंचम्योश्च एकत्व रूपस्य एकस्य वाचकत्व एकेयथा द्विकेपि तथा द्विरूप एकार्थ वाचकत्वं न पुनः त्रिके बहुत्वस्य त्रित्वसंख्या पर्यवसानात्। एवंत्रिक चतुष्कयोरपि सावर्ण्यं स्थान विशेषे ऽभिधानात् यद्यपि क्वचित् द्विमार्गादौ द्विकाभिधान मपि तथापि तियचउकचचर चउम्मुहे त्यादि सूत्रेत्रिक चतुष्कयोः एव- साहचर्यं न द्विकस्य शब्दशास्त्रेपि त्रिचतुरोरेव सूत्रणात् ज्योतिर्मतेपि चतुर्थ्यां भद्रा कृष्णपक्षेतृतीमाया पर्यवसन्ना वेदेष्वपि त्रित्वं चतुष्टमपि ' त्रयीवनीनांगगुणेन विस्तरं ...र्पः 'चउण्हं वेयाण सारए, ... वर्णेषु त्रित्वं चतुष्टमपि ... त्रियः इतित्रिपुरास्तवे

प्रसिद्धं ' त्रिवर्गो धर्मकामार्थैश्चतुर्वर्गः समोक्षकः इति कोपवचनात् एव पचक पढकयो. सावर्ण्यमुदाहरणीय रसाना कचित् पंचत्वे लवण रसस्यभेद विवक्षया षोढा भणनात् एवमिन्द्रियाणा तद्विषयाणाच पचधाषोढा इति उभयी सख्या' पंचेन्द्रियाणि त्रिविधबलच,इति पडिंद्रियाणि पड्विषया, इति केशवः ततएव स्मिंदुकमते पचकः यवन मंन पढकः उभयोस्तुल्याकृतिः यका. पचम पष्ठेक इत्यपि सप्ताष्टकयो. सावर्ण्यं सत्तइ पयाइ अणुगच्छइ तथा सत्तट्ठभवग्गहणाइ तथा सत्तपुढवीओ पण्णत्ता- ओकापि अट्ठपुढवीओ इत्यादि सूत्राणि गमकानि ज्योतिर्मतेऽष्टमी भद्रा कृष्णपक्षे सप्तम्यां तथा अतिवक्रा नगा ७ ऽष्टमे ८ ॥ नवकदशकयो सावर्ण्यं ' नवमे दशमे भाना जायते सरलागतिः, ॥ एव पचक पढकयोः सावर्ण्यमस्तु परमुभयार्थत्व कथमितिचेत् एकोपिल्कार. अनिलइनियायु नामिमञ्जरीत्या उचार्यते अनलइति अग्निनाम्नि प्रयत्नान्तरेण यथवा य- कार' योगी योग. इत्यादौ स्पष्टोचारणेन नियोगी नियम इत्यादौ अस्पष्ट तथा ध्येय. एव वकारेपि मतव्य सवृतोऽप्यकारः प्रक्रियानियोगा द्विवृत- प्रतिज्ञायते उचारणार्थोपि प्रत्याहारार्थ सानुनासिकश्च ततोर्थद्वयसाद्विसक्ति परिणामवत् अकस्यापि गणना नियोगात् नैक निरेकत्वे यथार्ह परिणाम- कार्यः धारादिवत् यथाना त्रिधातः कारकाणि तथात्रापि पढके पचक विवक्षा कार्या स्वरसज्ञाप्यनुसारे सिद्धात कौमुदीमता व्यजनत्व हैममते कस्यादे व्यजना श्रयात् यथाहि ' भुवनानि नियश्रियात् । त्रीणि सप्त चतुर्दश॥ चतस्र कीर्तयेद्राष्टौ । दशवाकर्कुभः कचित् ॥ १ ॥ तथा चतुरा समवायुधीम् इति स्वरात्रय' ३ पच ५ सप्त ७ चतुर्दश १४ नव ९ कचित् एव यथा स भवपारपा सर्वं पठितममता मार्तेत्रिकी तथात्रापि नैक निरेक करणात् मावर्ण्येन सर्वत्र निर्वाहः यथा वा छदःशास्त्रे लघुरपि पादाते गुरुर्भावनीय. अर्हादिगणे सयोग परत्वेन गुरुरपि लघुर्भाव्य नोऽनिष्टाऽर्थो शास्त्रप्रवृत्तिरिति न्यायात् तथात्रापि अकाना तत्तत्सवर्ण भावनयैव निर्व्यूढव्य सतो गति श्चिंतनीया इतिन्यायात् नचभावनया नकार्य सिद्धि रित्येकात ' पानीय मप्यमृत मित्यनुचित्यमान किनामनो विपविकार मपाकरोति, इति प्राचीन वचनात् विपादनात् निपादना शुद्धना णकादौ तुमौल्य दोषात्सहकारि वैरूप्यान्त भावनामात्रत तत्तत्कार्य किंच यत्राणा रित्यनेन मनोऽन्य यथाकमलाकृति त्रिंशतिपत्रे चतस्त्रोगत-

यन्त्रिस्थानिका दिग् १ विदिग् २ परिधिसव्य ३ तदितर ४ गतया श्चतुस्थाने काद्वादशकयंत्रे काचिद्गति स्त्रिभिर्गृहैः काचिद्वाभ्या मेवगृहाभ्या मित्यादि विस्तरो गंगाप्रवाह ग्रंथाद्वेद्यः एव दश समानानामिव दशांकानामपि सावर्ण्यं। ज्ञेयं तत एव चूडामणि शास्त्रे अक्षरेषु अंकन्यासः लिपिभेदे ऽकै रेव वर्णभावणात् वस्त्त तस्त्त यन्त्राणां ग.ति वैचित्र्य मेवमत्त्वा सतोष्टव्य न शास्त्र विरोध योवैभाव्यं अनन्यगतिकत्वात् ॥

इति नवग्रह यंत्र विशतेवर्तमाना–
ऽभयद जयद सेवा सक्तदेवानुपक्तम् ॥
विजयविधिनिधानं तर्जनं दुर्जनानाम् ।
भवतु विभवहेतु केतु रेवार्जुनस्य ॥ १ ॥

प्राचीनानूचाने–त्रिभागदाना दिहैक शेषेपि ॥
कृत ४ गुण ३ यंत्र रचितं । ख वाणह यंत्रं द्वयेशेषे ॥ २ ॥

तन्मार्गानुगतधियो–पाध्यायपदस्थ मेघविजयेन ॥
विहरज्जिनयंत्रमिह । स्फुटीकृत विजयकरं ॥ ३ ॥

अर्थः–अहिं [५ नो लोप करी ६ स्थापवामां] केटलाकनो अेवो आग्रहरूप कलेश छे के–अनुक्रमे प्राप्त थयेला अंकनो लोप कर्याथी पुनः कार्यसिद्धि थाय अेम न जाणवुं, केमके–प्रसक्तादर्शनं लोपः=प्राप्त थयेलानु अदर्शन–अदृश्यपणु ते लोप, अने ते लोप थये छते पण जो ते लोप थयेला वडे अर्थ थतु होय [अेटले लोप थयेलो अक्षर पण जो पोतानु कार्य करी शकतो होय] तो कानि सन्ति इत्यादि वाक्योमां * य्

* सन्ति मा अस् धातु छे परन्तु अस् धातुने अन्ति प्रत्यय लागता अस्ना अकार नो लोप थवाथी कानि सन्ति वाक्य थयु, जो अस्ना अ नो लोप न थात तो कानि+ असन्ति अे बेनी संधि थात, अने संधि थती वखते नि मा रहेला इकारनो अत्रे आवेला अकार थी) य्कार थात, जेथी –[illegible]–[illegible] नसान्ति अेवु वाक्य थात. परन्तु अस्ना अ नो लोप थवाथी इ नो [illegible] नहि,—इति तात्पर्यः–

कारथवो जोईये, कारणके धातुना [अस् धातुना] अकारनो लोप थवा छता पण तेना कार्यनो प्रसंग प्राप्त थवाथी, माटे मरण पामेलाने पुनः जीवतो करवा सरखो [५ नो लोप कर्या छता पण पुनः ५ नी गणत्री करवाथी] आ विंशति यंत्र अशुद्ध गणाय, कारणके विनष्ट स्वरूप वाळो लोप नित्यभावी छे, (जेथी कदाचित् दृश्य थाय अने कदाचित् दृश्य न थाय एवो नथी, माटे लोप कृत ५ नो अंक कोई वखत गणत्रीमा लेवो ने कोई वखत गणत्रीमा न लेवो एम न थाय, जो ५ नो लोप कर्यो छे तो ते लोप नित्यभावी होवाथी कदी पण गणत्रीमा लई शकाय नहिं) वळी कहो छो के भावनाज सर्वत्र फळ आपनारी छे, तेम पण नथी कारणके आ गोळ छे एवी मुग्ध भावनाथी खवातु विष मरण माटेज थाय छे, तथा खोटा नाणाने (खोटा रुपियाने) खरानी बुद्धि ए ग्रहण करता पण तेनु कई फळ थतु नथी, माटे एक अक बे कार्यमा (गणत्रीमा अने अगणत्रीमा एम बे रीते) उपयोगी थई शके नहिं [अथवा लोपमा अने अलोपमा ए बनेमा उपयोगी ५ नो अक थाय नहिं] ॥ इति प्रश्नः॥

अर्थः-हवे अहिं एनो उत्तर दर्शावाय छे के-ए वात एकान्त इष्ट नथी, (अर्थात् लुप्त अक्षर कई पण कार्य न ज करे एम एकान्त नथी), कारणके-कान्त अचकथत् इत्यादि पदोमा लुप्त अकार पण वृद्धिना अभावमा प्रयोजनवाळो थयो छे तेमज अकविद्यामा [अकगणितमा] पण केवळ बिंदुने अकरहितपणु छे [अर्थात् बिंदुने अकमा गण्यो नथी] तो पण अकनी पासे रहेल होय त्यारे अंक तरीकेज गणाय छे, अने जो तेम न होय तो अकनी गणत्री ९ सुधीज थाय, परतु १० मो अंक क्याथी प्राप्त थाय? कारणके अक ए शब्द वडे नवनीज सख्या गणाय छे ते कारणथीज अक सकलनामा बिन्दु प्राप्त होवा छता पण ते बिन्दुनु उल्लघन करीनेज अक सकलना थाय छे, अने तेथीज अकगणत्रीनो क्रम (० थी नहिं पण) १ थी प्रारभीने १० इत्यादि सुधी गणाय छे, अने एज अपेक्षा अहिं (लुप्त थयेला ५ ना अकमा) पण जाणवी

अर्थ -तथा अकगणितनी मुख्यतावाळा ज्योतिषशास्त्रमा पण उभयगति [कोई वखते उपयोग अने अनुपयोग] दर्शावेला छे ते आ उदयनी अपेक्षाए तिथिनो लोप थवा छता पण ते लुप्त तिथि

पूर्व तिथिमां घटिकाओनी (घडीओनी) अपेक्षायें तिथिच्छेदादि दोषना प्रयोजनवाळी छे [अर्थात् क्षय तिथि जे तिथिमा आवी छे ते तिथिमा पण क्षयतिथिनो दोष उपजावनारी छे, अने तेथी यात्रादिने अगे ते उदयतिथि पण क्षयतिथि तरीके मानीने ते ते कार्य थतु नथी] ते कारणथीज प्रत्ययनो लोप थवा छतां पण प्रत्ययनुं लक्षण सर्वथा जतु नथी तेथी अेकस्थानमाज यदा देशोऽनलविधौ अे प्रमाणे वे परिभाषा युक्त छे. तथा अलकारशास्त्रमां पण अेकज शब्दथीज अनेक प्रकारना अर्थनो लाभ कह्यो छे, जेमके – अनुदरा कन्या [कन्या उदर रहित छे][1], अलोमा एडका (घेटां लोम रहित छे)[2], इत्यादि वचनोमां विशिष्ट अर्थवाळी शक्ति होवाथी ते वचनो नो जूदो जूदो अर्थ थाय छे

तथा वैदकशास्त्रीओ पण लंघन प्रसगे लघु भोजनमां (अल्प अने हलका आहारमां) लंघन शब्दनोज व्यवहार करे छे, कारणके उत्सर्ग अने अपवाद अे बन्ने अेकज प्रयोजनवाळा छे.[3] अने अे प्रमाणे होवाथी ६ ना अंकस्थानमा ५ नो अंक स्थापवो ते अतिप्रसंग दोषवाळो नथी, कारण सदृशपणानो नियोगक—प्रयोजक होवाथी. ते आ प्रमाणेः—प्रथम एक अने बे संख्यानु सरखाणुं छे, ते सदृश पणुं संख्याना आदिपणाथी जाणवुं [त्या १ नो अक तो संख्यानी आदि रूप स्पष्ट छेज, अने] २ नो अंक संख्यानी आदिरूप केवी रीते

[1] कन्या उदरवाळी स्पष्ट देखावा छता पण "उदर रहित" वचन केहवाय छे ते विशिष्ट शक्तिवाळु उदर अेटले गर्भधारण शक्तिवाळु उदर नथी अे विशिष्ट शक्तिरूप अर्थथीज.

[2] घेटा सर्वे वाळ युक्त [लोम युक्त होवा छता विशिष्ट लोम अेटले वस्त्र बनवा योग्य उनवाळा वाळना अभावे " घेटा लोम रहित केहवाय छे. अे रीते अे बे वाक्योना दरकेना बे बे अर्थ थया.

[3] जे साध्यसिध्धिने अर्थे उत्सर्ग छे, तेम अपवाद पण तेज साध्यासिध्धिने अर्थे होय छे, अने जो तेम न होय तो तेवो-अपवाद वास्तविक रीते अपवाद न गणाय.

[4] ६ नो अक जे कार्यसाधक ... णवनो) छे, तेम ५ नो अंक
कार्य साधक होवाथी ६ ... सदृश गण्या छे.

छे ? ते दर्शावाय छे—लहुसगिद्धं दुचिय [अर्थात् २ ओज लघुसंख्यान छे], ओ प्रमाणे सिद्धान्तमा कहेलुं छे. ओमा पण ओक [१ नी संख्या] तो वस्तुरूप पणाना अभिप्रायथी संख्या रूप छे, अने ओमा तो आ पहेलुं अने आ बीजु ओ रीते पहेला बीज पणानी गणत्रीथी घोषपणुं [संख्यानुं स्पष्ट बोलवा पणु] पण छे आ माटे सदृश पणु छे ओ प्रमाणे नव अने दशमा पण सख्यातपणाना साधर्म्यथी सरागपणु छे, [अर्थात् ९ जेम सख्यात कहेवाय छे, तेम १० पण सख्यातज छे माटे सराग छे] वळी विषम सम भावमा पण १ ने अने २ ने सबध छे, जेम प्रथम दिवस अने त्यारबाद (बीजी) रात्री, ओ प्रमाणे ओ बेनो (१–२ नो अथवा पहेला बीजानो) सबध (विषमभाव सबध) छे, अने ओथीज केवळ बे परमाणुनो स्कध ते द्व्यणुक, वळी ओ रीते तार्किक मतमां अणु [ओक भावी अणु] मान्यो नथी, कारण के तेना मते [ओक अणु पण छ अणुना मानवाळो होवाथी वळी जो के सिद्धान्तोमा त्रणे अणु वडे त्र्यणुक कह्यो छे, तोपण द्विक त्रिकमां सार्थक अनर्थकनो (द्व्यणुकादि स्कधो अर्थ युक्त होवाथी सार्थक अने केवळ अणु वा प्रदेश ते निर्विभाज्य होवाथी अनर्थक ओ रीते भाज्याभाज्यो) विरोध नथी गणी गणीनेज कह्यो छे वळी जोके ओक अने अनर्थ [निर्विभाज्य] होय तेज अणु कहे वाय, तो पण ते त्रिकनी साथे सदृशता वालो नथी, कारणके द्विकना व्यवधानवालो आंतरावालो छे अने ओकमा अनर्थकता होवा छता पण अव्यवधान होवाथी सदृश पणु छे ओक वस्तु सत् छे तोपण असत् सरखी छे, परन्तु बे वस्तुना सद्भावे आस्तिक्य-सत् पणु सार्थक छे कारण संयोगादेव सिद्धि [संयोगथीज सिद्धि] कही छे, अने संयोग बे वस्तुना सद्भावेज होय छे अने ते कारणथीज सम्यग्ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्षः [सम्यग्ज्ञान अने क्रिया ओ बेथीज मोक्ष कह्यो छे] ओवुं वचन छे

वळी शाब्दिकमतमा [वैयाकरणमां] पण सर्वादि पाठ पण ओक द्वि शब्द ने विषे छे, परतु त्रण शब्दने नथी, अने ओथीज ओक सन्मुख द्विक [१ नी तुल्य २] कहेवाय छे वळी शाब्दिको (वैयाकरणीओ) प्रथमा अने द्वितीया विभक्ति ओ बेने पण सदृश कहे छे, मुने' इत्यादि

→ फलानि [प्रथमा], फले फले फलानि, द्वितीया, बहुवचने करिण

शब्दोमा छट्टी अने पांचमी विभक्तिनुं अेक स्वरूप छे माटे अे बन्ने विभक्तिओ पण अेकत्व वाचक छे, [अर्थात् ये विभक्तिओ अेक स्वरूपवाळी होवाथी अेक छे], अे प्रमाणे अेकमां जेम अेक पणानो व्यपदेश छे, तेम द्विकमां–बे मां पण द्वि=बे रूप अेक पणानो व्यपदेश छे (अर्थात् द्विक कहेवाथी अेक जोड समजाय छे), परन्तु तेवी रीते त्रिकमां (त्रणने योगमां) तेवो अेकपणानो व्यपदेश नथी कारणके बहुपणाने त्रणनी संख्या छे, अने ते बहुपणु पर्यवसानवाळुं [अन्ते रहेतु वा थोलातुं होवाथी पर्यन्तस्थानीय] छे, वळी अे प्रमाणे (जेम अेक बेने सहशता छे तेम) त्रण अने चारने पण सहशता छे अने ते सहशता स्थान विशेषमां कहेली छे [=नगर विगेरेमां मार्गने अंगे सिद्धान्तोमां कहेली छे], जो के कोई स्थाने नगरमां बे मार्गादिक होय छे, अने तेथी द्विमार्गादिकनो पाठ कहेवो जोईये छतां पण तियचउक्कचच्चरचउम्मुह इत्यादि सूत्रपाठमां त्रिक अने चतुष्टनुंज सहचारी पणुं देखाय छे, परन्तु बेनुं सहचारीपणुं देखातुं नथी शब्दशास्त्रमां पण त्रिचतुरोः अेज सूत्र कहेलुं होवाथी, तेमज ज्योतिष शास्त्रमा पण चतुर्थनी [चोथ तिथिथी] भद्रा कृष्णपक्षनी त्रीजमा अन्त पामती कही छे, वेदोमा पण त्रणपणु तथा चारपणु (सहचारी) कह्युं छे, त्यां 'त्रयीव नीतांग गुणेन विस्तर इति श्री हर्षः, चउण्हवेयाणं सारए-इतिसूत्र तथा वर्णोमां पण त्रणपणु

१ विभक्ति विगेरेमा त्रण वस्तु माटे बहु वचनना प्रत्ययो लागे छे.

२ त्रण मार्गे ते त्रिक, चार मार्गवाळुं स्थान चतुष्क, चत्वर आंगणु विगेरे अने चतुर्मुख पण चार मार्गनुं स्थान विशेष छे.

३ अगना गुणवडे पामेला गुणविस्तारने जाणे त्रिरूपतानेज पामी होय अेवी, अर्थात् गुणत्रण छे सत्वगुण–रजोगुण–तमोगुण. जेथी शरीर पण अे त्रणे गुणने पामेलु छे. अेवी कोई स्त्री अंगे अे वाक्य संभवे छे. अथवा चालु विषयने अनुसारे " वेदत्रयीने पामेली शरीरवाळी " अे अर्थ पण संभवे.

४ चार वेदोनो स्मारक–संभारीने रक्षण करनार.

५ अे प्राकृतसूत्र जैन सिध्धान्तोमा उत्तम त्रिभंगा वर्णन प्रसंगे आवे छे.

अने चारपणु सञ्चारी छे, त्रित्रयवर्णत्रय.–इति त्रिपुरास्तवमा (त्रिपुरा देवीना स्तोत्रमां) कह्युं छे अने चार वर्ण [क्षत्रियादि] तो प्रसिद्धज छे तथा [पुरुषार्थमा पण त्रण तथा चारनु सञ्चारीपणु छे तेमां] धर्म अर्थ काम ओ त्रिवर्ग रूप त्रण पुरुषार्थ, अने मोक्षसहित चार पुरुषार्थ इति कोश वचनात्

ओ प्रमाणे ५ तथा ६ ना अकनु ओकपणुं पण द्रष्टान्त सहित जाणवुं, ते आ प्रमाणे—कईकस्थाने रस पाच कहेवाय छे, तेमा लवणरसभेदनी विवक्षाये छ रस पण कहेला छे, ओ प्रमाणे इन्द्रियो पाच छे, पण ते साथे तेना विषयोनो १ भेद गणता छ इन्द्रियो पण गणाय छे, ओ प्रमाणे बे सख्या छ कह्यु छे के—पचेन्द्रियाणि त्रिविध बलंच [पाच इन्द्रियो अने मन वचन काय बल ओ त्रण बल], षडिन्द्रियाणि षड्विषया–[छ इन्द्रियो ते छ प्रकारना विषय, अर्थात् पाच इन्द्रिय अने छट्ठो विषय ', इति केशव. अने ओ कारणथीज हिन्दुमतमा [हिन्दी लिपीमा] पाचना अकनी अने छ ना अकनी बन्नेनी आकृति लगभग ओक सरखी छे वळी यवना पचम षष्ठेके [=पाचमा अने छट्टा अकमा बक्र आकृति छे] ओम कह्यु पण छे माटे ५ अने ६ ओ बे अकने सदृशपणु छे– इति तात्पर्यः]

हवे ७ अने ८ ओ बे अकनु ओकत्व–सादृश्य दर्शावाय छे–सत्तट्ठ पयाइ अणुगच्छेई तथा सत्तट्ठ भवग्गहणाइ तथा सत्तपुढवीओ पन्नत्ताओ

१ जे पाठमा त्रिविध बलच ओटलो पाठ गाथाना सबध मात्रथी कह्यो छे, ओथी अहिं ओ त्रण बलनी गणत्री करवी नहीं.

२ हिंदी लीपिमा ६ छगडानी आकृति ६ ओवी छे, अने यवनलीपिमा ५ अथवा ६ ओवी छे

३ [गुरुनवा होय ते वखते शिष्य] ७–८ पगला गुरुनी पाछळ जाय

४ (पचेन्द्रिय सज्ञि तिर्यच तथा सज्ञि मनुष्य वारवार पोताना भवमां उत्पन्न थाय तो उत्कर्षथी) सात अथवा आठ भव सुधी उत्पन्न थाय, त्यारबाद अवश्य अन्य भवमाज उत्पन्न थाय.

विगेरे सात पृथ्वीओ (अनुक्रमे नीचे नीचे) कहेली छे.

अने कोईस्थाने अट्ठ पुढवीओ इत्यादि गमक सूत्रो [सूत्रना आलापक] कह्या छे तथा ज्योतिषमते अष्टमीनी भद्रा कृष्णपक्षनी सप्तमीमां अन्त पामे छे तथा अतिवक्रा नगाष्टमे ओ प्रमाणे ७–८ अंकनुं अेकत्व छे, अेम जाणवुं

हवे ९ तथा १० अंकनुं अेकत्व दर्शावाय छे ते आ प्रमाणे—नवमे दशमे भानौ, जायते सरला गतिः [सूर्य नवमे अने दशमे (लग्न-कुंडलीमां) होय तो तेनी (जन्मेला मनुष्यनी) सरलगति थाय छे].

प्रश्नः—अे प्रमाणे ५ अने ६ ना अंकनी सदृशता भले होय, परन्तु उभयार्थ पण [५ मां पांचनो अने छनो अर्थ तथा ६ मां पांचनो अने छनो अर्थ अेम बन्ने अर्थ] केवी रीते होय?

उत्तरः—जो तमो अेम पूछता हो के उभयार्थ केवी रीते होय ? तो दर्शावाय छे के अेक लकार पण जेम "अनिल" शब्दमां वायुना नामथी सहज रीते उच्चराय छे तेम तेज अेक लकार "अनल" शब्दमा अग्निना नामथी अन्य प्रयत्न वडे पण उच्चाराय छे. अथवा योगी योद्ध इत्यादि शब्दोमां जेम स्पष्ट उच्चार वडे य कार उच्चराय छे तेम नियोगी नियम इत्यादि शब्दोमा अस्पष्टपणे उच्चाराय छे अेम जाणवुं, तथा अे प्रमाणे व कारमां पण जाणवु तथा संवृत्त अेवो पण अंकार प्रक्रिया-नियोगथी [प्रक्रिया वशथी] विवृत्त गणाय छे, अने प्रत्याहारने अर्थे उच्चारण अर्थवाळो होवा छतां पण सानुनासिक गणाय छे, तेथी अर्थना वशथी विभक्ति परिणामनी पेठे अंकनी पण गणत्री नियोगथी [अर्थ-वशथी] अेकत्व वाळी अथवा अेकत्व रहित (=बे अंकनी सदृशता अथवा असदृशता) विचारवी, जेम वांर आदिकनी पेठे अथवा कारको [छ कारक] जेम विवक्षाथी [सदृश असदृश अर्थ दर्शावनारा] होय

१ प्रत्याहारमा ग्रहण करता अक्षरानो वाचक होवा छता पण

२ सदृशस्वरूपवाळी होवा छतां पण तेज पहेली विभक्ति अने बीजी विभक्ति ना अर्थमा अथवा पंचमी तथा षष्ठीना पण अर्थमा जूदी जूदी जणाय छे.

३ अहि विष भक्षणा दि वाद्य [illegible] करता वैरुप्यनी अतर्भावनाथी तो, कार्य थाय छेज अेवो

छे, तेम अहिं पण ६ ना अंकमां ५ नी विवक्षा करवी थशे अनुस्वारमा सिद्धान्तकौमुदिये स्वरसंज्ञा मानी छे, अने हेमव्याकरणना मते "क" आदि व्यंजनना आश्रयथी व्यंजनपणुं मानेलु छे जेमके—

भुवनानि निवध्नीयात्, त्रीणि सप्त चतुर्दश ।
चतस्र कीर्त्तयेद्वाष्टौ, दशवा ककुभः क्वचित् ॥ १ ॥

अर्थः—भुवनो कोई स्थाने त्रण (=त्रण भुवन) कह्या छे, कोई स्थाने सात भुवन कह्या छे अने कोई स्थाने (कोई शास्त्रमां) चौद भुवन पण कह्या छे तेमज दिशाओना संबंधमा पण कोई ग्रंथमां चार दिशाओ गणी छे, कोई ग्रंथमा ६ दिशाओ गणी छे, अने कोई ग्रंथमां दशदिशाओ पण गणी छे ॥ १ ॥

तथा समुद्र संज्ञाथी समुद्रोने कोई ग्रंथमा चार गण्या छे, अने कोई ग्रंथमा सात समुद्र पण गण्या छे तेमज स्वरोना संबंधमा पण कोई स्थाने त्रण अथवा पांच अथवा सात अथवा चौद अथवा नव पण स्वरो पण गण्या छे, ओ प्रमाणे सर्वस्थाने सर्व प्रयोगमा जे स्थाने जेवी व्याख्या घटे ते स्थाने तेवी व्याख्या सर्व पंडितोने सम्मत होय छे, तेम अहिं पण सदृश असदृशना करणथी (५ तथा ६ ना अंकमा ओकत्व अनेकत्वनी भावनाथी) सदृशपणा वडे [पांचनो अंक पण ६ सदृश छे, अथवा ६ नो अंक पण ५ सदृश छे अथवा लुप्त थयेलो ५ नो अंक पण कोई वखते स्वकार्य कर्ता छे ओम विचारीने] आ विंशति आदि सर्व यंत्रो विसंवाद रहित जाणवा

अथवा जेम छंदः शास्त्रमा लघु अक्षर पण पादने—चरणने (श्लोकना पहेला चरणने) पर्यन्ते होय तो गुरु गणाय छे, अने अहींदि गणमां संयोगपर वडे [अग्रे आवेला संयुक्ताक्षर—जोडाक्षर वडे गुरु अक्षर पण लघु गणाय छे, कारण के शास्त्र प्रवृत्ति अनिष्ट अर्थवाळी होती नथी ओ न्याय छे, माटे तेवी रीतें अहिं यंत्रमा पण ते ते अंकोनी सदृशता विचारीनेज निर्वाह करवो [=अविसंवाद पणु जाणवु, कारण के [जे सत् छे तेनीज मति विचारवी] ओ न्याय छे-

वळी भावना वडे कार्यसिद्धि नथी अेम अेकान्त नथी कारणके—
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरोति?।
अे प्रमाणे प्राचीन मुनीओनुं वचन छे तथा विष भक्षण तथा अशुद्ध नाणा विगेरेमां तो मूढपणानो दोष छे (अने अहिं तो) सरकारी वैरूप्यंती अन्तर्भावना मात्रथी ते ते कार्य थाय छे, अेम जाणवु वळी बिजी वात अे छे,के—यन्त्रोनी विचित्रगति छे माटे अेटलुं जाणीने पण संतोष मानवो, जेम कमलाआकृतियाळा विंशति यंत्रमा चार गति छे [अेटले चार रीतिअे २० नो अंक प्राप्त थाय छे, अे आ प्रमाणे—] त्रिस्थानिका दिग्गति-विदिग्गति परिधिसव्य-परिधिसव्येतर. तथा चार स्थानवाळा बारना यंत्रमां कोई गति त्रण गृहवडे अने कोई गति बे ज गृहवडे थाय छे, इत्यादि विस्तार गंगाप्रवाह ग्रंथथी जाणवो

अे प्रमाणे दृशनी सावर्ण्यतावाळा दशे अंकनुं पण सावर्ण्य [सदृशपणुं] जाणवु, अने ते कारणथीज चूडामणि शास्त्रमां अक्षरो मा पण अंकन्यास करेलो छे, कारण के लिपिभेदवाळा अंकोवडेज वर्ण अक्षरोनी भावना करेली होवाथी अने वस्तुतः तो यंत्रोनी गतिज विचित्र

१ दिशिपंक्तिगत ३ खाना गणवाथी. त्रिस्थानिकागति उर्ध्वाधः रीते बे प्रकारनी छे, ते पहेली दिग्गति, बे, विदिशिपंक्ति गणवाथी बे प्रकारनी विदिग्गति घेरावामा पूर्वथी चार अंकोनो सर्वाळो करवो ते सव्यपरिधिगति, अने ईशानाकथी चार अंक सुधीनो सर्वाळो करवो ते सव्येतर परिधिगति (अर्थात् जमणो घेरावो अने डावो घेरावो गणवाथी बे परिधिगति थई).

२	४	९
३	१०	७
१	६	८

आ कमलाकृतिमा ३–१०–७ तथा ६–१०–४ अे दिग्गतिक्ष २० थाय छे.

९–१०–१ तथा २–१०–८ अे बे विदिग्गतिथी २० थाय छे.

४–१–७–८ अे जमणा परिधिमा २० थाय छे

अने २–३–९–६ अे डावा परिधिमा २० थाय छे.

२ जे १–२ तथा ३–४ अे बे बे अंकोनी सदृशता कही ते रीते १.थी १० सुधीना दशे अंकनो पण परस्पर सदृशता दृशपणानी समानता वडे जाणवी.

३ अेम अर्हंनुमां अ कारथी ८ [illegible] कारथी १० (रीते २०)

छे अेम मानीनेज संतोष करवो, परंतु शास्त्र विरोधना विवादो वडे अकोनी भावना न करवी कारणके यन्त्रोमा अकन्यासनी बीजी कोई गतीज नथी

अे प्रमाणे विंशतिनो [२० अकनो] नव गृह्, नव खाना] वाळो यन्त्र वर्तमानकाळमा पण जेनी सेवा अभयने आपनारी अने जयने आपनारी छे, तेनी सेवामा आसक्त रक्त थयेला अेवा देव वडे अनुपक्त (देवाधिष्ठित) छे, तथा विजय विधिनु निधान छे, दुर्जनोने तर्जना रूप छे, अेवो आ अर्जुन पताका नामनो विंशति यन्त्र वैभवनो हेतु थाओ ॥ १ ॥

प्राचीन पंडितोअे आ यन्त्रोमा (नव खानावाळा यन्त्रोमां) त्रीजो भाग करवाथी शेष अेक रह्ये छते पण [कृत= ४ गुण= ३ अेटले] चोवीसनो यन्त्र करेलो छे, अने ने शेष रहेता पण (रस=० बाण=५ अेटले) पचासनो यन्त्र करेलो छे, माटे ते पंडितोना मार्गने अनुसरनारी बुद्धिवाळा अने उपाध्याय पद प्रतिष्ठित अेवा श्री मेघविजयजी उपाध्याये आ विहरमान जिननो विजयकारी अथवा विजय नाम नो विंशति यंत्र स्पष्ट कर्यो छे-प्रगट कर्यो छे ॥

॥ इति श्री निजययन्त्रे विंशति यन्त्रन्यासः ॥

१

११	३	८
५	७	१०
६	१२	४

२१ ॥२२॥

११	३	९
५	८	१०
७	१२	४

२४ ॥२३॥

११	४	९
६	८	१०
७	१२	५

॥२४॥

१२	४	९
६	८	११
७	१३	५

२४ ॥२५॥

१२	४	१०
६	९	११
८	१३	५

१२	५	१०
७	९	११
८	१३	६

॥२७॥

१३	५	१०
७	९	१२
८	१४	६

२७ ॥२८॥

१३	५	११
७	१०	१२
९	१४	६

३० ॥२९॥

१३	६	११
८	१०	१२
९	१४	७

॥३०॥

१४	६	११
८	१०	१३
९	१५	७

३० ॥३१॥

१४	६	१२
८	११	१३
१०	१५	७

३३ ॥३२॥

१४	७	१२
९	११	१३
१०	१५	८

॥३३॥

१५	७	१२
९	११	१४
१०	१६	८

३३ ॥३४॥

१५	७	१३
९	१२	१४
११	१६	८

३६ ॥३५॥

२

२०	१२	१८
१४	१७	१९
१६	२१	१३

५१ ॥५०॥

७	ॐ	५
२	४	६
३	८	१

॥१२॥

कमलाकृति

२	४	१
३	१०	७
९	६	८

॥२०॥
दधपतिका

३॥।	१०	९।
२॥	५	७॥
८॥।	नाम	६।

॥१५॥

३	८	१
२	४	६
७	नाम	५

॥१२॥

३॥	१०	९॥
३	५	७
८॥	नाम	६॥

॥१५॥

४॥	१२	१॥
३	६	९
१०॥	नाम	७॥

॥१८॥

४	१२	२
४	६	८
१०	नाम	८

॥१८॥

४॥	१४	२॥
५	७	९
११॥	नाम	९॥

॥२१॥

५।	१४	१॥।
३॥	७	१०॥
१२।	नाम	८॥।

॥२१॥

-२ अहिं अे ३४ तथा ५० नो यन्त्र प्रधान छे चोत्रीसना यन्त्रमा त्रिभागे ११
थया तेमाथी चार न्यून करता हमा स्थाप्या छे तथा पचाशनो
त्रीजे भागे १६ प्राप्त थया न्यून करता १२ बीजी गृहमा

१ पुष्पाकृति

१	१२	७
९	६	५
१०	२	८

२०

२	१६	६
१२	८	४
१०	नाम	१४

॥२४॥

५	१६	३
६	८	१०
१३	नम	११

॥२४॥

८	ॐ	५
३	४	७
१	९	१

१२ ॥१३॥

८	ॐ	६
२	५	७
४	९	१

१५ ॥१४॥

पणाह्निगला

ठि	ि	पि
रि	फि	हि
रि	ॐ ठि	पि

१२

पणाह्निगरा

जी	णी	धी
दी	भी	ही
ही	टी	गी

१२

प्रथम करण

३॥	१०	१॥
२॥	५	७॥
८॥	नाम	६॥

१५

द्वितीय करण

३॥	१०	१॥
३	५	७
८॥	नाम	६॥

१५ यन्त्रमिद

शुद्र उत्तम

१	६	१३
२	१०	८
१७	४	९

२०

ब्राह्मणे उत्तम

१७	२	१
४	१०	६
९	८	१३

२०

१ पुष्पाकृतिमा ५ ना द्विगुण १० मा १० मेळव्ये [५–२–१० थी] २० थया. पुन' ६×२=बार मा ८ मेळव्ये २० थया. अे बे गति, अने उर्ध्व ३ गति तथा आयत दीर्घ त्रण गति (१०–९–१ । २–६–१२ । ८–५–७ । ९–६–५ । १०–२–८) अे ६ गति प्रसिद्ध छे पुन ६×२ वारमा ७–१ मेळवतां २० । अथवा १२–८ मेळवता २० । अथवा ८–५–६–१ मेळवता २० । अथवा १०–२–७–१ मेळवता २० । अे प्रमाणे १२ गति थाय छे.



अथ इष्ट यन्त्रे अकन्यास रीति ॥ ८ गृहात्मिका ॥

इष्टस्यराशेः क्रियते त्रिभाग--
स्त तृत्र्यशकस्यापि तुरीयभागः ।
गुणा ३ ब्धि ४ भू १ मध्य ५ नवां ९ ग ६ सप्त ७ ।
भुजे २ पुधार्यः कृत ४ भागवृध्या ॥ १ ॥

अर्थः-इष्ट राशिनो (जेटला अंकनो यंत्र बनाववो होय ते अंकनो) त्रीजो भाग करवो. [अने मध्यमा स्थापवो]. ते त्रीजा अंशनो पुनः चोथो भाग गुण=३, आब्धि=४, भू=१, मध्य ५, नव=९, अंग=६, सप्त=७, अने भुज=२ ओ नंबरवाळा आठ गृहोमां क्रमशः (बारना) चोथा भागनी वृध्दि सहित [मध्यांकना चोथा भागनी वृध्दि सहित] अंकस्थापना करवी (ओ आठ गृहवाळा यन्त्रमां अंकस्थापना दर्शावी छे) ॥१॥इति प्रथमा रीतिः॥

इष्टस्यराशेः क्रियते त्रिभाग ।
समध्यगस्त द्विगुणे द्वितीये ।
त्र्यंशाद्द्विहान्या जलधौ ४ द्विवृध्या ।
षष्ठे तदर्धं पुनराद्य कोष्टे ॥ २ ॥

---

१ धारो के इष्ट राशि ३६ नो यंत्र आठ कोठामा बनाववानो होय त्यारे स्थापना आ प्रमाणे अहिं ३६ नो त्रीजो भाग १२ मध्यमा अेटले पाचमा गृहमां, ते बारनो चोथो भाग ३ त्रीजा गृहमा, तेमा पुनः बारनो चोथो भाग त्रण अधिक करवाथी ६ चोथा गृहमां, तेमा पुनः बारनो चोथो भाग त्रण उमेरतां ९ पहेला गृहमा, तेमा पुनः बारना चोथा भाग त्रण उमेरतां १२ मध्यमा स्थापेलाज छे. पुनः तेमा बारनो चोथो भाग त्रण उमेरता १५ नवमा गृहमां, पुनः तेमा बारनो चोथो भाग त्रण उमेरता १८ छट्ठा गृहमा, पुनः तेमा बारनो चोथो भाग त्रण उमेरता । गृहमा, पुनः तेमा बारनो चोथो भाग त्रण उमेरता २४ बीजा गृहमा ३६ नो यंत्र स्थापवो.

	१	२	३	
	९	२४	३	
४	६	१२	१८	६
	२१	नाम	१५	
	७	८	९	

तुरीय कोष्टार्धं मधो तृतीये । शेषेच शेषं प्रविचार्य धार्यम् ॥
समेक साम्य विषमेर्धपाद पादोनरीत्याष्ट सुकोष्टकेषु ॥ ३ ॥

अर्थः-इष्ट राशिनो त्रीजो भाग करवो, ते मध्यगृहमां स्थापवो, अने तेथी [मध्यगृहना अंकथी] द्विगुण अंक बीजा गृहमा स्थापवो ते त्रीजा भागथी द्विहानि (द्विगुणहीन एटले अर्ध) अंक [जलधि=४ एटले] चोथा गृहमा स्थापवो अने द्विवृद्धि (चोथा गृहना अंकथी द्विगुण अधिक अर्थात् चतुर्थ गृहांकने द्विगुण करी तेज गृहांकमां अधिक उमेरो तेटलो अंक छट्ठा गृहमा स्थापवो, अने एज छट्ठा गृहना अंकथी अर्ध अंक पहेला गृहमा स्थापवो, तथा चोथा गृहना अंकथी अर्ध अंक त्रीजा गृहमां स्थापवो, अने शेष गृहोमां [शेष बे गृहमा] बाकीना अंक गणत्री विचारीने [इष्ट राशि प्राप्त थाय तेवी रीते तेटला अंक] स्थापवा तेमां जो सम अंक आवे तो गृहोमा सम अंक स्थापवो, अने जो विषम अंक होय तो तेमा अर्ध चोथो भाग अथवा पोणो भाग स्थापवो, ए रीते आठे गृहोमा अंक स्थापवा ॥२॥३॥ इति द्वितीया रीतिः ॥

इष्टस्यराशेः क्रियते त्रिभागः ।
समध्यगस्त द्विगुणो द्वितीये ॥
त्र्यशार्धं मथ्यौस रसे ६ च सार्धो ।
रसा ६ र्धं माद्ये च १ गुणे ३ कृता ४ र्धं ॥ ४ ॥

यथा न्यदो इष्टस्य पद् त्रिंशद्राशो ३६ द्वादश १२ तदर्धं पद् चतुर्थं कोष्टे स एवत्र्यंश १२ सार्धं गुण १८ षष्ट कोष्टेदेय[1], षष्टकोष्टार्धं प्रथमेदेय, तुर्यकोष्टार्धं तृतीयकोष्टे धार्यमित्यादि गणापवादे[2] ॥

अर्थः-इष्ट राशिनो त्रीजो भाग करवो, अने ते मध्यगृहमां स्थापवो, बीजा गृहमा तेथी [मध्य गृहथी] द्विगुण अंक स्थापवो, [अब्धि=४

१ ओ बिजी रीति पण आ स्थापेला ३६ ना यन्त्र उपरथी विचारवी सुगम छे.
२ प्रथम स्थपाई गयेला बे प्रकारना पदरीया अने अंक अढारना यन्त्रमा जे रीते पा ... ने पोणा भाग यथायोग्य स्थाप्या छे तद्वत्

अेटले] चोथा गृहमां ते त्रीजा भागनो अर्ध अंक स्थापवो,- वळी तेज त्रीजा भागनो दोढ गुणो अंक [रसे=६=] छट्ठा गृहमा स्थापवो (रसार्ध=) छट्ठा गृहथी अर्ध अंक आद्य=पहेला गृहमां स्थापवो, अने [गुणे=३ अेटले] त्रीजा खानामां, कृत=चोथा गृहथी अर्ध-अंक स्थापवो ॥ ४ ॥ इति तृतीया रीतिः ॥

अर्थः-जेम इष्ट राशि छत्रीस होय तो तेनो त्रीजो भाग १२ अने तेनु अर्ध ६ ते चोथा गृहमा, अने तेज त्रीजो भाग जे बार तेनो दोढ गुणो अंक अेटले १८, तेने छट्ठा गृहमां स्थापवो, अने छट्ठा ग्रहनो (१८ नो) अर्ध भाग ९, तेने पहेला गृहमां स्थापवो,-अने चोथा गृहनुं [छनुं] अर्ध ३, तेने त्रीजा गृहमां स्थापवो, इत्यादि रीति गंगाप्रवाह ग्रंथमा कही छे ॥

श्रीमत्प्रश्नेश्वर ग्रंथाद्कारेष्ट ध्रुवःस्मृतः ।
रेफेद्वौ समरसारात् । द्दे दिशो नष्टचक्रतः ॥ ५ ॥

अर्थः-श्री प्रश्नेश्वर ग्रंथथी अकारने ८ ने ध्रुवांक गण्यो छे, समरसार ग्रंथथी अहिं रेफने २ नो ध्रुवांक गणवो, अने नष्ट चक्र ग्रंथथी ह कारने दिशः=१० नो ध्रुवांक गणवो [जेथी अर्हं पदथी ८-२-१०=२० विहरमान थाय छे. ॥ ५ ॥

तच्चक्र ज्ञानमंजर्यां । ते ना भूद्विंशयंत्रकम् ।
स्याद् ज्ञापकं चास्यसानु-स्वाराकारानुयोजनम् ॥ ६ ॥

अर्थः-ते चक्र ज्ञानमंजरी ग्रंथमां कह्यु छे, तेथी ते चक्रवडे पण २० नो यन्त्र थयो अने ते [२० नो अंक] अनुस्वार सहित अकारनो संबंध जणावनारो छे ॥६ ॥ ते आ रीते—

दोतिन्नीत्यादि गाथायां । अकारे पिद्विकांकतः ।
बिंदोः स्पष्ट तथैवोक्ते । विंशसंख्या प्रबोधनम् ॥ ७ ॥

अर्थः-दो तिन्नि [ये त्रण] इ॰ पदवाळी गाथामां अकारमां पण २ नो ध्रुवांक कह्यो छे, अने . स्पष्टज कहेलं छे, जेथी अम पण २० नी संख्याने २-०=२० ॥ ७ ॥

पुनरप्यष्टतेऽकारे । मात्राकैकस्य मेलने ।
जातः सनवकोसाग्रे । रेफेऽष्टौनष्ट चक्रत ॥ ८ ॥

व्यंजनेत्वात्तदेकोन- भात्रेमध्यग सप्तक[1] ।
हकारेऽग्रे कृत४ मिता-प्रश्नेश्वर धुतध्रुवात ॥ ९ ॥

शेषग्रागुवदिहापिस्यात् । तृतीयालिस्थितौपुनः ।
• समात्राका वकारे द्वौ । जज्ञेतेन त्रिकोप्रिम ॥ १० ॥

अर्थः—वळी बीजी रीते पण विचारीओ तो अकारमा ८ नो ध्रुवांक छे, तेमा "अ" कार मात्रावाळो छे माटे मात्रानो ओक अक मेळवतां ९ थया ते नीचे स्थापवा, ते "अ" नी आगळ पुनः[1] रेफ छे, ते रेफनो ध्रुवाक नष्टचक्रमा ८ नो कह्यो छे, परन्तु रेफ पोते व्यजन होवाथी ओक बाद करतां ७ नो अक प्राप्त थयो तेने [विंशति यन्त्रना] मध्यगृहमा स्थापवो ते रेफनी पछी ह कार आव्यो तेनो ४ ध्रुवाक प्रश्नेश्वर प्रथमा कह्यो छे माटे ते चारने ७ नी पछी [पश्चात्] स्थापवा शेष गृहो बाकी रह्या तेने वीसनो मेळ मळे ओवा अकोथी पूरवा ओम पूर्वे कह्युं छे तेम अहि पण जाणवु, वळी त्रीजी पंक्तिमा रहेला मात्रा सहित अकारवाळो बे अकार छे माटे तेने पछीनो-नीचेनो अक [१ अधिक करवाथी] २ नो प्राप्त थाय छे ॥ ८-९-१० ॥

---

१ अहिं अर्हम् पदथी विंशति यंत्र करवानो छे, त्यां अर्हम् पदमा अ[2] ह् अ ओ अहिं

पंक्ति

१	२	३
१०	२	अ ८
ह ४	८ ७	अ ९
८ ह ५	अ ११	अ ३

अंकस्थापन गतिनो क्रम प्रथम ___ । ओ आकारे थईने पुनः— ओ आकार थयो ओ यन्त्रे क्रम जमणी बाजुथी प्रारभाईने डाबी बाजू पूर्ण थाय छे. ओमा त्रीजी पंक्तिनां त्रण गृह जूदा जूदा अ कारवाळां छे, अने शेष गृहमां र कार विगेरे दर्शाव्या छे, ते प्रमाणे श्लोकार्थने अनुसारे २० नो मेळ विचारवो.

२ अर्थात् पहेलो उपरनो अ मात्रा सहित होवा छतां मात्रानो अंक गण्यो नथी अने नीचेना अ पण मात्रा सहित छे तेनो मात्रानो अंक गणायेलो छे, जेथी १ मात्रा अने मळीने २ नो अंक सर्वथी नीचे आव्यो.

अंइत्यस्यर होऽत्यागा देकादशततो ग्रिमा ।
रेफेद्वौहे कृत ४ मिता–स्तद्योगे पट् निवेशिताः ॥ ११ ॥

रेफस्य व्यजनत्वे नै–कोनत्वे पंचवा स्थिताः ।
अर्हं पदाद्विशयंत्रं । मेघादि विजयोदितं ॥ १२ ॥

तथा अं [अर्हं मांनो अ] र=७ तथा ह्=४ ने नहि छोडीनो रह्या छे माटे ते [७+४=,] ११ नो अक अग्रे [अेटले ३ नी] पश्चात् स्थापवो तथा रेफनो २ अने ह् नो ४ ध्रुवांक छे, ते बे मळीने ६ थाय माटे ६ नं अंक अगिआरनी पश्चात् स्थापवो वळी रेफ अे व्यजन छे, माटे अेक न्यून करवाथी ५ नो अक आवे छे, माटे ते पण ६ नी साथे स्थापवो अे प्रमाणे श्रीमेघविजयजी उपाध्याये कहेलो २० नो यत्र अंर्हं पदथी सिद्व कर्यो. ॥ इति अंर्हं पदेन विंशति यन्त्रम् ॥ ११ ॥ १२ ॥

॥ इत्यर्हं पदेन विंशयंत्र व्यवस्था ॥

९	२४	३
६	१२	१८
२१	धारक नाम	१५

३६

एकादयःस्यु नव यावदंकाः ।
यंत्रे यतः पच दश प्रसिद्धे ॥
द्वाद्या दशांता धृति यंत्रकेऽकाः ।
व्यक्तोऽधिके स्याद्गणितेर्थ भेदः ॥१३॥

॥ अथ विंशतियत्रे ३ तः ११ अकहेतुः ॥

अर्थः–जे कारणथी १५ ना अंकथी प्रसिद्ध अेवा यंत्रमां (पदरीया यंत्रमां) १ थी प्रारंभीने ९ सुधीना अंक होय छे, अने धृति=१८ ना यत्रमां बेथी दश सुधीना [illegible] होय छे ते पंदरियाथी अधिक अक होवाथी अे गणितनो अ[illegible] छे ॥ १३ ॥

क्रमागताके न विलोपनंचे ।
त्कथ तदेका दश चांकतःस्यु ॥
द्वयाधिक त्वा ज्ञनसुस्थलेषु ।
अकेतदेकत्र कृतोर्थ भेद ॥ १४ ॥

अे १५- तथा १८ यंत्रमा (आवेला ९-९ अंको) अनुक्रमे आवेला होवाथी क्रम प्राप्त थयेला कोई पण अंकनो लोप थयो नथी, परन्तु २० ना यंत्रमा क्रमे आवता अकोमाथी अेक अंकना लोप करवो पडे छे, अने जो ते क्रमे आवता अकोमाथी अेक अकोनो लोप न करीअे तो आदि अक २ नो होवाथी अथवा य अक होवाथी (अेटले पंदरीयानो पर्यन्त अक ९ न्यारे विंशतिनो पर्यन्तक ११ (अेटले २ थी ११ सुधीना १० अक) होवाथी ते १० अको नव गृहोमा केवी रीते स्थपाय ? ते कारणथी अेक अंकमा अर्थ भेद करवो पडे छे, [अर्थात् नव स्थानामा दश अंको न गोठवाई शकवाना कारणथी अेक अकनो अेक लोप करवो पडे छे]॥१४॥

यंत्रेतदेकाधिक विंशविद्धे ।
एकादशाता त्रिमुखाहितैंकाः ।
एकोनतायामपि विंशयत्रे ।
विनार्थभेदं गतिरस्तिनान्या ॥ १५ ॥

अर्थ -अने ते कारणथीज अेक अधिक वीस [२१] ना यत्रमां त्रणथी मारभीने अगिआर सुधीना नव अक छे, जेथी तेमा अक लोप करवो पड्यो नथी, अने वीसनो यत्र अेकवीसनी अपेक्षाअे अेक न्यून होवा छता पण अकलोप थाय छे, माटे विंशति यत्रमा अर्थ भेद विना [अक लोप विना] बीजी कोई गति नथी ॥ १५ ॥

जघन्यभावेनजिनादशस्यु॰ । जिनद्वय२वर्णभिदाऽष्टेलेपि ॥
नि--जलेशा४पुनरत्रसिद्धा२४ गत्वात उच्चैर्नग७रज्जुदेशम् ॥१६॥

अर्थः- (हवे विंशति यंत्रमां दश आदि अंको तथा तेनो क्रम स्थापवामां २४ तीर्थंकरनी गणत्री दर्शावाय छे ते आ प्रमाणे—) जघन्यथी १० तीर्थंकरोनो समकाळे जन्म थाय छे, माटे प्रथम दशनी स्थापना, त्यार बाद बे आठ तीर्थ करो[=सोल तीर्थ करो] वर्ण भेदथी छे [सुवर्ण वर्णना छे] माटे २ तथा ८ नो अंक स्थापवो. त्यार बाद जलेशाः = ४ तीर्थंकर गणतां सिद्ध=ते चोवीसे तीर्थ करो उर्ध्वलोकमां नग ७= रज्जु उंचे जईने सिद्ध थया माटे ७ नो अंक स्थापवो. ॥ १६ ॥

ध्येया इतोऽमी नवभेद मुक्त्या ।
मूर्ध्नित्रिलोक्याः शिव ११ शर्मभाजः ॥
षट् ६ पंचवा ५ केवल बोध दृष्ट्या ।
द्रव्याणि नित्यं परिभावयंतः ॥ १७ ॥

अर्थः-त्यारबाद ए चोवीसे सिद्धनुं स्वरूप मोक्षना नव भेद वडे (सत्पदादि नव अनुयोगद्वारवडे) ध्येय–भाववा योग्य छे, माटे ९ नो अक स्थापवो. तथा त्रण लोकने मस्तके शिवशर्म=शिवसुखने भजनारा थया, माटे (शिव=) ११ नो अंक स्थापवो, (परन्तु मोक्षे जवा पहेलां) ते तीर्थंकरो केवल ज्ञान अने केवल दर्शन वडे नित्य छ अथवा पाच द्रव्यनी परिभावनावाळा (ध्यान वा उपदेशवाळा) हता तेथी [अगिआरना अंक पहेलो] ६ अने ५ नो अंक स्थापवो (जेथी प्रथम ६ नो मुख्य अक स्थापीने गौणपणे लुप्त करेलो ५ नो अक पण स्थापवो. त्यार बाद ११ नो अंक स्थापवो ॥ १७ ॥

अप्रदेशतयाऽस्कंध–भावाद्द्रव्याविवक्षया ॥
कालः स्याद्द्रव्यपर्यायो । द्रव्यपंचकमेवतत् ॥ १८ ॥

अर्थः-[छ तथा पांच द्रव्यनुं कारण आ प्रमाणे—] — काळ द्रव्य प्रदेश रहित होवाथी स्कंध रहित छे (अर्थात् काळ द्रव्यनो स्कध नथी तेम प्रदेश पण नथी) ... द्रव्यनी विवक्षा न करवाथी, द्रव्य पर्याय रहित [द्रव्य ... रहित] छे. जेथी द्रव्य

गणाय छे [त्यारबाद ३ मा अंकनी स्थापनानु कारण स्पष्ट कर्युं नथी ते यथा संभव स्वत' विचारवु]. ॥ १८ ॥

चत्वारो ४ दश १० च द्वो २ ता-चष्टे ८ ति स्फुटिकाचले ॥
तीर्थे जिना स्थिता निंबे-स्तदंके विंशयन्नकम् ॥ १९ ॥

अर्थः-अथवा बीजी रीते विचारतां (स्फुटिकाचले तीर्थे =) अष्टापद तीर्थ उपर ४-१०-२-८ तीर्थंकरोनी प्रतिमाओ रहेली छे, माटे ते चोवीस प्रतिमाओना अंक सहित आ विंशतियंत्र थाय छे ॥ १९ ॥

प्राच्यां जैनं द्वय तत्र । दक्षिणस्यां चतुष्टयम् ॥
उदगासन्न ईशान-देशे दश जिना स्थिता ॥ २० ॥

अर्थः-त्यां अष्टापद पर्वत उपर पूर्वदिशामा २ तीर्थंकर, दक्षिणमां ४* अने उत्तर दिशा पासे ईशान दिशामा १० जिनेश्वरो रह्या छे ॥ २० ॥

प्रतिच्यामष्ट चाग्नेय्या-मिहृतेपि प्रसगतः ॥
पूर्व देश जनुर्मुक्त्यो-र्थदिवाऽभ्युदयश्रियाः ॥ २१ ॥

अर्थः-तथा पश्चिममा ८ जिनेश्वरो कह्या छे, ते अहिं प्रसंगने अनुसरे अग्निकोणमा गणवा कारणके " पूर्वदेशमा जन्म अने मोक्ष थवा थडे " ओ अर्थथीज अभ्युदित लक्ष्मीवाळा [ओ ८ जिनेश्वरोने पूर्व तरफना अग्निकोणमा गण्या छे] ॥ २१ ॥

षट् ६ संसा ७ दिगंतो वाष्ट ८ ।
त्रि ३ वाध्यां ४ दिगंतीतत ॥
अष्टाप्राचीप्रतीच्योस्ते-
प्यंतराले प्रतिष्टिता ॥ २२ ॥

---

४ नो अंक उत्तरमा आवेछे.

अर्थः-तथा छट्टी सातमी आदि गतिमांथी ८ नो अंक छे, तथा त्रीजी चोथी विगेरे गतिमां पण आठनो अंक छे तेथी ए आठनो अक वा जिनेश्वरो दक्षिण अने पश्चिम दिशिने वच्चे पण रहेला गणवा ॥ २२ ॥

उत्तमा क्षत्रिय गतिः । षट् सप्ताद्या तत स्मृता ॥
पद्माकृतौ विंशयत्रे । तथैवाष्ट निवेशिताः ॥ २३ ॥

अर्थः-क्षत्रिय गति उत्तम छे, तेथी छ अथवा सातथी प्रारंभीने (पुर्वमां ६ अथवा ७ नो अंक स्थापीने) विंशति यंत्र होय छे, अने ते कारणथीज पद्माकृतिवाळा विंशति यंत्रमां पण ८ नो अक तेवी रीतेज [एटले ६-७ नी वच्चेज] रहेलो छे-स्थापेलो छे. ॥ २३ ॥

यद्यप्यंक परावृत्ति । गतिभेदेन दृश्यते ॥
नास्तिदिग् निश्चयःप्रोक्त । स्तथाप्येषा व्यवस्थितिः ॥ २४ ॥

अर्थः-जो के गतिभेदोथी अंकपरावृत्ति देखाय छे तेथी [एटले भिन्नभिन्न गति वडे स्थपाना विंशति यंत्रोनां अमुक अंक अमुक गृहमांज रही शके एवो] दिशिनो निश्चय कर्यो नथी, तो पण विशेषतः आ आगळ कहेवाथी व्यवस्था निश्चित करे छे ॥ २४ ॥

पक्षा २ हि ९ सिंधु ४ शैला ७ दि-रुत्तमा ब्राह्मणेगतिः ॥
अनुरोधादियंतस्या । प्रतिष्ठाकेपुनिश्चिता ॥ २५ ॥

अर्थः-पक्ष=२ अहि=९ सिंधु=४ शैल=७ इत्यादि क्रमवाळी ब्राह्मणगतिज उत्तम छे, माटे ते अनुरोधथी [ते ब्राह्मणगतिने अनुसरीने] अंकोने विषे एज प्रतिष्ठा-स्थापनक्रम (पुर्वमां २ दक्षिणमा ९ उत्तरमां ४ मध्यमा ७ इत्यादि घणीवार वर्णवायेलो-क्रम]- निश्चित थयो छे , ॥ २५ ॥ इति विजयपत्रे विंशति यत्रांकप्रतिष्ठा ॥ इति अंक हेतुः ॥

१ प्रथम वीस प्रकारनी गतिओ " " छे तेमानी गति अथवा (इशानमा ६ वा ७, थी प्रारभाती क्षत्रियगति. ... श्य गति. इत्यादि.

इति विजययंत्रे विंशाति यंत्रांक प्रतिष्टा

१० र	२ चं	८ म
४ बु	७ गु	९ शु
५ श	११ रा	३ के

६ ५	४	१०
११	७	२
३	९	८

र स २०

६	११	३
४	७	९
१०	२	८

वै म २०



ईशानेंशदिगी १० श्वर स्थितिरपि स्वागेपिपंचानन-
द्वैगुण्याद्द्वय द्वयमर्धे तोद्रितनया रोधे न हंसद्वयात् ॥
अष्टौसिद्धय एव मूर्तयइवांभोराशिनिर्मथन ।
सप्तावा नवनेत्र पट् भुजधरस्यास्मात् ज्वरस्योद्भव. ॥ १ ॥

अर्थ –ईशान दिशामा १० नो अंक ते ईश्वरनी-महादेवनी शरीरसबंधि दशास्थितीने सूचव नारो छे, कारण के महादेवनु पंचानन नाम होवाथी पच मुख छे, अने अर्धांगमा पार्वती होवाथी ये शरीर महादेवना थयां तेथी पाचने बमणाकरतां १० स्थिति थई तथा अर्धांगे पार्वती होवाथी महादेव द्विरुप थवाथी दश पछी २ नो अक आवे छे तथा आठ सिद्धि अेज जेनी आठ मूर्ति जेवी छे, तेथी ८ नो अक आवे छे, तथा अभोराशि =समुद्रनु मथन कर्युं तेथी समुद्र साथनी सरयाअे गणाता होवाथी ७ नो अक आवे छे, तथा अेनाथी नवनेत्र अने छ भुजा वाळा ज्वर (नी उत्पत्ति होवाथी (त्रिमूर्ति होवाथी) नव नेत्र अने ६ भुजाने अपेक्षाअे ९ तथा ६ नो अक आवे छे, ॥ १ ॥

सर्य्येकादशदक्त्रयी निजयकृद्धानंजयस्यार्जुनेऽ-
प्येश्वर्यार्थिषु विंशयंत्र करणे ध्येयानि वस्तून्यत ॥
यावद्दूर गता रमापिपरमार्धांगीभवती स्थिरा ।
गेहेतद्वद्बुधा भवेच्चसुधाधीशोपिवश्यः स्वयं ॥ २ ॥

अर्थः-महादेव अगिआर होवाथी ११ नो अंक, विजयकारी अेवां त्रण नेत्रवाळा होवाथी ३ नो अंक आवे छे ओ प्रमाणे अर्जुनने पण अेश्वर्या दिकमा जय आपनार आ यत्र छे, माटे विंशतियत्र करणमां अे अे वस्तुओ ध्येय-ध्यान करवा योग्य छे, तथा गमे तेटली दूर गयेली उत्कृष्ट लक्ष्मी स्त्री तुल्य अर्धांगना थाय छे, अने घरमां स्थिर थई रहे छे वळी अे यंत्रथी बहुधा (विशेषे करीनें) वसुधाधीश-राजा पण पोताने वश थाय छे ॥ २ ॥ इति विंशति यंत्रे महादेवावतरणम् ॥

वीरेवतारो दशमध्युलोकात् । व्रतं दशम्यां वरकेवलाप्तिः ।

द्वैमातुरे धर्मयुग तथाष्ट-वर्षे महावीर पद प्रतिष्ठा ॥ ३ ॥

अर्थः-श्री वीरप्रभुनुं अवतरण [च्यवन] दशमा देवलोकथी थयुं छे, वळी दशमीने दिवसे व्रतप्राप्ति तथा केवळ ज्ञाननी प्राप्ति थई छे, ते ध्येयथी १० नो अंक विचारवो श्री वीरप्रभुनी [देवानंदा अने त्रिशला अे] बे माता छे, अने [साधु धर्म तथा श्रावकधर्म अे] बे धर्म उपदेश्य छे ते ध्येयथी २ नो अंक विचारवो आठ वर्षनी वय थये [बाल-क्रीडा प्रसंगे बळणी परीक्षा करनारा देवे] " महावीर " अेवुं नाम स्थाप्यु ते ध्येयथी ८ नो अंक विचारवो ॥ ३ ॥

चतुर्मुखांगत्वमृषि७प्रमाण-करांगता साधुगणाः नवापि ॥

षाण्मासिकी पंचदिनोनतप्ति-व्रंते शरापट् त्रितय चरित्रे ॥ ४ ॥

अर्थः-देशना समये समवसरणमां चार मुख थाय छे, [ऋषिप्रमाण=] ७ हाथनु शरीर प्रमाण छे, साधुना नवगण छे, पांच दिवस न्यून छ मासनो तप कर्यो छे, पांच अथवा छ महाव्रतवाळा छे अने दर्शनज्ञान चरित्ररूप त्रण रत्नवाळा छे, अे कारणथी यत्रमां ४-७-९-६ वा ५-३ अे अंको ते ते स्वरूपे ध्येय छे. ॥ ४ ॥

षष्ठे भवे पोट्टिलता [पि] स्तथैकादशतद्गणेश्वराः ।

[विर] यंत्रो दि[ ]सावन

अर्थ.–पाचमे अथवा छट्ठे भवे पोट्टिलना अटले पोट्टिलमुनि हता, जेथी अे रीते पण ५–६ नो अंक विचारवो तथा श्रीवीरप्रभुना अगियार गणधर हता, अने पूर्वभवमा वीस सागरोपमनु आयुष्यहतु तेथी अे रीते ११ ना अक सहित आ २० नो यत्र विचारवो, अे रीते उपर कहेला भावोनो निश्चय आ विंशति यंत्रथी विचारवो ॥ ५ ॥ इति विंशतियंत्रे श्रीमहावीरावतरणम् ॥

दशासुराद्या भ्वसदोद्विधास्तेऽ–
ष्टौव्यन्तराः ज्योतिषिकाश्चतुर्धा ॥
ते नारका सप्त नराश्च तिर्यग्–
जात्याश्च पचेंद्रिय देहभाज ॥ ६ ॥

अर्थः–१० ना अकथी असुरकुमारादि दश भवनपतिदेवो, २ ना अंकथी ते भवनपति [उत्तर निकाय अने दक्षिण निकायना अेम] बे प्रकारना ८ ना अकथी आठ प्रकारना व्यन्तरदेवो ४ ना अकथी चार प्रकारना ज्योतिषी, ७ ना अकथी सात प्रकारना नारक, ९ ना अकथी नव प्रकारना तिर्यंच [त्रण वेद वाळा जलचरादि त्रण गणता नव तिर्यंच], ५ ना अकथी ते तिर्यंचो विगेरे पचेन्द्रियजाति, ना जीवो छे अेम विचारवु ॥६॥

स्यु स्थावरा पंचवका.पृथक्त्वात् । प्रत्येक वृक्षेर्विकलत्रयंच ॥
नरास्तथैका दशधेतिविंश–यत्रे प्रसिद्धि समयेपिसिद्धा ॥ ७ ॥

अर्थ–अथवा प्रत्येक वनस्पतीने जूदी गणवाथी स्थावरो पांच [साधारण वनस्पति सहित] छे, तथा ३ ना अकथी त्रण प्रकारना विकलेन्द्रिय, ११ ना अकथी अगिआर प्रकारना मनुष्य [अहिं आगळ कहेवाशे ते प्रमाणे] विचारवा अे प्रमाणे आ विंशति यत्रमा जे अक प्रसिद्ध छे, ते अंकनो भाव समयमा–सिद्धान्तमा सिद्ध–प्रसिद्ध छे ॥ ७ ॥

जलचर १ स्थलचर २ खेचरा ३ स्त्रिवेदा ९ नरा सप्ते क्षेत्रजाः
... ४ एव ११ ज्योतिष्काश्चनक्षत्रेताराणामभेदात् ॥८॥

अर्थः-उपरना श्लोकमां (८ छ्रामां) तिर्यंचना नव भेद कह्या [illegible] जलचर स्थलचर अने खेचर ओ त्रणे त्रण त्रण वेदवाळा होवाथी जाणवा. अने मनुष्यना अगिआर भेद ते भरतादि ७ क्षेत्रना अने ४ अंतर्द्वीपना जाणवा, तथा ज्योतिषीओ चार कह्या ते नक्षत्र अने ताराना ओ भेदने [ओ बेने ओक गणीने कह्या छे] ॥ ८ ॥

इतिकतिपययुक्ति व्यक्तिभिः विंशयंत्रं ।
दृढतरमपिभावात् सूत्रितं सद्गुणौघैः ॥
हठमतिशठचित्ते नैतितत्त्वा–कथंचित्
सहृदयसुहृदांतु—स्तादतः शाश्वतश्रीः ॥ ९ ॥

अर्थः-ओ प्रमाणे आ विंशति यंत्रने सद्गुणना समूहवडे केटलीक युक्तिओवडे भावथी अतिदृढपणे सूत्रित कर्यो [बनाव्यो] कदाग्रहनी बुद्धिवाळा ओवा शठ पुरुषना चित्तमां तत्त्वथी [illegible] थतु नथी [अर्थात् शठना चित्तमां कई तत्त्व प्राप्त थतु नथी]. परन्तु सहृदय=विचारशील ओवा बुद्धिमानोना हृदयमा तो [illegible] छे, जेथी शाश्वतलक्ष्मी सिद्धी थाय छे.॥ ९ ॥

॥ पद्मावती स्तोत्रान्तर्गत विंशतियंत्र [illegible] ॥



भू१निश्व३क्षण६चद्र१चद्र१पृथिवी१युग्मैक१२सख्याक्रमात् ।
चद्रा१भोनिधि४वाण५षण्६नव९वसू न् ८दिक्१०खे५चराश्यादिषु॥
ऐश्वर्यात्१रिपुमारी विश्वभयहृत् क्षोभातरायात् विपात् ।
लक्ष्मी १ रक्षण २ भारती ३ गुरुमुखात् मत्रान् इमान् देवते ॥ १ ॥

इति पद्मावती स्तोत्रे

अर्थः-भू=१, विश्व=३, क्षण=६, चन्द्र=१, चंद्र=१, पृथ्वी १, युग्मैक=१२, ओ संख्याना अनुक्रमथी चद्र=१, अम्भोनिधि=४, बाण=५, षट्=६, नव=९ वसु=८, अने दिग्=१० अने तेथी ते उर्ध्व आकाशमा [ओटले १० नी उपर राशि=१२ विगेरे अंको स्थापवामा जे यंत्र थने छे] ते ऐश्वर्यवाळा यत्र लक्ष्मी प्राप्त थाय छे, तथा शत्रु अने मरकी विगेरे तथा सर्व भयोथी रक्षण थाय छे, तथा हृदयक्षोभथी अन्तरायथी अने विषथी पण रक्षण थाय छे तथा गुरुमुखथी [बृहस्पतिना मुखथी] वाणी थाय छे, ओ प्रमाण लक्ष्मी रक्षण भारती प्राप्त थाय छे, तेथी हे पद्मावती देवि ! माता ! ओ ओ मंत्रोने-रहस्योने गुरुमुखथी निश्चय करीने ध्यान करे ॥ १ ॥

तन्वैद्री १ राक्षसो २ दीची ३-वायु४मध्या५ग्नि६दक्षिणा७॥
ऐशानी ८ पश्चिमे तासु ९ । क्रमादक निवेशनम् ॥ २ ॥

अर्थः-त्या अनुक्रमे पूर्व दिशिमा-राक्षसी (नैऋत्य) दिशिमा, उत्तर दिशिमा वाय-य-मध्य-अग्निकोण-दक्षिण-ईशान-अने पश्चिम ओ नव स्थानोमा [कोठाओमा] अनुक्रमे अकस्थापना करवी ॥ २ ॥

राशेरिष्टस्यांशकोयस्तृतीयो-
दिग्भि'४ हीन 'सद्वितीये'निविश्य' ॥
रूपा १ धिक्याद्भिद '९ वेदा ४ द्वि १ वाण ५
रामा ३ग६क्ष्मा १ सिद्धि ८ कोष्टेषुदध्यात् ॥३॥

१ आ श्लोकमा दर्शेला अकोनी विशेष स्पष्टता आ श्लोकनी अर्थ चालु टीकाथा, आगळ । समजी शकाशे के ओ अकोथी २० केवी रीते बने छे.

अर्थः-इष्ट राशिनो जे त्रीजो भाग, तेमांथी चार बाद करतां जे अंक प्राप्त थाय तेने बीजा कोठामां स्थापवो, अने तेनाथी अेकेक अधिक अंक ने अनुक्रमे ९ मा चोथा सातमा पांचमा त्रीजा छट्टा पहेला अने आठमा [=९-४-७-५-३-६-१-८ अे नंबरवाळा आठ] कोठाओमां स्थापवो. ॥ ३ ॥

विंशतेर्न त्रयोभागा-स्तेनाष्टादशयंत्रवत् ॥
द्वितीयगेहे द्वितीयं । दत्वामार्गं समाश्रयेत् ॥ ४ ॥

अर्थः-परन्तु अहिं वीशना यंत्रमां त्रण भाग पूर्ण थता नथी, ते कारणथी अढारना यत्रनी पेठे बीजा गृहमां २ ना अक स्थापीने त्यारबाद आगळनो मार्ग लेवो [अेटले ३-४-५-६-७-८-इत्यादि अंकोनी स्थापना ९-४ ७-५-३ इत्यादि गृहोमा करवी.] ॥ ४ ॥

सर्वस्थानेषु चैकांकः । परमेश्वरवाचकः ॥
मन्त्रपाठे प्रणववत् । धार्यं कार्यस्य सिद्धिदः ॥ ५ ॥

अर्थः-पुनः मंत्र पाठमां जेम प्रणव (ॐ) नी स्थापना अवश्य थाय छे, तेम आ विंशतियंत्रना अंकोमां पण परमेश्वरनो वाचक अने सर्व कार्यनी सिद्धि करनारो अेवो १ नो अंक सर्व गृहोमां स्थापवो ॥ ५ ॥

१ अेप्रमाणे स्थापवाथी आ अंक स्थापना थई

१०	२	८
४	७	११
६	११	३

२ सर्व गृहोमा १ नो अंक स्थापवाथी

१०	१२	१८
१४	१७	११
१६	११	१३

आ स्थापना थाय, परतु

४-३-८ इत्यादि गणिअे यवनपद्धति प्रमाणे स्थापना

१	१६	३
१२	१०	८
७	४	५

अे

प्रमाणे अंक स्थापना थई. जेमा २ ॱ
१ नो अक आवे तेवा यत्रो हवी

ज्ञ आव्यो छे, परन्तु सर्व गृहोमा
दर्शावाशे.

यथायवनयत्रस्याऽन्धि४त्रि३सिध्या८द्विकागतिः ॥
श्रीमद्विजययत्रोकाऽष्टमीशुद्रेपु सोत्तमा ॥ ६ ॥

अर्थः–जेम यवनोना विंशतियत्रमां ४–३–८ इत्यादि गतिओ शूद्रोनो अनुक्रम कह्यो छे, तेम विजय यंत्रमां कहेली आठमी गति शूद्रोमां [शुद्रो माटे] उत्तम छे ॥ ६ ॥

स्थाने द्वयेऽत्र यवनै–रेक दान विनिर्मितम् ।
तेनाद्विके द्वादशातिः । पद्के पोडश सभवः ॥ ७ ॥

अर्थः–यवन विंशति यंत्रमां यवनोओ वे स्थानोमां [वे कोठामां] १ नो अक [अधित] स्थापन कर्यो छे, ते कारण २ ना कोठामां १२ अने ६ ना कोठामां १६ नो अक स्थपाय छे ॥ ७ ॥

मध्ये तत्र दश स्थान । यथा त्रातस्तथा दश ।
कमलाकृति यत्रेपि । तत्क्रमादग्रिगाः शिवा ११ ॥ ८ ॥

अर्थः–त्या मध्य कोठामा १० नुं अकस्थान जे आ विंशति यंत्रमां छे, तेम कमलाकृति यत्रमा पण मध्य कोठामां १० नो अक छे, त्यारबाद अनुक्रमे आगळ चालता [शिव=] ११ नो अक स्थपाय छे ॥ ८ ॥

क्रमात पचकात्पंचा–धिक् त्वेदश १० मध्यगा ।
तदेका दशातः पचा–धिकत्वेऽधस्त्क पोडश ॥ ९ ॥

---

३ आठमी गतिओ बनेलो यत्र आ प्रमाणे

१	९	११
२	१०	८
१७	४	९

आ यत्रोमा २० नी केवी रीते करवी ते चालु टीकाना भावार्थमाज कहेवाशे

अर्थः-त्यारबाद जेम पांचमां कोठामां प्राप्त थयेला कोठा संबंधि ५ ना अंकमां ५ मेळवतां १० नो अंक मध्यगत पांचमां कोठामां आव्यो छे, तेम ११ मा ५ मेळवतां १६ नो अंक ११ ना अंकनी नीचे छट्ठा कोठामां आवे छे. ॥ ९ ॥

अथ काव्यार्थः-भूः १ विश्वानि ३ क्षणाः ६ क्षणैः पड्भिस्तृगामिका इति वचनात् चंद्र १ पृथिवी २ पुनः पुनश्चंद्र कथनादेकरूः सर्वत्र देयः इत्याभि प्रायः एवं १३-१६-१२ इति स्थान त्रय सिद्धिः अनुलोम विलोमे नाक सूत्रणमुभयांकेभ्योपि योजना ज्ञापकात् चंद्रांभोनिधि इति पद्मावत्या व्याख्येयं समुद्र शब्दे न चत्वारः सप्तवा इति गणनात् ततः १७-१४ इति स्थान द्वय सिद्धिः बाणेति चतुर्दशाऽधः बाणाः ५ यद्वा षट् पचशा इति लावण्यात् एतद्विस्तर प्रागुक्त एव पांडव शब्देन पच प्रसिद्धाः वक्तनः षट् कर्णस्य पाडवत्वात् तथा पचभिः काम्यते कुंता तद्वधूः पंच-काम्यनीत्यत्र धर्म १ वायु २ इंद्राः ३ अश्विनीकुमार २ द्वयं एव ५ षष्ठ पांडुरिति पंच कथने षडपि ग्राह्याः एवं बाणाः ५ कामस्य प्रसिद्धाः षष्टोवसरः 'रहोनास्तिक्षणोनास्ति' इति वचनात् एव मिंद्रिय रसादि संख्यायामपि पंच षत्वं भाव्य तेन ॥

अर्थः—उपर कहेला भु विश्व क्षण इत्यादि पदवाला काव्यनो [पद्मावती काव्यनो] भावार्थ आप्रमाणे भू एटले १ विश्वएटले ३, क्षण ओशब्द छना अकने दर्शावनारो होवाथी क्षण एटले ६, ए त्रणे अंक साथे चंद्र शब्द वारवार कहेवाथी चंद्र एटले १ नो अंक सर्वत्र जोडतां तथा पृथ्वी एटले १ नो अंक पण जोडता, (अर्थात् १, ३, ६ नी पश्चात् १, १, १ जोडता ११-२३-१६ थाय) ए प्रमाणे १ नो अक सर्वत्र (सर्वस्थाने) स्थापवो, जेथी १३-१६-११ ए त्रण स्थान [अकस्थान] सिध्ध थाय छे, अहिं क्रमपूर्वक अथवा क्रम रहित पण अंक स्थापना थाय छे, तेथी बन्ने प्रकारना अंकोवडे पण योजना जणावेली छे

तथा चंद्राभोनिधि इत्यादि पदोनी व्याख्या आ प्रमाणे-अंभोनिधि एटले समुद्र शब्दथी ४ अथवा ७ नो अंक गणाय छे. तेथी ७ अने ४, अने उपर कह्याप्रमाणे १ नो अक अहिंपण जोडतां १७ अने १४ एप्रमाणे बे अंकस्थान सिध्ध थाय छे. तथा बाण एटले ५ नो खंड ते चौदनी

नीचे स्थापवो, अथवा छ अने पाच ओबे अकने सहशपणु छे, ते सविस्तर प्रथमज करेवाई गयु छे, जेमके " पाडव " अेशब्द वडे पाचनो अक प्रसिद्ध छे, अने वस्तुत. कर्णने पण पाडव पणु होवाथी " पाडव " शब्द थी छनो अक पण गणाय तथा पाच वडे जे काम्यते इच्छायले पचकामी अेटले कुता माता तेमनी यघू [पुत्रवधू द्रौपदी], अेमा धर्म-वायु-इन्द्र-आश्विनीकुमार थे, अेप्रमाणें पांच अने छट्ठा पाडु अेप्रमाणें पाच करेवाथी छनु पण ग्रहण थाय छे अेरीते बाण शब्दथी पण कामदेवना ५ बाण प्रसिद्ध छे, अने छट्ठो अकसर (अे पण कामनु छट्ठु बाण तुल्य छे], कश्यू छे के रहो नास्ति=अेकान्त नथी, क्षणो नास्ति=अवसर नथी इतिवचनात् अेप्रमाणें इन्द्रिय अने रस पाच पाच सख्यावाळा छे तो पण ६ नी गणत्री कराय छे, अेम जाणवु जेथी बाण अे शब्दथी ५ अथवा ६ नो पण अक जाणवो, ते कारणथी

प्राच्याहगिंदू १२ नैऋत्या-गुणेन्दू १३ उत्तराश्रितौ ॥
कृतेंदू १४ तदधोवाणेंदू १५ कला १६ वैकवृद्धित ॥ १० ॥

अर्थ.-पूर्वदिशामा हगिंदू=१२, नैऋत्यकोणमा गुणेन्दू=१३, उत्तरादिशामा कृतेन्दू=१४, तेनी नीचे बाणेन्दू=१५ अथवा अेमा अेक अधिक करवाथी चद्रनी कळा=१६पण गणाय [ते वायव्य कोणमा स्थापाय छे]॥१०॥

पचाधिकत्वादत्रैव । स्थापनीया नवेंदवः १९ ॥
ततो दशातो श्रीरुद्रा ११-अध पचाधिकानृपा १६ ॥ ११ ॥

अर्थ'-अथवा उत्तरदिशिमा जे १४ स्थाप्या छे, तेमा पाच अधिक करवाथी १९ थाय ते पण त्याज १५ ना स्थाने स्थपाय छे त्यारबाद अत'=मध्यमा १ ` तेनी अग्रे [अेटले अग्निकोणमा] ११ नो छे अने तेनी [११ नी] नीचे पाच ृ १६ नो अक स्थापवो ॥ ११ ॥

ई	पूर्व		अ
उत्तर	१७	१२	११
	१४	१०	१६
	१५ १९	१८	१३
वा	पश्चिम		नै

(दक्षिण)

ऐशान्यात्यष्टि १९ रष्टेदू १८ । वारुण्या मघवादिशि ॥
क्रमप्रासोष्टादशांक-स्ततभाव्या नवापिते ॥ १२ ॥

१-१०-९ इतियोजनायां नवक गणनात् यद्वा वाणेति सूत्रे चतुर्दशेभ्यो याणाधिकत्वे १९ गौ ९ ध्रुवेत्वन्यथा रुचिरित्युपदेशात् यद्वा वाणोनत्वे ९ यद्वा क्रम प्रास १५ मध्ये पङ्कूनत्वे ९ अग्रे विवृत्यनवकथनात् दशशर कला इति सौंदर्यलहरी तेन १० वाणा एकोना ९ इत्यपि यद्वा वाणाः ३ रामस्य १ अर्जुनस्य २ कामस्य ३ तत्र ६ मेलने ९ वाण तद्वतो रभेदोप चारात् अत्र १-७-१ चाण पद् इति ११ एव २० आयतत्वेपि १-८-११ इति २० तथा १७-१-१-१ एवं २० कोणगणने दशस्थाने शून्यघात् एकोनत्वे ९-११ एव स्थानद्वयादपि २० योजना भावात् वाण ५ पद् ६ वचनेन एकादशांक इति केचित् तन्नपूर्वं एकादशांक भावेन पुनरुक्तदोषात् तेन वाण कथनात् पंच ५ अथोवा चतुर्दश स्थाने अंक पार्श्वस्थे १-४-१५ एव २० तथा १-७-१-४-१-६ एवं २० तथा १७ पुनर्वाण ३ एव २० तथा १४-१-५ एवं २० ततो यथा योगं वाणेत्यादि सूत्र विवरणीयं एव मन्यत्रापि १-७-१२ अथवा १७-१-२ तथा १-३-१६ अथवा १३-१-६ तथा १७ एकोन ४ तदा ३ एवं २० कोणे एकोन ९-१-११ द्वितीय कोणे एकोन ७ तदा ६-१-१३ एवं २० तथा ११ एकोन ६ तथा ५ अधः १-३ एवं २० अनयारीत्या कोष्टाक भेदे अभेदे वा ऊन करणे अधिक करणेवा ज्ञापक वाणपाडिति सूत्र मंतव्यं ततः एकोन ८ तदा ७ अग्रे १२ एवं २० तथा एकोन २ तदा १-१० एकोन एकाधिक ८ तदा ९ इत्यादिना सर्वत्र समाधिः एवं बहुधा यन्त्र भावना सर्व कार्य सिद्धि करत्वात् षोडश कोष्ठ चतुस्त्रिंशत् यंत्रवत् एवं १५-१८ इतिस्थानद्वय सिद्धिः तत एव वाण रूप "वसु दिक् "दिक् खेच राश्यादिषु "इतिकाचित्पाठः तेन नववस्त्र नित्यमपि व्याख्यातं ततोमध्ये "दिक् दश "देयाः ततोप्युच्चैः खे आकाशे दशांकस्थानादुपरि राश्यादिषु द्वादश प्रभृतिषु अंकेषु धृतेषु यंत्रात् असात् ऐश्वर्यात् लक्ष्मी भवति रिपुप्रमुखा निष्टेभ्यो रक्षण भवति रिपवो वैरिणः मारि युगपल्लोकमृत्यः विश्वानि सर्वाणि ——

१	११	३
११	१०	८
४	३	९

हृत्क्षोभ. चित्तभ्रम' उपलक्षणात् सर्वे रोगा ततो द्वद्वः तस्मात् विपात् सर्पादेः अत्राप्युप लक्षणात् सिंह गजादेरिति तथा गुरुमुखात् वृहस्पति मुखात् भारति वाणी भवति द्वद्वाल्लक्ष्मी रक्षण भारती (वाण १८ ऐश्वर्य रक्षाया १६ विघार्थे १९ सप्तम स्थाने लेख्याः) प्राप्नोति हे देवत्ते मात. पद्मावति इमान मन्त्रान रहस्यानि गुरुमुखादित्याहृत्या ध्यारपानानिश्चित्य ध्यायामिनि अध्याहार इति काव्यार्थ. यद्वाविचरा गृहा' यथानवसुस्थानेपु स्थापिता' ध्यानादिपु पूर्वादि दिशासु एतानकान् तथासस्थाप्य ध्यायामि

अर्थ.-इशान कोणमा त्वष्टि=१७, वारुणी दिशामां [पश्चिममां] अष्टेंद्=१८, अे प्रमाणे मघवा दिशीथी (पूर्व दिशाथी) दिशाओना क्रम प्रमाणे अढारनो अक आव्यो, ते विंशति यत्रमा नवे गृहोमा अथ नवे अकस्थानो विचारवा ते आ प्रमाणे—

अर्थ'-१-१०-९ अे * योजनामां ९ नी गणत्री करवाथी, (२० थाय छे) अथवा काव्यमा वाण शब्द कह्यो छे ते वाण अेटले ५ ना अकोनो चौदमां अधिक करवाथी १९ थाय छे तेमा [अे १९ मा] गौ अेटले ९ नो अक ध्रुव होवाथी यथा रुचि प्रमाणे गणितमा जोडवो, अेम कहेलु होवाथी (१-१०-९ मा ९ नो अक गणाय छे,) अथवा बीजी रीते विचारता वाण अेटले ५ नो अंक न्यून करवाथी [अेटले चौदा माथी ५ बाद करवाथी] पण ९ आवे, अथवा पांच अने छ सद्दश होवाथी १५ माथी ६ न्यून करीअे तो पण ९ आवे, अने ते नवनो अक पूर्वे विवरीने कहेवाई गयो छे, अथवा दश सर कला (अेटले १०-१-३-१६ अेमा सर=वाण अेटले १ ने १० मा थी बाद करता पण ९ आवे, अथवा वाण अेटले ३ नो अंक

* विंशतियत्रमां पूर्वे दर्शाव्या प्रमाणे त्रीजा पाचमा अने सातमा कोठामाना ११-१०-१९ मांथी यथारुचि अक्रो लईने २० गणवानी पद्धति अहिं दर्शावाय छे त्यां ११ मानो १, १० माना १० अने १९ माथी ९ नो अक लई १-१०-९ अे त्रणे मेळवीने २० गण्या. वळी अहिं सातमा कोठामा १५ ना स्थाने अेटले रीते ५ ना स्थानमा १९ अेटले ९ नो अक कवी रीते गणवो ? तेनी जूदी रीत दर्शावी. अे कोणपक्तिथी २० गण्या छे.

पण गणाय, कारण के रामनुं अर्जुननु अने कामदेवनुं ओ त्रण बाण प्रसिद्ध छे, माटे ओ ३ मां (१६ माना) ६ ने मेळवतां पण ९ थाय अथवा बाण अने बाणधारी ओ बेमां अभेदोपचारथी ६ गणता ५ मा मेळवी ११ करी १-७-१-११=२० थाय

अर्थः-हवे १७-१२-११ ओ त्रण अंकनी पंक्तिमां १, [७+१ =] ८, ११ ओ त्रण मळीने २० थाय छे, अथवा १७-१-१-१ मळीने २० थाय छे, अथवा खूणाथी खूणे गणतां १० मा शून्य होवाथी १ न्यून करवाथी ९ थाय, जेथी ११-९ अेटले २० थाय ओ रीते बे स्थानथी [त्रीजा पांचमा कोठाना ११-१० थी पण २० नी गणत्री थई. वळी योजना भावथी सयुक्त भावथी सातमा कोठाना ५-६ नी साद्दशतावाळा बे अकोने मेळवी ११ करी मध्य कोठामां रहेला १० ने अेक न्यून पणाथी ९ गणीने ११-९ अेटले २० केटलाक आचार्यो गणे छे, ते योग्य नथी, कारणके प्रथम ११ ना अक साथे ९ मेळवी अेकवार २० गणाई गया छे, तेथी अहिं पुनरुक्त दोष [पुनर्गणना दोष] प्राप्त थाय छे, ते माटे अहिं बाण कहेवाथी ५ अथवा ३ गणीने १४ ना अकने छूटो पाडता १-४-१५ अेटले २० थाय छे, तथा [१७-१४-१५ ने बदले १६ नी पंक्तिमांथी अक छूटा पाडी] १-७-१-४-१-६ अेटले २० गणाय छे तथा सत्तर अने सातमा कोष्टकमा बाणने ५ गण्या छे, तेने बदले ३ गणता १७-३ अेटले २०थाय छे. तथा [१४-१५ मा] १४- १-५ अेटले २० थाय छे, माटे आ काव्यमा बाण शब्दनो अर्थ ५-६-३ इत्यादिरीते यथा योग्य विचारवो, अने ते प्रमाणे अन्यस्थाने पण बाण शब्दना ओ अर्थोथीज यथायोग्य २० नो अंक प्राप्त करवो तथा १-७-१२ अेटले पण २० थाय छे अथवा १७-१-२ थी पण २० थाय छे

तथा [११-१६-१३ नी पंक्तिमां अंकोने यथा रुचि छुटा पाडतां] १-३-१६ थी २० थाय छे, अथवा १३-१-६ थी २० थाय छे तथा [१७-१४-$\frac{१}{१}$५ नी पांक्तिमा] १७ मा १४ ना अकने (१ न्यून ४ अेटले) ३ गणीने उमेरता २० थाय छे, ओ रीते खूणामा रहेला १९ अेटले १ न्यून ९ अर्थात् ८ गणीने ८-१-११ २० थाय छे [ओ १९-१०-११ नी

१ ओ गणित १७-१४-१५

पंक्तिमाथी २० गण्या] तथा बीजे खूणे १७-१०-१३ नी पंक्तिमाथी १७ अेटले १ न्यून ७ अर्थात् ६ गणीने ६-१-१३ मेळवता २० थाय छे अे प्रमाणे [११-१६-१३ नी पंक्तिमा] ११- [१ न्यून ६ अर्थात्] ५-१-३ थी पण २० थाय छे.

अर्थ--अे रीते कोठामां रहेला अकोने छूटा पाड्या विना अथवा छूटा पाडीने तथा अेकादि अंक न्यून करीने अथवा अधिक करीने पण अे यत्र २० सख्या नो जणावनार छे, तथा बाण अेटले ६ नो अक अेवु पण सूत्र जाणवु अथवा त्यारबाद [१९-१३ नी पक्तिमा अेक न्यून आठ करवाथी अढार अेटले सात गणीने ते ७ नी आगळनो १३ अक उमेरतां ७-१३ थी २० थाय छे तथा [१२-१०-१८ नी पंक्तिमा] १ न्यून २ अेटले १ गणी तेमज अढारमा १ अधिक ८ अेटले ९ गणीने १-१०-९ स्थापवाथी पण २० थाय इत्यादिरीने सर्व स्थाने २० नी गणत्री सम्यक्रीते विचारवी अने अे रीते घणी घणी रीते करेली यत्रना गणितनी भावना सर्व कार्यनी सिद्धि करनारी होवाथी सोल कोठामां करेला चोत्रीसना यत्रनी पेठे विंशतियंत्रनी भावना पण जाणवी. अे प्रमाणे आ विंशतियत्रमा ५ ना स्थाने १५ अने १९ नी भावना अक स्थाननी सिद्धि सातमा कोठामा गणेली छे

अर्थ--ते कारणथीज बाण रूप वसु दिक विक् खे च राश्यादिषु अे बो पण पाठ कोई कोई प्रथमा छे तेथी नव वस्तुओ अेम पण [नव ग्रहोमा नव अकस्थानरूप ९ अेम पण] कह्यु छे, माटे ते नव कोठाओमा मध्य कोठाना विषे विक् अेटले १० नो अक स्थापवो, ते अकथी पण उर्ध्वे खे=आकाशमा अर्थात् १० नी अकनी उपर राश्यादिषु अेटले १२ विगेरे अको स्थाप्ये छते ये यत्ररूप तेजथी लक्ष्मी प्राप्त थाय छे, अने शत्रु विगेरे अनिष्ट पदार्थोथी रक्षण थाय छे, अहिं रिपु अेटले शत्रुओ, मारि अेटले समकाळे घणा लोकनु मृत्यु, तथा विश्व=सर्वे [illegible] भय अेटले भय अने दुर्लोभ अेटले चित्तनो भ्रम, तथा- प्रकारना रोग, अे सर्वनो द्वन्द्वसमास करता [illegible] त्यारबाद

[illegible] प्रकारना विषयी अेटले सर्वे [illegible]

[illegible] सिंह हस्ति विगेरेथी ([illegible]

तथा गुरुमुखात् अेटले बृहस्पतिना मुखथी भारती अेटले वाणी थाय छे अे त्रणेनो द्वन्द्वसमास करता लक्ष्मीरक्षणभारती अेवुं वाक्य थाय छे [अहिं सातमा गृहमां वाण अेटले अैश्वर्यार्थे १५, रक्षार्थे १६, अने विद्यार्थे १९ नो अंक स्थापवो,] ते लक्ष्मीरक्षण अने वाणी प्राप्त थाय छे तथा हे देवते अेटले हे पद्मावती माता ! आ मंत्रोने रहस्योने गुरुमुखथी जाणीने यावत् व्याख्याथी निश्चय करीने ध्यायामि अेटले हुं ध्यान करूं छुं अे ध्यायामि ५६ श्लोकमां कह्युं नथी तो पण अध्याहारथी ग्रहण करवुं ॥ इति काव्यार्थः ॥

॥ विंशतियंत्रे नवग्रहादि स्थापना ॥

अथवा खेचराः अेटले नव गृहोने जेम यंत्रना नव कोठामां पूर्वादि दिशाओमां स्थापेला होय छे, तेवी रीते अे अंकस्थानोने पण स्थापीने हे पद्मावती देवी ! हुं ध्यान करूं छुं ते ग्रहोनी स्थापना आ प्रमाणेः—

मध्ये रवि शशी प्राच्यां । प्रतीच्यां मंगल स्थितः ॥
गुरुरीशे कवियाम्ये । कौबेर्यां निश्रितो बुधः ॥ १ ॥

अर्थ-मध्यमा सूर्य, पूर्वमा चंद्र, पश्चिममां मंगल, ईशानमां गुरु, दक्षिणमां शुक्र, अने उत्तर दिशामां [विंशति यंत्रने विषे] बुध रहेलो छे. ॥ १ ॥

मंदोवायौतमोवन्हौ । नैरुत्याकेतुराश्रितः ॥
ग्रहाणामितिदिग् भागा । न्यस्यंतेमुद्रिकादिषु ॥ २ ॥

अर्थः—वायुकोणमां शनि, अग्निकोणमां राहु, अने नैऋत्यमां केतु रह्यो छे. अे प्रमाणे मुद्रिका विगेरमा ग्रहोने ते ते दिशीभागमां स्थपाय छे ॥२॥

अध' स्थलात् उपर्युपरि अंकधरणं कुंडलिन्यागत्यानागाधिष्टितत्वात्

नीचेना स्थानथी उपर ... लिनी गति प्रमाणे [प्रदाक्षिणा
वर्तक्रमथी] अंकस्थापन ... रणके अे यंत्र ना...

(पद्मावती ते धरणोन्द्रनी इद्राणी छे, अने धरणेन्द्र ते नागकुमार देवोनो इन्द्र छे, माटे नागाधिष्ठित) रे [ते नागराजनी साधकता आ प्रमाणे—]

इत पचफणोनाग—राजपद्माफणत्रयात् ॥
मध्येदशावतारोर्हन् । भानुतेजाः कविज्ञंयुक् ॥ ३ ॥

अर्थ—हवे अहिं नागराज पांच फणावाळो छे, तेथी दक्षिण दिशामा रूणे ५ नो अंक स्थपाय छे, अने पद्मा [पद्मावती] त्रण फणावाळी होवाथी ३ नो अक पण दक्षिणमा थीजे रूणे [जमणे रूणे] स्थपाय छे. अने ते बने फणाओनी उपर मध्ये दश अवतारवाळा श्री पार्श्वनाथ प्रभु रह्या छे, तेथी ते बे अकोनी उपर मध्यमा १० नो अक स्थपाय छे सूर्यना तेज वाळो [उपर १२ वाळो] अने तेनी जमणी बाजुए तथा डाबी बाजुए कवि=शुक्र १६[1] जिह्वावाळो होवाथी १६ नो अने ज्ञ=बुध १+४=५[1] जिह्वावाळो होवाथी १४ नो अक स्थपाय छे, अर्थात् जमणो बुध अने डाबो शुक्रनो अक स्थपाय छे ॥ ३ ॥

नागकुलानां नवसख्या सिद्धैव यद्वा हे देवते तव गोप्यानि यत्रस्थापना अत्रयोजना यथा १७-२-१ प्रथमा ७ १२-१ द्वितीया ७ २-११ तृतीया एव ३ उपरि पक्तौ १४-० ६ चतुर्थी ४ १० ६ पचमी ४-०-१६ षष्टी एव ३ मध्यपक्तौ १५-१-१-२ सप्तमी १-१८-१ अष्टमी १—५—१—१३ नवमी एव३ अधःपक्तौ अत्र ६—८—३—१—१ -१ एका ५ ९ ३-१-१-१ द्वितीया १९-१ इति स्थान द्वयादपि जायमाना विंशतिका ज्ञेया यथा पद्मा. (पद्मनवपचभ्या ऊना इति पद्मन वचनादेक कदान सिद्ध तेन १५ मध्ये पद्मता) १५ तदा ९ तत्र एकाक धरणे १९

१७	१२	११
१४	१०	१६
१९ १५	१८	१३

१ षट्सुएकोनत्वे पचयाम्या २ चतुर्षुएकोनत्वेत्रय' उदीच्या ३ कविषोडशार्चिः, १-४-इति बुध पचार्चि

१ छमाथी १ न्यून करता ५ नो अक दक्षिणमा २ चारमाथी १ न्यूनकरतां ३ नो अक उत्तरमां ३ कवि १६ अर्चि जिव्हावाळो छे, ४ [illegible] ओटले बुध ५ ओटले १-४ [illegible] छे माटे १४.

तत' त्रयोदशस्थान गतः १ मेलने २० एतान् गणयंते विंशति धार विंशते रुपरि प्रयोजनाभावात् एवं आयनत्वे ८ योजना अथ उद्धरीला प्रथम पंक्तौ योजना ७-४ पद्गुन १५ शेष ९ एवं २० प्रथमा १-१४-५ द्वितीया १-४-१५ तृतीया एव ३ ततः १२-०-८- चतुर्थी २-१०-८ पचमी १-१-१८ षष्टी एवं ३ मध्यपंक्तौ ११-६-३ सप्तमी १-१६-३ अष्टमी १-६-१३ नवमी एता ८ नवउद्धरीला सर्वा १८ कोणे ३-१०-७ द्वितीय कोणे १-१० पद्गुन पञ्चदशशेष ९ एवं विंशतिवार विंशतिकाः॥ अत्र १२-८ तथा ४-१६ तथा १७-३ तथा ९-२१ यद्वा १९-१ तथा ७-१३ दशस्थानेपि शून्यत्वात् एको-नत्वे ९-११ तथा पञ्चसु एकोनत्वे ४ पदसुएकोनत्वे२एवं ९-१०-१ यद्वा९-६ दशस्थाने ९ एवं स्थानद्वयजा अन्यापि विंशतिका ज्ञेया गंभीरार्थविषयात् पंचेदय एवमेव गगाप्रवाह ग्रंथ कथिते

नागकुलनी संख्या नव प्रसिद्ध छे. अथवा हे पद्मावती देवि! ते नव गृहमां [विंशति यंत्रमां] नव अंक स्थाना गोप्यानि=रक्षण करवा योग्य अर्थात् स्थापवा योग्य छे. ते यंत्रनी स्थापना आ प्रमाणे—

१७	१२	११
१४	१०	१६
१९ १५	१-	११

अर्हं २० नी गणश्रीनी योजना आ प्रमाणे—

अर्थ–अर्हं २० नी गणश्री वीस रीतिओ थाय छे ते आ प्रमाणे—[१७–१२–११ नी पंक्तिमाथी] १७–२–१ ओटले २०, ७–१२–१ ओटले २०, अने ७–२–११ ओटले २० ओ प्रमाणे पहेली बीजी अने त्रीजी ओ त्रण रीति थई. तथा [१४–१०–१६ नी पंक्तिमा] १४–०–६ ओ चोथी रीतिओ २०, ४–१०–६ ओटले २० ओ पांचमी रीति, ४–०–१६ ओटले २० ओ छट्ठी रीति, ओ प्रमाणे त्रण रीति मध्य पंक्तिनी थई. तथा [१५–१८–१३ नी पंक्तिमां] १५–१–१–३ ओटले २० ओ सातमी रीति, १–१८–१ ओटले २० ओ आठमी रीति. १-०–१–१३ ओटले २० ओ नवमी रीति, ओ प्रमाणे त्रण रीति नीचेनी पंक्तिमा आवशे (अथवा सातमा गृहमां १९ ना स्थाने १९ पण विचारी ओ कारण के ५–३ नी सहजना होवाथी ९ विचारी ओ तो) ९–८–३–१–१–१ ओटले २० ओ पहेली रीति अने १९–१० विचारी ओ तो ५–९–२–१–१–१ ओ बीजी रीति. तेमज १९–१ ओटले

२० अे त्रीजी रीति अे प्रमाणे बीजी रीते ५
त्रण रीति जाणवी अहिं छेल्ली रीतिमा बे ९
जाणवी तथा अहिं छ न्यून अेटले छ नो ७
पडू उन कर्याथी १ नो अंक स्थापवो मिद्र
१५ माथी ▨ न्यून करता ९ नो अंक आवे ते
अक स्थापता १९ थाय छे त्यारबाद १३
थाय छे ते बीस अहिं न गणवा, कारणके
२० नी गणत्री करवानी होवाथी ते उपरान्त
अे प्रमाणे बीचे पक्तिथी नव रीतिअे २० नी ०।

[हवे १७-१४-१३ नी पक्तिमा] उर्ध्व पक्ति
पक्तिमा छ न्यून १५ अेटले ९ गणीने ७-४-९
रीति, १-१४-५ अेटले २० अे बीजी रीति, १-४-९
रीति अे त्रण रीति जाणवी

त्यारबाद बीजी मध्य उर्ध्व पक्तिमा [अेटले ०
१२-०-८ अेटले २० अे चोथी रीति, २-१०-८ अेटले
रीति, १-१-१८ अेटले २० अे छट्ठी रीति, अे
पक्तिमा पण त्रण रीति थई

[त्यारबाद ११-१६-१३ अे त्रीजी उर्ध्व पक्तिमा] १
२० अे सातमी रीति, १-१६-३ अेटले २० अे
१-६-१३ अेटले २० अे नवमी रीति, अे नव रीति उर्ध्व पं
जाणवी अने अे प्रमाणे नव आयत रीति अने नव ०
मळीने १८ रीति थई।

तथा अेक खूणाथी बीजा खूणानी पंक्तिमा [विदिशि पं
१३-१०-१७ नी पक्तिमा] ३-१०-७ अेटले २० अे
तथा [१६-१०-११ नी पक्तिमा] छ न्यून पदर अेटले ९
१-१०-९ अेटले २० अे वीसमी रीति अे प्रमाणे २०
... नी जाणवी

कितना सुंदर काव्य ! कितनी [illegible] !! कितनी मिठी भाषा !!!

चन्द्रप्पर चरित्र—[illegible] गुरु [illegible] इस [illegible] के [illegible] प्रशंसा कर आपही देखकर [illegible] प्रकार [illegible] प्रथम [illegible] जरूर मंगा करें।

इस ग्रंथके [illegible] जितनी ज्यादा [illegible] नहीं।

मुल किमत ३ रुपिया [illegible]

— [illegible] —

अगर आपका [illegible] बहुत देखनेकी इच्छा होतो सिर्फ [illegible] बुद्धिप्रकाश ([illegible] प्रथम [illegible] धर्मका महात्मा [illegible] किया है [illegible] कवि [illegible] मुल किमत २ रु भेट किमत १ रु.

विचित्र वस्तु ?) रुप खबर (अद्भुत चीज

[illegible] सियाऊमीगी [illegible] " जिसका हमने [illegible] इसको [illegible] मंत्रसे मंत्रित करके पास रखनें वालोंकी [illegible] होना है [illegible] अपने ढगकी एक है, तथा इसके प्रभावसे [illegible], मुकदमोंमें विजय प्राप्ति, [illegible] पिशाचादिकोंका उत्पात नष्ट, ३६० [illegible] जावका चीजपर बीचमें रखो [illegible] यही कारण भी यह सियाऊमीगी अपने [illegible] ॥

हाथाजोडी नामका एक वृक्षका [illegible] देखनेमें साक्षात हातके अंगुलियोंसे वेष्टित है [illegible] किमत प्रतिहात चार आना है दो हापसे दश हाथतकका मिलता है कमसेकम दो हाथका [illegible] दस हाथतक जो बडोही परिश्रमसे प्राप्त हुआ है [illegible] जो वृक्षोमें ऐसे २ फल लगते है यह वृक्ष कामरूप देशमें होता है एक इसीको मंत्रसे मंत्रित करके जिसके नामसे [illegible] रखदो बस वह वश हो जायगा दश हातका बहुत जल्दी काम करता है तरीब माथमें मेनी जाती है

नोट—[illegible] चोटी और सियाल सिंगी इन प्रभावशाली वस्तुओने जनतामें बहुतही धुम मचाइ है इन वस्तुओंकी इतनी उगरी मागणी आनेसे नयाष्टॉक मगवाना पडा शकडो प्रमाण पत्र आये हैं और उनकी मुल कीमत से बहुतही , कम किमत रखी है आपभी [illegible] । जरूर उपयोग करे

वळी अहिं बीजी रीते पण १२-८ अेटले २०, ४-१६ अेटले २०, १७-३ अेटले २०, ९-११ अेटले २०, अथवा १९-१ अेटले २०, तथा ७-१३ अेटले २०, तथा दशमां शून्य होवाथी अेक न्यून करतां ९ थाय ते ९-११ अेटले २०, तथा पांचमाथी अेक बाद कर्ये ४, अने छ मांथी अेक बाद कर्ये ५ आवे, जेथी [५+४=९] गणी ९-१०-१ अेटले २०, तथा दशना स्थाने [शून्य होवाथी अेक बाद करतां नव गणीने] ५-६-९ अेटले २०, अे प्रमाणे ये ये अंकस्थान मेळवीने गणाती बीजा प्रकारनी २० नी गणत्रीओ पण थाय छे ते यथा योग्य जाणवी. गंभीर अर्थना विषयवाळी होवाथी गंगाप्रवाह ग्रथमां कहेला आ वीसना यंत्रमां अे प्रमाणेज गणत्री गणवी.

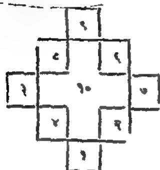
राजन्महेभै ८ निधिभि ९ स्त्रिलोक्यां ३।
राज्यंभुजाभ्यां २ लभतेश्व ७ चक्रैः ॥
शिवं ११ दिशा १० माब्धि ४ जयारसढ्यां।
६-५ नरोत्रयंत्राद्विहरज्जिनानां ॥

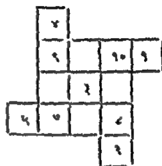
अर्थः-विराजता अेवा महान् हस्ति ओ वडे [अहिं हस्ति अेटले यंत्रपक्षे ८ वडे] तथा निधि वडे (९ वडे) त्रण=३ लोकने विषे भुजाओ वडे [२ वडे] अने अश्व [अेटले ७ ना] समूहवडे शिव=११ दिशा=१० अने अब्धि=४ ना विजयवाळुं रस=६ सहित अथवा रस=५ सहित अेवा राज्यने वीसविहरमान् जिनेश्वरोना आ विंशति यंत्रथी अहिं-आ लोकमां मनुष्य प्राप्त करे छे [अर्थात् ८-९-३ । २-७-११ । अने १०-४-६ अथवा ५ अे त्रण पंक्तिगत अंकस्थानो रूप वीस विहरमानना विंशति यंत्र वडे मनुष्य आ लोकमां राज्य प्राप्त करे छे.]

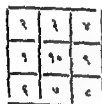
इति यन्त्रे सर्वत्र एकक लेखने योजना ज्ञेया ॥

अे प्रमाणे यंत्रमां सर्वत्र १ नो अंक स्थापवाथी अे विंशति यंत्रनी योजना जाणवी.

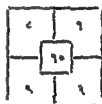
अग्रमे जुम्मा मसजीदके प्रवेश करत समना हाथके दर्गापर

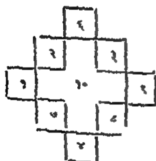


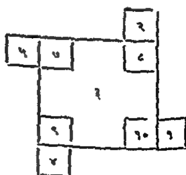


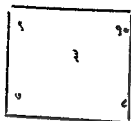










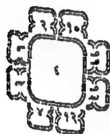


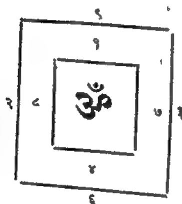
श्रीशीतलनाथजीका मंदिर सुरत

२	९	२	७
६	३	६	५
८	३	८	९
४	[illegible]	४	७

सिष्यचक्र

२	७	६
९	५	१
४	३	८



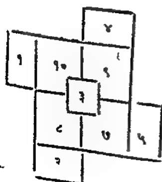


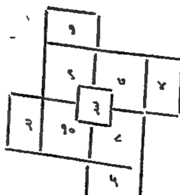
बगदाद शरीफ महबुबमियाके रोजेका है

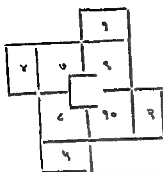
४ ७

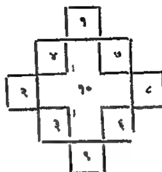
६	३
९	२

१ ८









क्वचितस्थानद्वेतात् क्वचिदपिच कोष्टत्रितयतः ।
समस्ताद्व्यस्ताद्वा क्वचिदधिकतो वोन करणात् ॥
अभूत सख्या विंशत्यत्पनुगममयी विंशतिमिता ।
ततस्तस्या पद्मोदितमपिचयत्र विजयतात् ॥ १ ॥

अर्थ–ओ प्रमाणे कोई वखत बे स्थानथी (बे गृहोमा रहेला बे अंक–स्थानोथी,) कोई वखत त्रण गृहमा रहेला त्रण अंकस्थानोथी, कोई वखत संपूर्ण अंकस्थानोथी, कोई वखत व्यस्त (अपूर्ण) अंकस्थानोथी कोई वखत अे आदि अधिक करीने, अने कोई वखत ७ आदि न्यून करी पण मेळवता विंशति यंत्रने अनुसरनारी २० नी संख्या प्राप्त थाय छे, ते कारणथी ते विंशति सख्यानो पद्मावती देवीओ कहेलो यंत्र पण विजयवंत वर्ते छे ॥ १ ॥

वाचकैर्मेघविजयै- र्विंशत्यत्रसुसूत्रितम् ॥
श्री वीरपार्श्वयत्पद्मा-नुभावादस्त सिद्धिदम् ॥ २ ॥

अर्थ –अे प्रमाणे श्री वीरप्रभु अने पार्श्वप्रभुना तथा पद्मावती देवीना प्रभावथी श्रीमेघविजयजी उपाध्याये जे आ विंशति यंत्रनी सूत्रणा [रचना] रची ते विंशति यंत्र सर्व सिध्धिने आपनारो थाओ ॥ २ ॥

इतिश्री पद्मावती स्तवन कथित विंशति यंत्र प्रतिष्ठा ॥ श्रीरस्तु

॥ विंशतियंत्र प्रतिष्ठा ॥

अे प्रमाणे पद्मावती देवी ना स्तोत्रमां कहेला विंशति यंत्रनी प्रतिष्ठा [अंक स्थापना अथवा अंक गणत्री] समाप्त थई.

॥ अथ शुद्रोत्तमा अष्टमी गतिः ॥ विंशतियंत्रस्य ॥

अब्धि४त्रि ३ सिद्धि ८ नव ९ बाण५कु१दृग् २नगां ७ोद्द ।
प्यंकं क्रमेण विलिखेत्खलु शुद्र लक्ष्म्यै ॥
एषैव यावनिक यंत्रकृताप्रतिष्ठा ।
स्यादष्टमी विजययंत्रवरेविशिष्टा ॥ १ ॥

अर्थः-अब्धि=४, त्रि=३, सिद्धि=८, नव=९, बाण=५, कु=१, दृग्=२, नग=७, अंग=६, अे [४-३-८-९-५-१-२-७-६ नंबरवाळा] कोठाओना क्रमथी २ आदि अंक निश्चय शुद्रनी लक्ष्मीने अर्थे लखवा, अने अेज क्रमवाळी यवनना विंशति यंत्रनी स्थापना पण करीअे तो ते आ आठमी गति आ श्रेष्ठ विजय यंत्रमां अति उत्तम कहेली छे. (शुद्रोने माटे अति उत्तम छे) ॥ १ ॥

अत्रापि विंशतिमिता ननु योजनाःस्यु-
स्तामुग्धबोधविधये परिशीलनीया ॥
रुद्रा ११ रसा ६ त्रय ३ इति प्रथमाकु १ भूपा १६ ।
रामा ३ पराकु १ रस ६ विश्व १३ पदेस्तृतीया ॥ २ ॥

८	९	३
९	७	११
१०	४	५ / ६

१ आ शुद्रोत्तम विंशति यंत्रमां पण यथास्थाने १-१ ना अंक स्थापवा ५ ... गतियंत्र बने छे.

अर्थः-अे आठमी गतिवाळा यत्रना पण वीमनी योजना [गणत्री] जे रीते थाय छे, ते रीति मुग्ध जनना बोधने अर्थे करेवा योग्य छे, त्या प्रथम ११-६-३ अे प्रथम रीति, त्यारबाद कु=१, भूप=१६, अने राम=३ अे रीते १-१६-३ नी बीजी रीति, त्यारबाद कु=१, रस=६ अने विश्व=१३ अे रीते १-६-१३ अे त्रीजी रीति जाणवी (अे त्रणे रीते २० थाय छे) ॥२॥

अर्को १२ भू ० वसुभि ८ पक्ष २-
दशै १० भै ८ भू १ कु १ धृत्यतैः १८ ॥
भू १ शैल ७ भू १ कृते ४ इ १ गौ ६-
रिदु १ शक्र १४ रसै ६ पुनः ॥ ३ ॥

अर्थः-तथा १२ ० ८ अेटले २० जे चोथी रीति, २-१०-८ अेटले २० अे पाचमी रीति, १-१-१८ * अेटले २० अे छट्ठी रीति, [अे त्रण रीति, १२-१०-१८ नी बीजी पक्तिमा थाय छे] तथा [१७-१४-१६ नी बीजी पक्तिमा] १-७-१-४-१-६ अेटले २० अे सातमी रीति, १४-६ अेटले २० अे आठमी रीति, ॥ ३ ॥

भू १ सिंधु ४ दिवसै १५ पंक्ता-वायतत्वेनवाप्यमू : ॥
उच्चत्वेशिव११दृक्२शैले७-रेका१र्के१२मुनि७भिस्तथा ॥४॥

अर्थः-तथा १-४-१५ अेटले २० अे नवमी रीति, अे प्रमाणे आयत [आडी-दीर्घ] पक्तिओमा अे नव रीतिअे २० थाय छे, हवे उर्ध्व पक्तिनी रीते (११-१२-१७ नी पहिली पक्तिमा) ११-२ ७ अेटले २० अे पहेली रीति, अने १-१२-७ अेटले २० अे बीजी रीति. ॥ ४ ॥

१

११	१८	१३
१४	१०	१६
११ १५	१८	१२

अे चालु गणाती रितीओ आ यत्रमाथी गणवी.

* कुधृत्युतै. अे पदमां कु=१ ते धृति=१८ उतै'=सहित अेवो अर्थ छे जेथी भू कु धृत्युतै' अेटले १-१-१८.

२ अहिं ६ अने ५ नी सदृशता गणीने २० नो अक गणवो.

भूमीं १ दु १ धृति १९ मिश्चात्र-सावर्णात्तिलके [illegible]

यद्वैककत्रयेभेद त्वष्टासो १७ परिपूर्यते ॥ ५ ॥
व

अर्थः-तथा १-१-१८ अेटले २० ओ त्रीजी रीति [illegible]
गण्या ते ७ अने ८ नी सदृशता विचारीने गण्या छे. [illegible]
पंक्तिमां १ अकना त्रण भेद [अेटले त्रण अेकडा [illegible]
करवा, अेटले १-१-१-१७ अेटले २० अेम पण गणवा. ॥ ५ ॥

कला १६ भू ० वार्धि ४ मिश्चांग ६—
दश १० सिंधु ४ निमीलनैः ॥
षट् ६ व्योम ० मनुभि १४ र्विश्व १३
भू १ स्त्यंगे ६ भूं १ धृती १८ द्रु १ [illegible] ॥ ६ ॥

अर्थ—तथा (१६-१०-१४ अे बीजी उर्ध्व पंक्तिमां) [illegible] २०
अे चोथी रीति, ६-१०-४ अेटले २० अे पांचमी रीति, [illegible] अे
छट्ठी रीतिअे २० गणवा. [पुनः १३-१८-[illegible] [illegible]]
१३-१-६ अेटले २० अे सातमी रीति, तथा [illegible] २० अे
आठमी रीति ॥ ६ ॥

भू १ राम ३ भू १ दिने १५ स्त्रे ३ क १—कला [illegible] कोणके॥
त्रि ३ दशां १० गे ७ रेक १ दश १०—नवभि ९ अंद्रुने नव ॥७॥
षड्न पंचदशत—शेषे नवयतोमता ॥
यद्वैकोनाःषट् ६ च पंचे—कोनाः पंच ५ चतुर्मिनाः ४ ॥ ८ ॥

करता ९ आवे ते गणवा अथवा अेक न्यून छ अेटले ५ अने अेक न्यून पाच अेटले ४ प्रमाणनो अंक आवो, ॥ ७ ॥ ८ ॥

योगे चतुर्णां पंचाना–नववागो९ ञ्ज १ धारणात् ॥
एव विशतयोविंश–प्रमाणाइह जज्ञिरे ॥ ९ ॥

अर्थ– अे रीते पण ४ अने ५ ना योगे ९ नो अंक जाणवो ते साथे अेकनो अक स्थापवाथी १९ थाय, अे रीते वीस प्रकारनी वीसनी गणत्री अहि थई ॥ ९ ॥

देव्या पद्मावत्या भगवत्या स्वप्नकथित यंत्रस्य ॥
संवादार्थं विवृत वाचक मेघादिविजयेन ॥ १० ॥

अर्थ.–भगवती पद्मावती देवीअे स्वानमा कहेला आ विंशति यत्रना संवादने अर्थे [गणितनी रीति प्रगट करवाने अर्थ] श्रीमेघविजयजी उपाध्याये आ यत्रनु विवरण कर्यु ॥ १० ॥

भवति नानायत्राणा गतय स्तेन विशते ॥
यत्रे शठकृताक्षेप विक्षेपायोद्यमोप्यसौ ॥ ११ ॥

अर्थ –वळी विंशति यत्रथी वीजा पण अनेक प्रकारना यंत्रोनी गतिओ [रीतिओ] प्राप्त थाय छे ते कारणथी, तेमज आ विंशति यत्रमा मूर्खज नोवडे करता आक्षेपोने दूर करवा माटे पण मारो आ उद्यम छे अेम जाणवु ॥ ११ ॥

इति विजययत्राष्टम गत्यायवनमत विंशति यत्रप्रतिष्ठा ॥

अे प्रमाणे विजययत्रनी आठमी गतिवडे यवनना मते विंशति यत्रनी स्थापना दर्शावी ॥ इति ॥

|| अथ ग्रहोपरिशकुनम् ||

आइच्चेनाथ्थिलाहो । सोमे रिद्धीय मंगलेमरणम् ||
बुध गुरु सुके लाहो । सनिराहूरोरवं मरणम् || १ ||

अर्थः-विंशति यंत्रमां सूर्य होय तो लाभ न थाय, चंद्र होय तो ऋद्धि प्राप्त थाय, मंगल होय तो मरण प्राप्त थाय, बुध गुरु शुक्र ए त्रण होय तो लाभ थाय, अने शनि तथा राहु होय तो रौरव [भयंकर] मरण थाय || १ ||

बुधे चंद्रोतरे मार्गे-समीपे गुरुशुक्रयोः ||
भौमे रवौ तथा दूरे । आपद्राहु शनैश्चरे || २ ||

अर्थः-बुध अने चंद्र होय तो अनेरे समुद्रमां प्रयाण थाय, गुरु अने शुक्र समीप होय तो मार्गमां प्रयाण थाय, मगळ अने सूर्य होय तो दूर देशमां गमन थाय, अने राहु तथा शनि होय तो आपदा प्राप्त थाय. ||२||

आदित्ये दृष्टि दोप स्यात् । सौमे शरीरसंभवः ||
भौमेच डाकिनीदोषः । गोत्रदेव्याबुधेपुनः || ३ ||

अर्थः-पुनः सूर्य होयतो द्रष्टि दोष थाय, चंद्रहोय तो शरीरसंबंधि दोष प्राप्त थाय, मंगल होयतो डाकिनी दोषथाय, अने बुध होयतो गोत्र देवीनो दोष प्राप्त थाय || ३ ||

गुरोचक्षेत्रपालस्य । शुक्रेचजलमातरः ||
शनैश्चरे भूतदोषः । पितृदोषश्चराहुजः || ४ ||

अर्थः-गुरु होयतो क्षेत्रपालनो दोष प्राप्त थाय, शुक्र होय तो जलदेवीनो दोष गणाय, शनिहोयतो भूतदोष, अने राहुथी पितृदोष प्राप्त थाय छे || ४ ||

|| ६ [illegible] रेशकुनम् ||

२०

१७	१२	११
१४	१०	१६
१५ १९	१८	१३

ब्राह्मणे उत्तम

२०

१५ १९	१४	१७
१८	१०	१२
१३	१६	११

क्षत्रिये उत्तम

२०

१३	१८	१५ १९
१६	१०	१४
११	१२	१७

वैश्ये उत्तम

२०

११	१६	१३
१२	१	१८
१७	१४	१५ १९

शुद्रे उत्तम

२०

११	१२	१७
१६	१०	१४
१३	१८	१५ १९

ब्राह्मणे मध्यम

२०

१३	१६	११
१८	१०	१२
१५ १९	१४	१७

क्षत्रिये मध्यम

२०

१५ १८	१८	१३
१४	१०	१६
१७	१२	११

वैश्ये मध्यम

२०

१७	१४	१५ १९
१२	१०	१८
११	१६	१३

शुद्रे मध्यम

अथकेचिदिदं यंत्र । विंशतेर्गतिभेदतः ॥
आहुः श्रीबाहुवल्याद्या-मुनयोनयकोविदा ॥ १ ॥

अर्थ'--हवे नय ना ज्ञानीओ ओवा बाहुबली आदि केटलाक मुनीओ आ विंशति यंत्रने गतिभेदथी (बीजी कोई जूदीज गणत्रीथी) कहे छे ॥१॥

युक्त तदुक्तमास्थाप्य । तदत्रैवप्रपच्यते ॥
यत स्यात्सुदशालक्ष्मी-र्जैनानामविनश्वरा ॥ २ ॥

अर्थः–ते पण तेमनुं कहेवुं युक्त छे, माटे तेमना कहेवा प्रमाणे ते गतिभेदथी पण विंशति यन्त्रने हुं विस्तारपूर्वक कहुं छुं के जेथी साम्यग्-दृष्टी अेवा जैनोने अविनश्वर अेवी मोक्ष लक्ष्मी प्राप्त थाय छे. ॥ २ ॥

वांछात्रिभक्त फलपचम् ५ वन्हि ३ षट्क ६–
आद्या १ ष्ट ८ कोशगतिरत्रसुधांशुवृध्या ॥
रूपोनितंगुण ३ फल मुनि ७ वेद ४ नद ९–
नेत्रे २ पुतह्लिखितततो नवकोष्टयंत्रम् ॥ ३ ॥

अर्थः–इष्ट राशिने त्रणो भागतां जे जवाब आवे ते अंकने पंचम अेटले पंचमा गृहमा [मध्यगृहमां] स्थापवो, अने त्यारबाद त्रीजा छट्टा पहेला अने आठमा गृहमा अनुक्रमे अेकेक वृद्धिथी अंक स्थापतां जवुं, अने अने सातमा चोथा नवमा अने बीजा अे चार गृहोमां अनुक्रमे [मध्य-स्थापित अंकथी] अेकेक न्यून करवाथी जे त्रण जवाब अंकथी आवे ते अनुक्रमे स्थापवा अने चोथो जवाब अंकथी न आवे तो ० शून्य स्थापवो अे प्रमाणे नव कोठानो यत्र लखवो ॥ ३ ॥

षोडशादिके विशेष

परन्तु १६ आदिना यंत्रमां जे विशेषता छे ते दर्शावाय छे —

इष्टराशेस्तृतीयोंशः । पंचोनः ५ स्याद्वितीयके ॥
रूपा १ धिकोऽश्वे ७ षष्टे ६ च । क्रमात्तादेकवर्धनम् ॥ ४ ॥

अर्थः–इष्ट राशिना त्रीजा भागमांथी पाच बाद करता जे आवे ते बीजा कोठामां स्थापवो त्यारबाद सातमा कोठामां [बीजा कोठाना अंकथी] १ अधिक स्थापवो, तेमज छट्टा कोठामां पण अनुक्रमे प्राप्त थयेला अंकथी [सातमा कोठाना अंकथी] १ अधिक अंक स्थापवो ॥ ४ ॥

त्रिभागेचैकवृद्धोस्या–द्वयेऽधिके त्रयाधिकः ॥
क्रमान्मध्येतथेशाने । कौबेर्यांसद्वयाधिकः ॥ ५ ॥

अर्थ'-ओक वृद्धिवाळो त्रिभाग होय अथवा तो बे वृद्धिवाळो त्रिभाग होय तो ते अनुक्रमथी मध्यमा तथा इशान कोणमां बे अधिक सहित अंक स्थापवो ॥ ५ ॥

> क्रमेणग्नौचवारुण्या–मकवृद्धिर्विधीयते ॥
> एवयथेष्टयत्राणि । जायंतेनवकोशके ॥ ६ ॥

अर्थः–त्यारबाद अनुक्रमे अग्निकोणमा अने पश्चिम दिशामां अंकवृद्धि करवी, ओ प्रमाणे नव कोठाओमा इष्टराशिवाळो कोइपण यत्र बने छे ॥६॥

> अत्राप्येकाधिकोमत्वे । स्वत्वात्पंचपडकयोः ॥
> समाधानं नशंकात्र । सारूप्याद्यावनेमते ॥ ७ ॥

अर्थ –अहि पण ओक अधिक अथवा ओक न्यून अकथी यंत्र पेसतो होय तो पाच अने छ ना अकमा सरखापणु गणीने समाधान करवु [ओटले गणित बराबर मेळववु] अने ओ बाबतमा शका न करवी, कारणके यवनोना मतमा [पण] पाच अने छ नु सरखापणु स्पष्ट रीते करेलुज छे ॥ ७ ॥

७	०	५
२	४	६
३	८	१

१२

८	०	५
२	४	७
३	९	१

१३

८	०	६
२	५	७
४	९	१

१४

६	०	९
८	५	२
१	९	४

१

९	०	७
३	५	८
४	११	१

१६

६	९	९
८	१	३
२	१०	,४,

१६

७	१	९
८	६	३
२	१०	५

१७

७	१	१०
९	६	३
२	११	५

१८

८	१	१०
९	७	३
२	११	५

१९

७	१	११
१०	६	३
२	१२	५

१९

११	१	८
३	७	१०
५	१२	७

२०

८	१	११
१०	७	३
२	१२	५

२०

१०	३	१३
१२	९	५
४	१४	८

२६

१२	५	१५
१४	११	७
६	१६	१०

३२

१२	६	१५
१४	११	८
७	१६	१०

३३

१३	६	१५
१४	१२	८
७	१६	११

३४

१२	६	१६
१५	११	८
७	१७	१०

३४

१३	६	१६
१५	१२	८
७	१७	११

३५

१४	१९	१२
१३	१५	१७
१८	११	१६

४५

१८	११	२१
२०	१७	१३
१२	२२	१६

२३	१६	२१
१८	२०	२२
१९	२४	१७

६०

अथाष्टे ८ दु १ षड् ६ षन्हि ३ वाणा ५ द्रि ७ वार्धि ४–
ग्रह ९ द्वी २ तिरीतिर्विंशामुत्तमासौ ॥
तयास्थाप्यते विंशतेर्यंत्रमत्र ।
यथादेविपद्मावती संस्तवादौ ॥ १ ॥

अर्थः–हवे आठमु पहेलु छटु त्रीजु पाचमु सातमु चोथु नवमु अने बीजु अे अनुक्रमथी नव गृहमा [कोठाओमा] अंकस्थापना करवाथी अे विंशति यन्त्र वैश्योने माटे अति उत्तम कह्यो छे, अने ते जेवी रीते पद्मावती देवीना स्तोत्रादिकमा विंशतिनो यंत्र [वैश्योमाटे] दर्शाव्यो छे तेवी रीते अहिं पण ते यन्त्र स्थापवो ॥ १ ॥ ते आ प्रमाणे—

[1]

२	९	४
७	५	३
६	१	८

१५

३	११	५
९	७	४
८	२	१०

२०

वारुणी ८ श १ यमा ६ ग्न्या ३ शा–
मध्य ५ वायु ७ त्तरा ४ दिशि ॥
पलाद् ९ शक्र दिक्कोणेः ।
स्यात्पंचदशयंत्रकं ॥ २ ॥

१ अे कोठाओमां अनुक्रमे १-२-३-४ ५-६-७ ८ ९ अंको स्थापन करवाथी १५ नो यन्त्र बने छे, अने २ ३ ४-६-७ ८ ९-१०-११ स्थापवाथी २० नो यंत्र बने छे.

२ अे पदरना यन्त्रमां विचारीअे तो श्लोकमां जे गृहोनो क्रम ८ १-६-३-५-७-४ ९-२ कोठाओना नंबर प्रमाणेनाज अंक पश्चानुपूर्वीअे उलटा क्रमे आवेला छे

अर्थः–अहिं आठमा पहेला छट्टा त्रीजा पांचमा सातमा चोथा नवमा अने बीजा ए गृहोमां अनुक्रमे [१-२-३-४ ५-६-७ ८-९] अंको स्थापवाथी १५ ना अंकवाळो यंत्र बने छे ॥ २ ॥

यंत्रे पंचदशानांत न्मध्ये पंचकलेखनं ॥
अष्टादशानांयंत्रांतः । ततः षट्कः प्रतिष्ठित ॥ ३ ॥

अर्थः–ते कारणथी १५ ना यत्रमां मध्यकोठामा ५ नो अंक लखवो, अने तेथी [अथवा त्यारबाद] १८ ना यत्रमां मध्यकोठामां ६ नो अंक लखाय छे ॥ ३ ॥

एक विंशतियंत्रस्य । मध्यसप्तक एवतत् ॥
अंकास्तत्रैकादशात । द्वादशान्तः मृषाततः ॥ ४ ॥

अर्थः–अने ते कारणथी २१ ना यंत्रमां मध्यकोठामां ७ नोज अक स्थपाय छे, अने त्यारबाद अंकस्थापना [त्रणथी] ११ ना अक सुधीनीज स्थपाय छे, परन्तु जेओ १२ ना अंक सुधीनी स्थापना कहेछे ते मृषा-मिथ्या छे ॥४॥

विंशतेर्नत्रिभिर्भाग-स्तेनाष्टदशयत्रवत् ॥
सिद्धिकोशेद्विकंदत्वा-यंत्रमार्गसमाश्रयेत् ॥ ५ ॥

अर्थः–वळी २० ना अकनो त्रीजो भाग थतो नथी [कारणके शेष वधे छे,] माटे १८ ना यंत्रवत् आठमा कोठामा २ नो अक स्थापीने त्यारबाद यत्रना मार्गनो (यंत्र गतिनो) आश्रय करी अक स्थापता जवुं ॥ ५ ॥

चंद्रकोशेत्रिकं षष्टे । कोशेपि चतुरोधरेत् ॥
षट् पंचवाग्निकोशस्था । ऐक्यान्मध्येतुसप्तकः ॥ ६ ॥

अर्थ–[ते यत्र मार्गनो [illegible] आ प्रमाणे–] पहेला [illegible]
स्थापवा, छट्टा [illegible] वा, अग्निकोणमां रहेला

अथवा ६ अे घन्ने अक सदृश गणीने स्थापवा, अने मध्य कोठामा ७ स्थापवा ॥ ६ ॥

वायावष्टनवोदीच्य । निर्योदशाद्वितीयके ॥
कोशेएकादशस्थाप्या । एतद्यत्राहि विंशते ॥ ७ ॥

अर्थ –वायुकोणमा ८, उत्तरमा ९, नरमा कोठामा १०, अने बीजा कोठामा ११ स्थापवा, अे प्रमाणे विंशनि यत्र [वैश्योमाटे] थयो ॥ ७ ॥

यद्येक विंशयत्रेपि । आदिरेकादशातक ॥
अकन्यासो विंशतेस्ततु । यत्रेके द्वादशातता ॥ ८ ॥

अर्थ –जो २१ यत्रमा पण त्रणथी अगिआर सुधीनाज नव अंक स्थापना आवेछे, ते तो विंशति यत्रमा तो बारसुधीना अंक आवेज केवी रीते ? [कारणके २१ थी तो २० नो यत्र १ न्यून अंकवाळो छे] ॥ ८ ॥

तत· पचदशादियन्त्राणि

४	१०	१
२	५	८
९	ॐ	६

१५

२	९	४
७	५	३
६	१	८

१५

२	१०	४
८	५ ६	३
६	१	९

१६

२	१०	५
८	६ ५	३
७	१	९

१७

३	१०	५
८	६	४
७	२	९

१८

३	११	५
९	६	४
७ ८	२	१०

१९

३	११	५
९	७ *	४
८	२	१०

२० वश्योत्तमा

३	८	९
६	१०	४
११	२	७

ब्राह्मणोत्तम २०

१७	२	१
४	१०	६
९	८	१३

२०

* ३-११-५ इत्यादि विंशति यन्त्र वैश्यमा उत्तम छे

१	६	१३
२	१०	८
१७	४	९

१०

शुद्रोत्तम

४	११	६
९	७	५
८	३	१०

२१

१८ १३	१८	१९
१६	१०	१४
११	१२	१७

४०

आ पद्मावती यन्त्र छे

सप्तको विंशतेयन्त्रे । मध्यभागे प्रतिष्टित ॥
तत्षोडशनवस्थाने । दशस्थानेश्वयुग् ७ दश ॥ ९ ॥

एकादशककोशस्था । अष्टादशततोधृताः ॥
सप्तवृध्यैतिकोशानां । त्रययन्त्रेऽत्र सूत्रितम् ॥ १० ॥

अर्थः-विंशति यंत्रमां ७ नो अंक मध्यभागमा रहेलो छे, तेनी नवना स्थाने १६ अने दशना स्थाने १७, अने कोठामा अगिआर आवेला होय तो तेने स्थाने १८ स्थापवा, अे प्रमाणे आ यन्त्रमां त्रण कोठा सात सातनी वृध्धिअे स्थापवा कह्या छे ॥ ९ ॥ १० ॥

१ पूर्वे कहेवायला विंशति यन्त्रमां जे ७ आदि अंको स्थाप्या छे, ते अंकोने स्थाने अेटले ते अंकोने बदले स्थापवा, परंतु " ते अंक ते कोठामा वे कोठामा " जेम नहीं.

सप्तार्धेनत्रिकेणापि । योजने स्थानकत्रयी ॥
सप्तस्थानेदशन्यासा-देकादशतदष्टके ॥ ११ ॥

अर्थः–तथा सातनुं अर्ध त्रण [साडा त्रण तो पण पूर्ण अंकनी आपेक्षाए त्रण] छे, ते त्रणनी योजना पण त्रण स्थानोमा—त्रण कोठामां करवी. जेथी सातना स्थाने १० स्थापवा, अने आठना स्थाने ११ स्थापवा ॥११॥

बाणषट्कपदेन्यस्ते । नवकेशेषमप्यत. ॥
द्वित्रिचारुचतुष्कना । स्थानेप्यकास्तएवहि ॥ १२ ॥

अर्थ –तथा पाच अथवा छ ना स्थाने ९ स्थापवा, अने बे त्रण तथा मनोहर अक जे चार ए त्रण अक ना स्थाने तो एना एज अक रहेवा देवा ॥ १२ ॥

सर्वत्रप्येककोधार्यः । परमेश्वरवाचकः ॥
इतिपद्मावती यत्रे । नवकोशाइमेऽभवन् ॥ १३ ॥

अर्थ.–पछी ए सर्व कोठाओमां परमेश्वरना अर्थवाळो १ नो अक स्थापन करवो, ए प्रमाणे पद्मावती यत्रमा [पद्मावती देवीना बीसवा चालीसना यंत्रमा] नव कोठा थया ॥ १३ ॥

मध्यात्ससाष्टचद्रागे-ष्वेकाधिक्यंचतुष्टये ॥
कोणा४क९भुजररामे ३ पु । पुनरेकाधिकःक्रम ॥ १४ ॥

---

२ ए पद्मावती यत्रनी स्थापना आ प्रमाण

१३	१८	११
१६	१०	१४
११	१२	१७

अर्थः-[ओ उपर करेली अंकस्थापना आ प्रमाणे-] सातमो आठमो पहेलो अने छट्ठो ओ क्रमवाळा चार कोठाआमा मध्य अंकथी अनुक्रमे अेकेकनी वृध्धिअे अक स्थापना करवी (१०-११-१२-१३ अको स्थापवा,) अने त्यारबाद चोथा नवमा बीजा अने त्रीजा ओ चार कोठाओमां पण त्यांथी आगळ [१३ थी आगळ] अेकेक अधिक वृध्धिअे अको स्थापवा [अर्थात् १४-१५-१६-१७ अे अंको स्थापवा. ॥ १४ ॥

आद्यात्रयेऽधिकेतुर्यः । षष्टात्रयेधिकोनिधिः ॥
मध्यात्रयेधिकेप्याद्य. । इत्थंकोशात्रयाधिकाः ॥ १५ ॥

अर्थः-अे प्रमाणे अंक स्थापना करवाथी पहेला कोठामां जे अंक आव्यो छे, तेथी त्रण अधिक वृध्धिवाळो अक चोथा कोठामा आवे छे, अने छठ्ठा कोठाना अंकथी त्रण अधिक नवमा कोठानो अक आवे छे, मध्य कोठाना अंकथी त्रण अधिक पहेला कोठानो अंक आवे छे, अे प्रमाणे त्रण कोठा त्रण त्रण अधिक अकवाळा छे ॥ १५ ॥

आद्यात्पंचाधिकाःद्विष्टा-मुने ७ पंचाधिकाःकृते ४ ॥
सिद्धे ८ पंचाधिकानदे ९ इतिपंचाधिकात्रयी ॥ १६ ॥

अर्थः-तथा पहेला कोठाना अंकथी पांच अधिक अंक बीजा कोठामां रह्यो छे, अने सातमा कोठाना अंकथी पांच अधिक अंक चोथा कोठामा आवे छे, अने आठमांथी पाच अधिक अक नवमा कोठामा आवे छे, अे प्रमाणे त्रण कोठाअे पांच पांच अधिक अंकवाळा छे ॥ १६ ॥

भूविश्वाकाआद्यकोशे । तदधःक्षणचंद्रभाक् ॥
तदधश्चंद्रपृथिवी-त्यंके कोशत्रयीभृता ॥ १७ ॥

अर्थः-त्यां पहेला कोठामां भू=१ अने विश्व=३ अेटले १३ नो अक स्थपाय

१ पचदशयत्रात् २० यत्रे पचाधिकत्वात्.

* आद्यत् अेटले पदरना यत्रथी-इतिटिप्पनिकाया.

छे, अने तेनी नीचे क्षण=६ अने चद्र=१ अेटले १६ नो स्थपाय छे, तेनी नीचे चद्र=१ पृथ्वी=१ अेटले ११ नो अंक स्थपाय छे, अे प्रमाणे त्रण जातना अंक स्थानो वडे [१३-१६-१७ वडे] त्रण कोठा (पहेली अघ पक्तिअे त्रण कोठा) भरायला—स्थपायला छे ॥ १७ ॥

युग्मैकधरणसिद्धौ । व्यस्ताःसख्याक्रमात्परे ॥
एकादशेभ्यःपरतो । यथायुग्मैकमाहितम् ॥ १८ ॥

अर्थः-तथा [सिधमा=] आठमा कोठामा युग्मैक अेटले १२ नो अक स्थापवो, त्यारबाद आगळ आगळना [वामावर्तना] क्रमथी अेकेक वृद्धिवाळा अको स्थापवा जेम ११ पछी अेक अधिक १२ नो अक स्थाप्यो [सबध अग्रगाथामा] ॥ १८ ॥

तथा षोडशतोवृद्धौ । निधौसप्तदशस्थिताः ॥
पूर्वेषोडशतोभूमी-विश्वाकस्याचदुत्तराः ॥ १९ ॥

अर्थ.-तेम १६ थी अेक अधिक १७ नो अक निधिमा अेटले नवमा कोठामा स्थापवो तथा १६ थी पूर्वे १३ नो अक छे, तेथी ते तेरना अक थी अेक अधिक अक [सबध अग्र गाथामा] ॥ १९ ॥

चद्राभोनिधय १४पष्ट-स्थानस्था २ वे निधे ९ पदात् ॥
पूर्वं पूर्वांकवृद्धत्वा-दधोपिचद्रवार्धयः ॥ २० ॥

अर्थ -चद्राभोनिधि=१४ थाय ते नवमा कोठाथी उपरना छट्टा कोठामा स्थापवो वळी पूर्व पूर्वना [१६ आदि] अकोथी अेकेक अधिक वृद्धिवाळा [१७ आदि] अको होवाथी जेम छट्टा कोठामा चद्रवाधि अेटले १४ नो अक आव्यो छे, तेम छट्टाथी नीचेना नवमा कोठामा पण १७ नो अक छे ते पण चद्रवर्धिसज्ञा वाळोज आवेलो छे ॥ २० ॥ [तेनु कारण कहेवाय छे]

तत्राभोनिधिशब्देन । सप्तसख्याक्रमान्मताः ॥
निचग्रतियत प्राच्या श्चतुरः सप्तवाबुधीन् ॥ २१ ॥

अर्थः-अंभोनिधि अथवा वार्धि आदि जे समुद्रवाचक शद्बो छे, ते समुद्र वाचक शब्दोनी संज्ञा वडे सातनो अक पण क्रमथी कहेला छे, जे कारणथी प्राचीन विद्वानो समुद्र शब्दथी ४ अथवा७नो अक कहे छे. ॥२१॥

सूत्रमेक यथाकार्य-द्वये प्राहुः प्रसाधनम् ॥
तथांभोनिधिशद्बोय । कोशाद्वितयसाधकः ॥ २२ ॥

अर्थः-जेम अेकज सूत्र बे कार्यमां साधन रूप कह्युं छे, तेम आ समुद्र-वाचक शब्द पण अहिं बे कोठाओना बे अंकनो १४-१७ नो साधक छे. ॥ २२ ॥

षष्टात्खेवाणवृध्या । स्यादंकं एकोनविंशते ॥
चतुर्दशाकेवाणोने । यद्वानवकलेखनम् ॥ २३ ॥

अर्थः-छट्ठा कोठाथी उपर [छट्ठा कोठाना १४ थी] पांच अधिक अंकवाळो १९ नो अक आवे छे, अथवा अेज १४ मांथी पाच * न्यून करतां जे ९ नो अक आवे छे छट्ठा कोठा उपर त्रीजा कोठामा लखवो. ॥ २३ ॥

चतुर्दशांकदग्रेपि । यद्वापंचदशांककः ॥
प्राप्तस्तमात् षडूनत्वे । लेख्याअग्नि पदेश्नव ॥ २४ ॥

अर्थः-अथवा चौदनी आगळ पंदरनो अंक आवे छे, ते पंदरमांथी छ बाद करतां [कोठानो छ नो अंक बाद करतां] ९ प्राप्त थाय छे, माटे पण पण त्रीजा कोठामां ९ अक लखवो ॥ २४ ॥

षडूनत्वेमनो१४रंके । वसव ८ स्तिथिसंमिते १५ ॥
पंचोनत्वेदिशोमध्ये१० । षड्वसूनदिक्चसूत्रितं ॥ २५ ॥

२ वाणोनत्वे पट्सु एक शेषात् अग्रे नवाकात्

* बाणोनत्वे पट्सु एक शपात् अग्रे नवाकान्=कोठानो ६ नो अक तेमाथी ५ बाद करतां १ आवे तेनी अंग्रे, छट्ठा कोठामा रहेला १४ अकमाथी ५ बाद करता ९ आवे ते स्थापता १९ नो अक त्रीजी कोठामा स्थपाय.—इति टिप्पनिका भावार्थ.

अर्थः–मनु=१४ ना अकमाथी [छट्टा कोठाना १८ माथी] ६ न्यून करता वसु=८ आवे, अने [१४ ने बदले अग्राक] १५ माथी पाच बाद करतां दिशी=१० आवे, ते मध्यमा स्थापवो अे प्रमाणे ६-८-१० अे त्रण अकनी सूत्रेणा रचना दर्शावी छे ॥ २५ ॥

यद्वाद्यतुर्यकोशस्थ-त्रिकपण्मेलनान्नव ॥
सिध्य८कर्ध्कोशयोर्द्वेर२श्व७-योगादपियथानव ॥ २६ ॥

अर्थ'–अथवा पहेला अने चोथा कोठामा रहेला ३ अने ६ ने मेळवता ९ थाय, अथवा आठमा अने नवमा कोठामाना २ तथा ७ अे [१२ माना २ तथा १७ माना ७ अे बे ने मेळवता पण जेम ९ थाय छे ॥ २६ ॥

तथापष्टपदस्थायि । चतुःकेणक्रमागत ॥
पचकोयोज्यतेजात । निश्चयान्नवधारणम् ॥ २७ ॥

अर्थः–अथवा छट्टा कोठामा रहेला [१४ माना] ४ अकनी पछी अनुक्रमे आवतो [अकगणितना अनुक्रममा आवतो] ५ नो अक, ते बे ने मेळवता पण निश्चयथी ९ नु अकस्थापन त्रीजा कोठामा थाय छे ॥ २७ ॥

नवकेपिचपचारया । तस्यस्थानेतदासनात् ॥
यद्वामध्यस्थपचाके । पूर्णांकमेलनान्नव ॥ २८ ॥

अर्थः–[अे चार अने पाचनो अक मेळववानु कारण के] नव कमा पण पाचनु नाम छे, (अर्थात् 'नव' कहेवाथी पाच नो अर्थ थाय छे,) कारण के पाचना स्थाने नवनो अक पण [विंशति यत्रमां जेम १५ या १६ या १९ अेकज कोठामा आवे छे तेम] आवे छे माटे अथवा नवनी

१ पद्मावती स्तोत्रना आ प्रथमांज दर्शवेला पहेला मूळ काव्यमां बीजा चरणामा छे.

संख्यामा पांचनो अंक सर्वथी मध्यमां आव्यो छे. माटे ते पांचना अंकमां पूर्वनो चारनो अक मेळवता पण ९ थाय छे ॥ २८ ॥

पट्क पंचकयोरत-र्भावात्सर्वांकसंग्रहः ॥
व्याख्यायांनवतत्साक्षात् । वाणषण्नवसूत्रतः ॥ २९ ॥

अर्थः-अथवा सर्व अंकनो अेटले नव अंकनो अंतर्भाव पाच अने छ अे बे अंकमां छे, ते कारणथी व्याख्यामां [आ विंशति यत्रनी वृत्तिमां] जे नवनो अंक छे ते ने साक्षात् ५-६-९ अे त्रणे अकनी सूत्रणाथी [त्रणे अंक रचनामां सदृशपणाथी] कह्यो छे ॥ २९ ॥

वसवोऽष्टौ भुजस्थाने । तेऽष्टदशसचद्रतः ॥
चद्रामोनिधिसूत्रस्य । चंद्र शद्वस्यसंगह्रात् ॥ ३० ॥

अर्थः-त्यां वसु अेटले ८ नो अंक ते [भुजस्थाने=] बीजा कोठामां लखवो अने तेने चंद्र=१ सहित करता १८ नो अंक थाय, कारणके चद्रामोनिधि अे सूत्रथी अहिं चंद्र=१ नुं ग्रहण [अनुवृत्तिथी] ग्रहण करवानु छे ॥३०॥

वाणवृद्धा जवेत्यर्थात् । षड्वृद्धा सवोथवा ॥
चतुर्दशपदे पष्टे । तेसप्तदशतोहिखे ॥ ३१ ॥

अर्थ-पाचनी वृद्धिथी [आठमा कोठानो १२ मांनो २ नो अंक जेम] जव=७ थाय छे, अने छ नी वृद्धिथी ८ थाय छें, तेथी छट्टा कोठामा १४ ते सत्तरनी उपर रहेला छे (६+८=१४ तथा ९+८=१७ अे प्रमाणे बने अंक १४ अने १७ ते पोताना कोठाथी आठ आठ अधिक छे) ॥ ३१ ॥

१ संख्यायां पंचको मध्यस्थ तस्मिन सर्वांका मिळेति सर्वे मुखस्थानमवर्णमित्यादिवत्= जेम सर्व अक्षरोमा अ वर्ण मुख्य छे, कारणके तेमां सर्वे अक्षरोनो समावेश थाय छे, तेम सर्वे (नव) अंकोमा ५ नो अंक मध्यस्थ छे, तेमा सर्वे अंक मळे छे
२ पचकात् पूर्वांकः ४ तेन मेटने नव=स्पष्टार्थः—

वाण५पद्‌ योगतेथेका-दशतत्समुखेनव ॥
मध्य१०नवधिकं चाग्नौ । प्राच्यावस्वाधिकततः ॥ ३२ ॥

अर्थः-तथा पाच अने छ मळीने ११ नो अंक जेम (१६ माना ६ वा ५ नी नीचे) सन्मुख रह्यो छे, तेम [१४ ना] ४ अने ५ मळीने बनेलो ९ नो अक पण १४ नी उपर १९ना रूपमा सन्मुख रह्यो छे, अने विदिशिमाथी ११ नी पण सन्मुख रह्यो छे ॥ तथा मध्यगत १० थी ९ अधिक अेवो १९ नो अक अग्निकोणमा आव्यो छे, त्यारे अेज १० थी ८ अधिक १८ नो अक पूर्व दिशामा आव्यो छे ते योग्यज छे ॥ ३२ ॥

पाठातरे वाणरूप । वसुदिग्दिगीतीरणात् ॥
स्यु'पचदशतद्वाण-रूपाभ्यामिह रामगा ॥ ३३ ॥

अर्थ -पाठान्तरथी (अन्य ग्रंथना पाठमा) वाण रूपा वसु दिग् दिग् अे प्रमाणे करेवाथी ते वाण=५ रूप=१ मळीने १५ थाय छे ते त्रीजा कोठामाँ स्थपाय छे ॥ ३३ ॥ (अहिं १९ वाळा त्रीजा कोठामाज १५-१९ अे बे लग्गाय छे)

वसुयुक्तादिशस्तेष्टा-दशद्वितीय कोशगाः ॥
दिशोमध्यगताएन । सिद्ध विंशतियत्रक ॥ ३४ ॥

अर्थ'-अने वसु ८ सहित दिशा=१० अेटले १८ नो अक बीजा कोठामा स्थपाय छे अने दिशा=१० नो अक तो मध्यमा होय छेज, अे रीते पण विंशतियत्र सिद्ध थाय छे ॥ ३४ ॥

खेचराभास्कराद्याये । ईशादिषुदिशास्वमी ॥
भूविश्वाद्यास्तथैवाका-न्यसनीयाययथागमम् ॥ ३५ ॥

अर्थ -तथा इशान कोण विगेरे दिशाओमा अनुक्रमे सूर्य विगेरे ग्रहो स्थापवा, अने अनुक्रमे [भू विश्व=] १३ विगेरे अको पण आगमने स्थापवा ॥ ३५ ॥

अत्रैवमका एकाद्या । यावदेकोनविंशातिः ॥
एक वेश्मानि सावर्ण्यात् । चितायां पंचषट्कयो ॥ ३६ ॥

अर्थः-जे प्रमाणे अे विंशति यंत्रमां १ थी मांडीने १९ सुधीना अंक यथा योग्य [१०-११-१२ इत्यादि रीते आवे, परन्तु १-२-३ इत्यादि रीते नहिं अे रीते] आवे कारणके अेक कोठामां ५ अने ६ नो अंक सदृश होवाथी अेक अेकठा आवे छे (अर्थात् १५-१६ अे बे अंक अेकज कोठामां आवे छे) ॥ ३६ ॥

पुनःपुनश्चंद्रपदा-दमृतांशो-प्रधानता ॥
पद्मावत्या-साधनेषु । चक्रेश्वर्यारवेरिव ॥ ३७ ॥

अर्थः-पुनः पुनः चंद्र=१ नो शब्द [पद्मावती काव्यमां] आववाथी पद्मावतीना विंशति यन्त्रमा चन्द्रनी प्रधानता छे, जेम चक्रेश्वरी देवीना यन्त्रमा सूर्यनी प्रधानता छे तेनी पेठे. ॥ ३७ ॥

तत पंचदशांकस्यां-तर्भावः क्रियतेबुधैः ॥
कलावाचि षोडशांके । सर्वत्र पंचकाश्रयात् ॥ ३८ ॥

अर्थः-ते कारणथी विद्वाना कळावाचक ('कला' शब्दथी) १६ ना अंकमां सर्वत्र ५ ना अकनो आश्रय होवाथी १५ ना अंकनो अंतर्भाव करे छे [अर्थात् १६ अने १५ अे बे चद्रनी कळा अने तिथिवाचक होवाथी सदृश गणीने गणितमा तुल्य गणे छे] ॥ ३८ ॥

यथैकादशत पंच-धिकत्वे षोडशोपरि ॥
चतुर्दशोपरितथा । शुक्तैवैकोन विंशतिः ॥ ३९ ॥

अर्थः-जेम सातमा कोठाना* ११ ना अंकथी चोथा कोठानो १६ नो अक

❀ एकादशादिषु १-२-३-४-१ पच षट्कयोरेकत्वात् ७-८-९-१० इति तत ११-१२-१३-१४-१५-१६-१७-१८-१९ [illegible] ११ थी १९ सुधीनानव अंक वे १ महित सवे अक गण.प.

पांच अधिक छे, अने उपर आवेलो छे, तेम त्रीजा कोठानो १९ नो अकपण छट्ठा कोठाना १४ ना अकथी पाच अधिक होई ने उपर आवो छे ते युक्तज छे ॥ ३९ ॥

यत्रेस्याद्विंशतेः सैके । चत्वारिंशत्तु सग्रहात् ॥
एकोनविंशतोतत्र । केवल नवक ग्रहः ॥ ४० ॥

अर्थः–वळी सर्व कोठामा १ सहित होवाथी जे विंशति यत्रमां ४० ने सग्रह [सर्व बाजुथी ४० नी गणत्री] थवाथी जेज विंशति यत्र ४० नो यंत्रपण गणाय परतु तफावत जेज के जेमा १९ ना स्थाने केवळ ९ नो अंक गणत्रीमा लेवो परतु १ नो अक न गणवो ॥ ४० ॥

एकोनविंशति.पूर्णो । सख्येयाकोण योजने ॥
नान्यथासगतियत्रे । वैषम्यात्त्रिविभाजने ॥ ४१ ॥

अर्थ–परन्तु खूणाथी खूणानी [विदिशिनी] पक्ति गणता जे १९ नो अक सपूर्ण गणवो नहितर त्रण विभागमा विषमता आववाथी यत्रने विषे यत्र पद्धति—गणितरीति मळती आवे नहिं ॥ ४१ ॥

सैक त्रि२वसु८खेटा९कै–श्चत्वारिंशच्च विंशतेः ॥
यत्रे तदस्य द्विगुण । फलदानस्य सूचनम् ॥ ४२ ॥

अर्थ –१ ना अक सहित ३, जेटले १३ एक सहित वसु=८ जेटले १८ अने अंक सहित खेट ९=जेटले १९ माथी ९ जे त्रण मळीने जे विंशति यत्रमा ४० थाय छे. तेथी जे यत्र द्विगुण फळ आपे जेवी सूचना चाली छे कारणके ४० ते वीसथी द्विगुण छे, माटे फळ द्विगुण छे ॥ ४२ ॥

१ त्रणे मळीने ४० नी गणत्री न थवाथी अहिं त्रण विभागनी विषमता जाणवी.

अत्रकेचिदूचुर्न भुविश्वेत्यादिकाव्ये यंत्रन्यासः किन्तु भु इत्येकाक्षरोमंत्रः विश्वेति त्रयोदशाक्षरः ईक्षण इति त्र्यक्षर इत्यादि अक्षरगणनया मंत्र भेदान् व्याख्याति तदल्पं यत्राधिकारात् तथा १-१३-२-॥११-१२-१- इति पुनरेकाक्षर मंत्र गणनापत्तेश्च यदि विश्व शब्देन त्र्यतदापि १-३-२ ११-१२-१ तथैव यदि संख्या शब्देन एक संख्या पदेन १९ तदा तावत्संख्याक्षर मंत्रस्य दोषः प्रतीतः एव पण् नव वसू नित्यत्र नवाक्षरे प्रोक्ते पुनः खेचर पदेन तदुक्तिर्ज्ञेया आशा पदेन दिक् पदे नच पौनरुक्त्य। 'तथा भू विश्व १३ ईक्षण चद्र १२ चंद्र पृथिवी ११ युग्मैक' २इत्यत्रापि तद् भावनीयमीति अत्रापि विंशति २० योजना तत्र प्रथम निरेकत्वे योजना ३-८-९ ॥ ६-१०-४ ॥ ११-२-७ ॥ ३-६-११ ॥ ८-१०-२ । ९ ४-७ । ३-१०-७ । ९-१०-१ । इत्यष्टधा योजना

अत्र एकादशस्थाने कोणगत्यां एक गणनं 'एक एकु एक' इति लोके एकेन गुणने तदेव इति शास्त्रे संख्याया अविवक्षातः अविवक्षापि एकस्य वस्तुस्वरूपात् स्वात्मलाभे परानपेक्षणात् 'लहु सखिज्ञ दुविय' इति सिद्धान्त वचनात् चैके

भू विश्वेत्यादि यंत्रे । विंशतिर्गति मेलने ॥
गतीनां विंशति ज्ञेया । गुरुणामुपदेशतः ॥ ४३ ॥

३-८९ । १-१८-१ । ३ एकोना अष्ट ७-१-९ यद्वा कोशद्वयेन विंशतिः १३-७ एवं २० ततः १-१९ एकोन करण ज्ञापक बाण् पण् नव सूत्र बाणोनाः षट् तदा एक एव । एव मेकाधिकत्वेपि सैक निरेक विधे ज्योतिःशास्त्रादौ प्रसिद्धेः नवस्थाने पचक भावने १३-१-१-५ । १-१८-१ । १-३-१-१५ अत्रांक व्यस्त करणे ज्ञापक 'बाणरूप वसुदिग् दिगितिपाठः अथ बाण पण् नव इति पाठात् पचक स्थाने षट् भावने १३-१-६ । १-३-१ ८-१-६ । ३-१-१६ एव मुपरितनं पंक्तौ विंशति योजना एकादशधा ऐन्द्रे तृतीये कोशे १७ रक्षायां १७ विद्यायें १९ अग्निकोणे लेखन १६-०-४ । ६-१०-४ । ६-०-१४ । इति मध्यपंक्तौ तिस्रो योजना ११-२-७ ।१-१२-७ । १-२-१७ । इत्यग्र पंक्तौ [illegible] योजना एवमायतरीत्या ९ योजना [illegible] माधिक तत्रांक [illegible] । ३-१६-१ । ३-६-११ । इति [illegible]

विंशतित्रय १८ ०-२ । ८-१०-२ । ८-०-१२ । इति मध्य पक्तौ विंशतित्रयं ९-४-७ एकाधिक ४ तदा ५ तदध. एकोन ७ तदा ६ एव ९-५-६ । ततः एकोन ४ तदा ३ एकाधिका' सप्त ७ तदा ८ एव ९-३-८ अथ नव ९ स्थाने पचभावने १७-४-१ । ५-१४ १ । १-१-१-१७ । अत्रैक कोष्याधिक १५ १९ इति द्वेधा एकस्मिन् कोशे स्थापनात् पचकस्थाने पर्क्षभावने १६-३-१ एकोन ६ तदा ५-१४-१ एकाधिकाः ६ तदा ७ पुन' एकाधिकथ ४ तदा ५ पुनः एकाधिकाः सप्त ७ तदा ८ एव ७ ० ८ । इति तृतीय पंक्तौ ऊर्ध्वत्वे विंशतित्रय ३ १०-७ । कोणे ९-१०-१ द्वितीय कोणे अत्रापि ११ स्थाने एकगणने समाधि' प्राग्वत् मूलमेक एव तत्र मध्यस्थ दशानुरोधा- देकादश भावात् एव ९ योजना आयतत्वे ९ योजना ऊर्ध्वत्वे गतिद्वय कोणयो. एव सर्वा विंशतियार विशतय अत्र १३-७ एव २० इय योजना अदोलन सिंहासन यत्रादिषु मध्य पक्तौ कोशद्वय मीलनात्तावदक साधनात् तदनुसारेण तथा १ ३-१-१५ इत्यादि योजना कोश चतुरक मीलनात् जायते सा कमलाकार विंशति यंत्र कोशचतुष्टय मेलनानुसारा द्वेधा शेषा योजना अपि सूत्रस्य गभीरार्थत्वात् यंत्रेषु गतीना वैचित्र्या- द्यावगम्या ' भू विश्व १३ क्षण चद्र १६ चद्र पृथिवी ११ युग्मे क १२ सख्याक्रमात् चन्द्राभोनिधि १७-१४ बाण् पण् नव १५-१६-१९ वसु न् ८ १८ दिक् १० गेचरादिषु ॥

अर्थ –अहिं केटलाक अेम कहे छे के—भू विश्व इत्यादि पदोवाळा प्रथम कहेवापला विंशति यत्र सबधी पद्मावती काव्यमा यन्त्रन्यास अेटले अक सूचना वा अकस्थापना कही नथी, परतु भू अे अेकाक्षरी मन्त्र छे, अने विश्व अे पदथी १३ अक्षरवाळो मन्त्र, अने इक्षण* अे पदथी बे अक्षरवाळो मत्र [ईक्षण अेटले नेत्र अर्थ होवाथी बे अक्षरवाळो मत्र] छे, इत्यादि रीते अक्षरोनी गणत्री वडे मत्रना भेदोनी व्याख्या करी छे, पण ते अहिं अल्प अेटले गौण छे, कारणके अहिं तो यत्रनो अधिकार चाले छे

* काव्यमा क्षण अेटले ६ ना अर्थ वाळो शब्द कह्यो छे. अने अहिं ईक्षण शब्द बेना अर्थवाळो कह्यो ते पद्यानो शब्द विश्व छे तेनो अन्ले विषे होय तो तेम थाय.

तथा १'-१३-२। ११-१२-१ अे प्रमाणे पुनः अेकाक्षर मन्त्र गणनानी प्राप्ति होवाथी जो विश्व शब्दथी ३ विचारीअे तो पण १-३-२। ११-१२-१ थाय अने ते प्रमाणे 'संख्या' अे शब्द वडे अेक शब्द सहित १९† थाय, त्यारे तो तेटली संख्यावाळा अक्षरोनो अेटले १९ अक्षरोनो मन्त्र [विंशति मंत्र] दोप वाळोज समजाय छे, अने अे प्रमाणे तो पण नव वसुनी=६-९-८ अे पदोमां नव अक्षर कह्या छे, अने पुनः खेचराशादिषु अे पदोमा खेचर अे पदवडे पण ९ अक्षर कह्या छे, तेथी द्विरुक्ति कथन दोष जाणवो, अने आशा अेटले १० तेमज दिक् अेटले पण १० अे पण द्विरुक्ति—पुनरुक्ति दोष प्राप्त थाय छे.

तथा भू विश्व=१३ ईक्षण चंद्र=१२ चंद्र पृथिवी=११ अने युग्मैक=१२ अे पदोथी अेमा पण विंशतिनी अेज भावना विचारवी (अेटले सदोप छे विचारवी) इति तर्क विचार समाप्तः

हवे द्विगुण गणत्रीवाळा विंशति यंत्रना गतिभेद कहेवाय छे.
अत्रापि विंशति २० योजना——तत्र प्रथमं निरेकत्वे योजना

अर्थः—अर्हिं [४० नी गणत्रीवाळा] विंशति यंत्रमां २० नी योजना आप्रमाणे—त्यां प्रथम १ ना अंक रहित ३ आदि अंकोथी २० नी गणत्री थाय छे ते आ प्रमाणे—

पहेली तीर्च्छी पंक्तिमां [१३-१८-१९ मां] ३-८-९ अेटले २० ॥
बीजी तीर्च्छी पंक्तिमां [१६-१०-१४ मां] ६-१०-४ अेटले २० ॥
त्रीजी तीर्च्छी पंक्तिमां [११-१२-१७ मां] ११-२-७ अेटले २० ॥

१ भू=१ विश्व=१३ इक्षण=२ चन्द्रचन्द्र=११ पृथ्वीयुग्म=१२ एक=१ [अथवा एक=१ अने संख्या=९=१९)

† एक=१ सख्या-९ अटले १९

४०	४०	४०	४०	४०
४०	१३	१८	१९ १५	४०
४०	१६	१०	१४	४०
	११	१२	१७	४०
४०	४०	४०	४०	

० इति द्विगुणांक विंशतियन्त्रे ४०

पुनः अे प्रमाणे अधःपंक्तिमां [अेटले ११-१६-११ इत्यादिरीते] ३-६-११ अेटले २०॥८-१०-२ अेटले २०॥९-४-७ अेटले २०॥ पुनः बेविदिशि पंक्तिओमा ३-१०७ अेटले २० ॥ ९ १०-१=२० ॥ अे प्रमाणे आठ प्रकारे अेकना अंक रहित * गणत्री करी

अहिं विदिशानी पंक्तिमां ११ ना स्थाने जे बे अेकडा छे तेनो गुणाकार करता ' अेक अेके एक ' अे प्रमाणे लोकमा अेक वडे [कोईपण रकमने] गुणवाथी जवाब तेनो तेज आवे छे, माटे शास्त्रमा १ ना अकने सख्यानी विवक्षा नथी अेटले १ ने सख्यामा गण्यो नथी, कारणके अेक छे ते पोते वस्तु स्वरूप अेटले स्वाभाविक छे, कारण के स्वात्मलाभमा (अेटले अेकना ज्ञानमा) परनी [बीजी] वस्तुनी अपेक्षा नथी होती ते कारणथी सिद्धान्तनु पण वचन छे के ' लहु सखिज्ज दुचिय ' लघु संख्यात [अेटले ओछामा ओछी सख्या] निश्चय बेज छे

॥ भू विश्वादि विंशति यत्रनी २० गति. ॥

अर्थः-हवे भू विश्व इत्यादि पदोवाळा पद्मावती यत्रनी वीशनी गणत्री २० रीते थाय छे, ते वीस गतिओ श्रीगुरुना उपदेशथी आ प्रमाणे जाणवी ॥ ४३ ॥

अर्थः- अहिं १२ १८-१९ अे परेली पंक्तिमा ११ रीति आ प्रमाणे—
३-८-९ अेटले २०—अे त्रण अंकथी
१-१८-१ ,, २०— ,,
३-७ १-९ ,, २०—अे चार अंकथी (अहिं १ न्यून ८ अेटले ७ छे)
१२-१७ ,, २०—अेमा १ न्यून करवानी रीति थाण पूण नच अे
१-१९ ,, २०—सूत्रथी थाण=५ न्यून ६ अेटले
अेकाधिकपणामा पण अेज सूत्र जाणवु अने
करवानी विधी ज्योतिष शास्त्रादिकमां

* अहि १० अने ११ ना अकलो अे
गणत्रीमां लीधो छे अने १२-१३ इत्यो
लीधा नथी, कारणके २ थी ११ सुधीना

हवे नवमा स्थाने [१९ ने बदले] ५ नो [१५ नो] अक विचारतां १३-१-५ अेटले २० ॥ १-१८-१ अेटले २० ॥ १-३-१-१५ अेटले २० थाय छे. अहिं अकोने छूटा पाडवानी रीतिने जणावनार वाणरूप वस्तु दिग् दिग् अेज पाठ [पद्मावनी काव्यमां कह्यो छे ते] जाणवो. हवे पाण पण् नव अे पाठथी पांचना स्थाने ६ विचारीअे तो १३-१-६ अेटले २० तथा १-३-१-८-१-६ अेटले २० तथा ३-१-१६ अेटले २० अे प्रमाणे उपरनी पहेली २० नी योजना अगिआर प्रकारे थई अने काव्यमां कहेला अैश्वर्य, रक्षण लक्ष्मी अने भारती अे चार मांथी अग्निखूणामां त्रीजा कोठामां १५ नो अक अैश्वर्य माटे १६ नो अंक रक्षा माटे अने १९ नो अंक विद्यानो माटे स्थापवो.

अर्थः—मध्य पंक्ति १६-१०-१४ मां २० नी गतिओ आ प्रमाणे—१६-०-४ अेटले २० ॥ ६-१०-४ अेटले २० ॥ ६-०-१४ अेटले २० अे त्रण रीति मध्य पंक्तिमां थई.

तथा ११-१२-१७ अे निचेनी पंक्तिमां ११-२-७ अेटले २० ॥ १-१२-७ अेटले २० ॥ १-२-१७ अेटले २० ॥ अे प्रमाणे नीचेनी अे पंक्तिमां पण त्रण योजना दर्शावी. अे प्रमाणे आयत गति [तीर्च्छी दीर्घ पंक्तिनी पद्धतिअे] नव गति अे २० नी योजना दर्शावी, अने शेष [आठ] रीतिओ अंकना विषमपणाथी अधिक जाणवी.

(हवे उर्ध्व गतिअे २० नी योजना विचारतां) पहेली १३-१६-११ नी पंक्तिमां १३-६-१ अेटले २० ॥ ३-१६-१ अेटले २० ॥ ३-६-११ अेटले २० ॥ अे प्रमाणे पहेली उर्ध्व पंक्तिमां त्रण गतिअे २० थाय छे

बीजी १८-१०-१२ नी उर्ध्व पंक्तिमां १८-०-२ अेटले २० ॥ ८-१०-२ अेटले २० ॥ ८-०-१२ अेटले २० ॥ अे रीते मध्य पंक्तिमा त्रण रीति थई

त्रीजी १९-१४-१७ नी उर्ध्व पंक्तिमां ९-४-७ अेटले २० ॥ तथा १४ मांना ४ ने अेक अधिक गणतां ५ गणीअे अने तेनी नीचे १७ ना ७ ने १ न्यून करी ६ गणीअे तो ९-५-६ अेटले २० थाय. त्यारपछी ओ चारने अेक न्यून करी ३ गणीअे अने अे सातने अेक अधिक करी ८ गणीअे त्यारे ९-३-८ अेटले २०

५ विचारी अे तो १५-४-१ अेटले २० थाय ॥ ७-१४ १ अेटले २० ॥ थाय अने १-१-१-१७ अेटले पण २० थाय, अेमा त्रण अेकडाने पदले चार अेकठा गणवाथी अेक अेकडो अधिक गण्यो तेनु कारणके ओगणीसना कोठामा १९ अने १५ अे बन्ने अङ्कस्थापना थाय छे ते कारणथी अे अेकज कोठाना बे अेकडा गण्या वळी ओगणीसना कोठामा १९ अने १५नी अकस्थापना कराय छे ते पदरमा ५ ने अकने ६ सदृश गणीअे त्यारे १६ नो पण अक आवे तेवी १६-३-१ अेटले २० [अहि चौदमाना चार ने अेक न्यून करी त्रण गणेला छे] पुन. अे ६ ने अेक न्यून करी ५ गणीअे तो ५-१४-१ अेटले २० थाय तथा अे छ ने अेक अधिक करी ७ गणीअे [सत्तरमाना] सातने अेक अधिक करी ८ गणीअे त्यारे ७ ५-८ अेटले २० थाय अे प्रमाणे त्रीजी उर्ध्व पंक्तिमा त्रण रीते [अने न्यूनाधिक पद्धति सहित ९ रीते] वीसनी योजना दर्शावी

विदिशिपंक्तिमा ३-१०-७ अेटले २०, अने बीजी विदिशिमां ९-१०-१ अेटले २० थाय छे अहिं पण ११ ना स्थाने १ गणवाना कारणनु सम्धान पूर्वे कहेली रीते विचारवु अेमा मूळ अंक १ ज छे ते १ मा मध्य कोठामा रहेला १० ना अनुरोधथी [अनुसरणथी] ११ थयेला छे.

अे प्रमाणे अे विंशति यन्त्रमा नव योजना (नवगति) आयतगतिवाळी, नव योजना उर्ध्वगतिवाळी अने बे योजना विदिशिगतिवाळी थवाथी वीस रीते २०-२० थाय छे ॥ इति विंशति गति भेदाः ॥

अेमा १३-७ अेटले २० अे योजना गति अदोलोन रि मध्य पंक्तिमा बे कोठाना अक मेळववाथी तेटलो अक सिद्ध थाय छे, अने ते अनुसारे तेवी रीते १-३-१-१५ इत्य कोठाना [त्रण कोठाना] चार अंक कमळाकृतिवाळा विंशति यन्त्रमा चार अनुसारे शेष योजनाओ पण जाणवी इत्यादि पदवाळु काव्य] गभीर अर्थवाळु

१ अदोलन अने सिंहासन अे यन्त्रना भेद विशेष स

विचित्र होवाथी अे प्रमाणे शेष योजनाओ (२० योजनाओथी उपरान्तनी योजनाओ) जाणवी [परन्तु गणत्रीमां २० योजनाओनुंज ग्रहण कराय छे.]

एतत्काव्यनिवद्ध शुद्धचरणा-यंत्रं स्फुटं विंशतेः ।
संसूत्र्यार्जितपुण्यतो विजयतां श्रीतीर्थकृच्छाशनं ॥ ४४ ॥

अर्थः-भूविश्व=१३, सणचंद्र=१६ चंद्रपृथ्वी=११ युग्मैक=१२ अे संख्याना क्रमथी तथा चंद्रांभोनिधि=१७ अथवा १४ बाण=१५ पणू=१६ नव=१९ वसु=१८ अे चार अंकमा चंद्र पदनी अनुवृत्ति होवाथी १ नो अंकयुक्त कराय छे.] दिक्=१० तथा 'खेचराशादिपु' अे पद अनेक अर्थवालुं पूर्वे कहेवाई गयुं छे तेथी अहिं अेनो अर्थ कर्यो नथी] अे पदोवाळा पूर्वे कहेवाई गयेला काव्यमां रचायेला शुद्ध चार चरणोथी २० नो यंत्र जे रीते प्रगट थाय छे ते रीते २० नो यंत्र प्रगट दर्शावीने उपार्जन करेला पुण्यथी श्री तीर्थंकर भगवंतनुं शासन विजयवंत वर्तो ॥ ४४ ॥

तद्बाणरूप वसुदिक् । दिक् पाठोपिसमार्थित. ॥
बाण पणू मुनि वस्वाशो–स्त्येव पाठो विसाध्यतां ॥ ४५ ॥

वळी ते पाठमांथी बाण=५ रूप=१ वसु=८ अने दिक्=१० अे पाठ पण समर्थित कर्यो [प्रगट कर्यो] तथा बाण पणू=६ मुनि=७ वसु=८ अने आशा ४ अे पाठ पण सिद्ध कर्यो ते जाणवो. ॥ ४५ ॥

बाण-दृक् श्रुतयो दिग् दिग् । एवं पाठोपि चिंत्यताम् ॥
दृग-दर्शनानि षड् धातुः । श्रुतयोष्टेतिभावनात् ॥ ४६ ॥

तथा बाण=५ दृक्=६ ... दिग् दिग्=१०-१० अे पाठ पण विचारवो. अेमां दृक ... छे, अथवा छ धातु छे, श्रतिओ ८ छे अे ... अने श्रुति शब्द जाणवा.

गति वैचित्र्यमन्यत्र । यंत्रे पचदशात्मके ॥
दृश्यते लोक बोधाय । तदिहापि निदर्श्यत ॥ ४७ ॥

अर्थः–वळी बीजा प्रकारना पदरीया यंत्रमां गतिने जे विचित्रता देखाय छे ते विचित्रगति अहिं पण लोकमां ज्ञान थवाने अर्थे दर्शावाय छे ॥४७॥

' अत्रपद् द्विसप्तयंत्रे कोणगतिः ७-३-५ द्वितीय कोणगतौ ६-३ मेलने नव व्यावृत्त्य पुन. पड् गणने १५ भवंति द्वितीये ४-१०-१ अस्मिन् यंत्रे सिंहासनादि यत्रवत् मध्य पक्तिकोश द्वयादपि पंचदश पूरणात् यंत्राणां गति वैचित्र्यदर्शनादेव विंशतियंत्रं श्रद्धेय मिति भावः एकत्र कोण गतौ न्युनाधिकत्वे प्यदोषात्

अर्थः–अहिं ६–२–७ ओ अक स्थापनावाळा पंदरीया यंत्रमां विदिशागति ७-३ ५ ओटले १५ अने बीजी विदिशागतिमां ६-३ ओटले ९, अने पुनः पाछावाळीने ६ गणता [६-३-६ ओटले] १५ थाय छे वळी बीजा

६	२	७
४	३	८
५	१०	

१५

४	१०	१
२	५	८
९	ह्रीं	६

१५

प्रकारना पंदरीया यंत्रमा ४-१०-१ ओटले १५ ओ पदरीया यत्रमा सिंहासनादि यत्रनी पेठे मध्य-पक्तिमा [ओटले बीजी उर्ध्व पंक्तिमां] बे कोठाना अंकथी [१०-५ थी] पण १५ नो अक पूर्ण थाय छे, तेथी ओप्रमाणे यंत्रोनी गति विचित्र देखीने २० नो यत्र पण विचित्र गतिवाळो होय ओवी श्रद्धा करवी ओ तात्पर्य

८	१	६
३	[illegible]	[illegible]

४	३	८
९	५	१
		६

४	९	२
३	५	७
८	१	६

१५

छे [अर्थात् जेम १५ ना यंत्रो विचित्रगति वाळा दर्शाव्या तेम २० ना यंत्रो पण विचित्र गतिवाळा होय अेम जाणवु] जेथी अेक विदिशिगतिमां अंक न्यून होय (१९ वा १६ ना बदले जेम १५ होय) अथवा अधिक होय [१५ ना बदला १६ होय अथवा १९ होय] तो पण तेमां कोई प्रकारे दोष नथी अेम जाणवुं.

चंद्रांभोनिधिबाणाः षण्–मुनयो वसवो दिशः ॥
एवं पाठेपिसूत्रार्थः । साधनीयोनया दिशा ॥ ४८ ॥

अर्थः–तथा चंद्र=१ अंभोनिधि=४ [वा ७] बाण ५ षण्=६ मुनि=७ वसु=८ दिक्=९ अेवा पाठथी पण सूत्रनो अर्थ [पद्मा काव्यनो अर्थ] आ रीतिअे सिद्ध करवो [ते कहेवाय छे] ॥ ४८ ॥

भू विश्व १३ क्षण चंद्र १६ चंद्र पृथिवी११ युग्मैक १२ इति इश १ उदग् २ वायु ३ वरुण ४ स्थान चतुष्टये अकैः पुरिते सख्या क्रमादिति ११-१२-१३ १६ इत्यकक्रमात् शेषाः १४-१७-१८-१९ एतेंका यथायोगं स्थानेषु धार्याः तत्रापि बाणषण् इति सज्ञया ११ तत्संमुखे १९ पुनः १२ संमुख कोशे १८ पुनः १३ संमुखकोशे १७ पुनः १६ समुखा १४ इत्युत्क्रमादंक न्यासः अत्रपंचदशांकः पंचकपङ्क्त्योः सावर्ण्यात्षोडशांकेतर्भाव्यः एवं अष्टसुस्थानेषु पूरितेषु मध्य दिशोदशइत्यतोयसूत्रार्थः संपन्नः चंद्रेनयुक्ता' अभः जलकूप १ नदी २ तटाक ३ आकाश ४ स्थानभेदाच्चतुर्धा यद्वा अंभः शब्देन जलं तस्यस्थानं समुद्राश्चत्वारः निधयो नव बाण ५ षट्मुनय सप्त वसवोष्ट तान्मध्ये दशखेचरा गृहास्तेषां इशानादिदिक्षु इमान्मत्रान रहस्यानि ध्यायामीति ' मत्ररहस्य वार्तायामित्यमरः ' नतु मंत्रान् पाठरूपाक्षर मत्रान् इतिअत्रध्यानाधिकारेण यत्र लक्षणरूपध्यानाव लंबनात् पदस्थध्यानात् रूपध्यानस्याधिक्यात् एतेन ' चद्राभोनिधि बाणषण्मुनि वसून् ' इतिपाठसिद्धिः एवंअन्यत्रापि भावनीयं

अर्थः–भू वि-व=१३, [illegible] १६, चंद्रपृथ्वी ११, युग्मैक=१२ अे चार
अंकस्थानोने अ[illegible] [illegible]ण–उत्तरदिशा–वायव्यकोण–
अे चार [illegible]

गति वैचित्र्यमन्यत्र । यत्रे पचदशात्मके ॥
दृश्यते लोक बोधाय । तदिहापि निदर्श्यत ॥ ४७ ॥

अर्थः–वळी बीजा प्रकारना पदरीया यत्रमां गतिने जे विचित्रता देखाय छे ते विचित्रगति अहिं पण लोकमा ज्ञान थवाने अर्थे दर्शावाय छे ॥४७॥

' अत्रपञ्च द्विसप्तयत्रे कोणगतिः ७-३-५ द्वितीय कोणगतौ ६-३ मेलने नव व्याघुट्य पुनः पञ्च गणने १५ भवति द्वितीये ४-१०-१ अस्मिन् यत्रे सिंहासनादि यत्रवत् मध्य पङ्क्तिकोश द्वयादपि पचदश पूरणात् यंत्राणां गति वैचित्र्यदर्शनादेव विंशतियत्र श्रद्धेय मिति भावः एकत्र कोण गतौ न्युनाधिकत्वे प्यदोषात्

अर्थः–अहिं ६-२-७ जे अक स्थापनावाळा पदरीया यत्रमां विदिशागति ७-३ ५ अेटले १५ अने बीजी विदिशागतिमा ६-३ अेटले ९, अने पुनः पाछावाळीने ६ गणतां [६-३ ६ अेटले] १५ थाय छे. वळी बीजा प्रकारना पदरीया यत्रमा ४-१०-१ अेटले १५ अे पदरीया यंत्रमा सिंहासनादि यत्रनी पेठे मध्य-पङ्क्तिमा [अेटले बीजी उर्ध्व पङ्क्तिमा] बे कोठाना अकथी [१०-५ थी] पण १५ नो अक पूर्ण थाय छे, तेथी अेप्रमाणे यत्रोनी गति विचित्र देखीने २० नो यत्र पण विचित्र गतिवाळो होय अेवी श्रद्धा करवी अे तात्पर्य

६	२	७
४	३	८
५	१०	

१५

४	१०	१
२	५	८
९	ह्रीं	६

१५

८	१	६
३	५	७
४	९	२

१५

४	३	८
९	५	१
२	७	६

१५

४	९	२
३	५	७
८	१	६

१५

८	१	६
३	५	७
४	९	२

१५

८	३	४
१	५	९
६	७	२

१५

छे. [अर्थात् जेम १५ ना यंत्रो विचित्रगति वाळा दर्शाव्या तेम २० ना यंत्रो पण विचित्र गतिवाळा होय अेम जाणवुं] जेथी अेक विदिशिगतिमां अंक न्यून होय (१९ वा १६ ना बदले जेम १५ होय) अथवा अधिक होय [१५ ना बदला १६ होय अथवा १९ होय] तो पण तेमां कोई प्रकारे दोष नथी अेम जाणवुं.

चंद्रांभोनिधिबाणाः षण्-मुनयो वसवो दिशः ॥
एवं पाठेपिसूत्रार्थः । साधनीयोनया दिशा ॥ ४८ ॥

अर्थः-तथा चंद्र=१ अंभोनिधि=४ [वा ७] बाण ५ षण्=६ मुनि=७ वसु=८ दिश्=९ अेवा पाठथी पण सूत्रनो अर्थ [पद्या काव्यनो अर्थ] आ रीतिअे सिद्ध करवो [ते कहेवाय छे] ॥ ४८ ॥

सू बिम्ब १३ क्षण चंद्र १६ चद्र पृथिवी११ युग्मैक १२ इति इश १ उदग् २ वायु ३ वरुण ४ स्थान चतुष्टये अंकैः पुरिते संख्या क्रमादिति ११-१२-१३ १६ इत्यंकक्रमात् शेषाः १४-१७-१८-१९ एतेका यथायोगं स्थानेषु धाराः मत्रापि बाणषण् इति संज्ञया ११ तत्संमुखे १९ पुनः १२ संमुख कोणे १८ पुनः १३ संमुखकोणे १७ पुनः १६ संमुखा १४ इत्युत्क्रमादंक स्थामा अभ्रपथदशांकः पंचकपङ्क्योः सावर्ण्योत्पादशांकितभाव्यः एवं अष्टस्थानेषु पूरितेषु सप्त दिशोदशइत्यनोयंसूत्रार्थः संपन्नः चंद्रेनयुक्ताः क्रमः जलरूप १ नदी २ तडाक ३ आकाश ४ स्थानभेदाच्चतुर्धा यद्वा अंभः शब्देन जल मत्स्यस्थानं समुद्राश्चत्वारः निधयो नव बाण ५ षड्मुनय सप्त समयोष्ट तान्नवे दशाश्चैवरा गृहास्तेषां इशानादिदिक्षु इमान्मंत्रान् अक्षराणि ध्यायामीति ' मत्ररहस्य यानांपामित्यमरः ' ननु मंत्रान् पाठ-स्वाक्षर मंत्रान् इतिअत्रध्यानाधिकारेण यंत्र लक्षणरूपध्यानाव लवनात् स्वरूपध्यानात् रूपध्यानस्याभिस्यात् एनेन ' चंद्राभोनिधि बाणषणमुनि मधुर ' इतिपाठसिद्धिः एवअन्यत्रापि भावनीयं

स्थानो ११-१२-१३-१६ थाय छे. जेथी ओ क्रमथी रोप रहेला अकस्थानो १४-१७-१८-१९ अे अकस्थानोने यथायोग्य कोठाओमां स्थापवा " बाणपण् " अे सज्ञावडे [५+६=] ११ स्थापवा, अने तेनी सन्मुख

११	१८	१६ १५
१६	१०	१४
११	१९	१७

२०

१९ नो अंक स्थापवो, [अर्थात् विदिशिपंक्तिमां सन्मुख स्थापवो] पुनः ज्यां १२ स्थाप्या छे तेनी सन्मुख १८ स्थापवा, ज्यां १३ स्थाप्या छे, तेनी सन्मुख कोठामा १७ स्थापवा पुनः ज्या १६ स्थाप्या छे, तेनी सन्मुख कोठामा १४ स्थापवा, अे प्रमाणे अनुक्रमे अक स्थापना जाणवी अेमा १५ नो अंक ते पांच अने छनी. सहशता गणवाथी १६ ना अकमा अंतर्गत जाणवो अे प्रमाणे आठ कोठा पूर्ण थयाबाद मध्यकोठामा दिशः=१० स्थापवा, ते कारणथी सूत्रार्थ अे प्राप्त थयो के चद्राभोनिधि=चन्द्र अेटले १ सहित अभ=जळ ते कूवा-नदी-तलाव-अने आकाशना भेदथी ४ ५ कारनुं छे अथवा अभ अेटले जळ, तेनु स्थान जे समुद्र ते ४ छे (अर्थात् समुद्र सज्ञाथी ४ नो अक गणाय छे.), त्यारबाद निधि अेटले ९, बाण अेटले ५, अथवा ६, मुनि अेटले ७, वसु अेटले ८ ते सर्व अकोनी मध्ये दश [१०] तथा नेचर अेटले गृह ते अेने ईशानादि दिशाओमां स्थापवा अेप्रमाणे अे मन्त्रान्=रहस्योने ध्यायामि=हु ध्यान करु छु " मत्र " अे शब्दनो अर्थ रहस्यवार्तामा [गोप्यवार्तामा] प्रवर्ते छे अेम अमरकोशमा कह्यु छे. परतु अहिं मत्र अेटले पाठरूप अक्षरवाळा मंत्र नहिं, अे प्रमाणे, अहिं ध्याननो अधिकार होवाथी मत्रणा लक्षणवाळा रूपध्याननुं आलबन छे, कारणके पदस्थध्यानथी पण रूपध्यान [रूपस्थध्यान] अधिक छे, अे ध्यायाथी " चद्राभोनिधि बाणपण् मुनिवसून् " अे पाठनी सिद्धि थई जे प्रमाणे अन्यत्र [रोप सर्व प्रकारना विंशतियत्रोमा] पण अे पाठना मन्त्र अेटले रहस्यो यथायोग्य विचारवा

तपागच्छेशसूरीश । विजयप्रभसेवकः ॥
कृपाविजयधीराणां । शिष्योर्हच्छासनश्रिये ॥ ४९ ॥

आत्मज्ञानका खजाना.

प्रियविज्ञ पाठकवृन्द—

आपको यह जानकर हर्ष होगा की, आपने जैन समाजमें आज तक गीता जैसे ग्रंथका अभावही अभाव था सौभाग्यकी बात है की जिसकी पूर्ति आप महानुभावोंके समक्ष यह " **अर्हद्गीता** " ग्रंथकी चतुर्थ आवृत्ति के साथ प्रकाशित हो रही है

वैष्णव धर्ममें भगवद्गीताको कितना मान है अर्हद्गीता भी मानव समुदायके लिये उससे भगवद्गीतासे कहीं अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती है यदि विज्ञ पाठकोंने इसे आपनाया तो। क्योंकि यह अर्हद्गीता जिस अध्यात्मज्ञानरुपी सुधा रसमे ओतप्रोत है वह अद्वितीय है

श्रीगौतमस्वामी प्रथमही प्रश्न कहते हैं कि भगवान योगियोंका और गृहस्थोंका मन वशमे हो जाता है तो क्या कोई इसकी विधि है उत्तरमे विश्व वंदनीय प्रभु महावीर भगवान विधि बतलाते हुये क्या कहते है यह ग्रंथकी आदिमे आपके दृष्टीगोचर होगा.

विशेषमें आपको इस ग्रंथकी प्रशंसा लेखणीद्वारा क्या करूं पाठक आप इसको खरीदकर एक बक्त इसका जरूर मनन करें **मुल कीमत रु. ७ भेट कीमत रु २**

प्यारे भाईयों ? क्या ? आपको आकाशकी सैर करनी है ?

तो फीर आप क्यों विचार करते हो. श्रीमहावीर ग्रंथमालासे आकाशगमीनी औषधी कल्प मगाओ ताकी आपकी मनकी मुराद पुरी होगी अगर आपको वशीकरण चहाये तो इसी कल्पके साथ गोपीचंद्र नामका कल्प दिया है इस कल्पके द्वारा पत्थरहृदयभीमाम हो जाताहै औरईसीमे लिखी हुई औषधीओंसे जलस्थमन अग्नि स्थभन आदि कार्य सिद्ध होते है. यह ग्रंथ सुश्रावक नागार्जुन का बनाया हुआ है तब इसके बारेमे विशेष क्या लिखे

मुल कीमत रुपीया १५ व भेट कीमत रुपीया ७॥

मिलनेका ठिकाणा—**एस्. के. कोटेचा, धुलीया.**

जैन सायन्स जगतसुदरी पयोगमाला.

जस महत्तर थनथे ' जैनाम उनका कितनी प्रतिष्ठा थी ' वह कितने उच्च कोटीके पुरुषथे '

उस भाग्यशाली पुरुषको कौन नही पहिचानताथा ' आज उस महात्मा की कीर्तीको जन समाजके बालगोपाल सब परिचित है उनके विषयमे मै क्या लिखु

अगर जो उनका आश्चर्यकारक जाने देखनी होतो उनका बनाया हुवा **जगतसुदरी पयोगमाला** नामके ग्रथका दृष्टिगोचर करे

इसी ग्रथमें प्रयेक वस्तुओका वर्णन दीया है वगरः वस्तुक सयोगसे अनेक चमत्कारों देख मग्न हो आप इस ग्रथको एकवक्त जरूर पढे और पढावे एसा आपसे मम प्रार्थना है

तीसरीआवृत्ति मुल किमत रुपिया १० व भेट किमत ५ रु० एक शेठकी तर्फेसे

मणिओंका उत्पत्तिस्थान

मानतुग शास्त्र [कर्ता:–मानतुग सूरि]

आजतक जनताको मणिकी उत्पत्ति और उसका उपयोगिताकी बिल्कुल खबर नही. परन्तु हमारे इस ग्रथने साराही भेद बना दिया और जनताको होशियार करा दिया आपको इस ग्रथसे मणिका उत्पत्ति और उसकी उपयोगिताका ज्ञान होगा मणीद्वारा अदृश्य होना मन वांछित स्थानपे पहुंचना, वशिकरण, महाविषधरका विष क्षण भरमें हटा देना वगैरे बहोतसे कार्य सिद्ध हो सकते है ऐसे मणी महाभुक्त तीथ के एक गुप्त स्थानपर मिलते है जिसका वर्णन ग्रथकारने स्वय ग्रथमें दिया है दुर्भाग्यकी बात है का उसका उपयोगिता न मालुम होनेसे उसका जो उपयोग लिया जाय न न लेते हुये, उसको एसेही फैंक देनेमे आते है परन्तु अगर आप इस ग्रथको अपने पास रखेगे तो आपको इस ग्रथ द्वारा बहुतही फायदा होगा इस ग्रथके द्वारा बहुताने मणि प्राप्त करके फायदा उठाया है आपभी लाभ उठावें

मुल कीमत रुपीया ३ भेट कीमत रुपीया १॥

नोट'—मणिओके नाम ' हनुमान मणी, निलकट मणी, हसमणी इत्यादि बहुत मणीओके जात और नाम आपको इसी ग्रथसे मालुम होगा

अर्थः–श्रीतपागच्छना अधिपति आचार्य श्री विजयप्रभसूरिना सेवक श्री कृपाविजय धैर्यगुणवाळा तेमनो हु शिष्य ते श्री अर्हत् शासननी शोभा अथवा लक्ष्मी माटे थाओ ॥ ४९ ॥

श्रीमेघविजयप्राप्तो–पाध्यायपदविश्रुतः ॥
भू विश्वेत्यादि काव्यस्य । व्याख्यानं चक्रवानिदम् ॥५०॥

अर्थः–प्राप्त थयेला उपाध्याय पदवडे विश्रुत–प्रसिद्ध एवो हुं श्रीमेघविजय उपाध्याय तेणे आ "भू विश्व" इत्यादि पदवाळा पद्मावती विंशतियंत्रना काव्यनी विशेषव्याख्या करी ॥ ५० ॥

इति श्री पद्मावतीस्तवन मध्यस्थ भू विश्वेत्यादिकाव्यस्य
विवरणं समाप्तम्.



परिशिष्ट न. १

४	२	९
१०	५	०
१	८	६

१५

६	०	९
८	५	२
१	१०	४

१५

२	१०	३
६	५	४
७	०	८

१५

३	१०	२
४	५	६
८	०	७

१५

१	१०	४
८	५	२
६	०	९

१५

१	८	६
१	५	०
४	२	९

१५

८	०	७
३	५	६
४	१०	२

१५

७	०	८
६	५	४
२	१०	३

१५

६	८	१
०	५	१०
९	२	४

१५

४	१०	१
२	५	८
९	०	६

१५

२	६	७
१०	५	०
३	४	८

१५

७	६	२
०	५	१०
८	४	३

१५

९	२	४
०	५	१०
६	८	१

१५

९	०	६
२	५	८
४	१०	१

१५

८	४	३
०	५	१०
७	६	२

१५

३	४	८
१०	५	०
२	६	७

१५

६	७	२
१	५	९
८	३	४

१५

६	१	८
७	५	३
२	९	४

१५

२	७	६
९	५	१
४	३	८

१५

२	९	४
७	५	३
६	१	८

१५

१०	१	७
३	६	९
५	११	२

१८

११	२	८
४	७	१०
६	१२	३

२१

१६	२	१२
६	१०	१४
८	१८	४

३०

१४	७	१२
९	११	१३
१०	१५	८

३३

१	६	३	८
७	४	५	२
८	३	६	१
२	५	४	७

१८

१	७	३	८
७	४	६	२
९	३	६	१
२	५	४	८

१९

१	७	४	८
७	५	६	२
९	३	६	२
३	५	४	८

२०

१	८	४	८
७	५	७	२
१०	३	६	२
३	५	४	९

२१

१	८	५	८
७	६	७	२
१०	३	६	३
४	५	४	९

२२

१	९	५	८
७	६	८	२
११	३	६	३
४	५	४	१०

२३

१	९	६	८
७	७	८	२
११	३	६	४
५	५	४	१०

२४

१	१०	६	८
७	७	९	२
१२	३	६	४
५	५	४	११

१	१०	७	८
७	८	९	२
१२	३	६	५
६	५	४	११

१	११	७	८
७	८	१०	०
१२	३	६	५
६	५	४	१२

१७

१	११	८	८
७	९	१०	२
१२	३	६	६
७	५	०	१२

१८

१	१६	८	८
७	९	११	२
१४	३	६	६
७	५	४	१२

१९

१	१३	९	८
७	१०	११	२
१४	३	६	७
८	५	४	१३

२

१	१३	९	८
७	१०	१६	२
१	३	६	७
८	५	०	१०

२१

१	१३	१०	८
७	११	१३	२
१५	३	६	८
९	५	४	१४

२२

१	१४	१०	८
७	११	१३	२
१६	३	६	८
९	५	४	१५

२३

१५	८	१३
१०	१२	१४
११	१६	९

२६

१६	५	१५
९	१३	१७
११	२१	७

२९

१३	३	५
५	८	११
७	१३	८

२४

१३	४	१०
६	९	१२
८	१४	५

२७

१२	४	१६
८	१४	२
१२	२४	६

४२

२८	१	१८
३	१५	२७
१४	२९	३

४५

१५	४	२९
१०	१६	२२
२३	२८	७

४८

२६	५	२३
११	१७	२०
१४	२९	८

५१

३०	२	२२
१०	१८	२६
१४	३४	६

५४

३६	१	२०
३	१९	३५
१८	३७	२

५७

३२	४	२४
१२	२०	२८
१६	३६	८

६०

१	१०	१६	७
१५	८	२	९
६	१३	११	१४
१२	३	५	१४

३४

१	१४	११	८
७	१२	१३	२
१६	३	६	९
१०	५	४	१५

३४

१	८	११	१४
१०	१५	४	५
१६	९	६	३
७	२	१३	१२

३४

१	१०	८	१५
१६	७	९	२
११	४	१४	५
६	१३	३	१२

३४

१	८	१४	११
११	१५	५	४
७	२	१२	१३
१६	९	३	६

३४

१	१०	१५	८
१६	७	२	९
६	१३	१२	३
११	४	५	१४

३४

१	१०	१६	७
१५	८	२	९
४	११	१३	६
१४	५	३	१२

३४

१	१२	१३	८
७	१४	११	२
१६	५	४	९
१०	३		१५

१	८	१०	१५
११	१४	४	५
१६	९	७	२
६	३	१३	१२

३४

१	१०	८	१५
१६	७	९	२
१३	६	१२	३
४	११	५	१४

३४

१	८	१५	१०
११	१४	५	४
६	३	१२	१३
१६	९	२	७

३४

१	१०	१५	८
१६	७	२	९
४	११	१४	५
१३	६	३	१२

३४

१	११	१६	६
१४	८	३	९
७	१३	१०	४
१२	२	५	१५

३४

१	१२	१३	८
६	१५	१०	३
१६	५	४	९
११	२	७	१४

३४

१	८	११	१४
१३	१२	७	२
१६	९	६	३
४	५	१०	१५

३४

१	११	८	१४
१६	६	९	३
१०	४	१५	५
७	१३	२	१२

३४

१	८	१२	१३
१०	१५	३	६
७	२	१४	११
१६	९	५	४

३४

१	११	१४	८
१६	६	३	९
७	१३	१२	२
१०	४	५	१५

३४

१	११	१६	६
१४	८	३	९
४	१०	१३	[illegible]
१५	५	२	१२

३४

१	१५	१०	८
६	१२	१३	३
१६	२	७	९
११	५	४	१४

३४

१	८	१३	१२
११	१४	७	२
१६	९	४	५
६	३	१०	१५

३४

१	११	८	१४
१६	६	९	३
१३	७	१२	२
४	१०	५	१५

३४

१	८	१५	१०
१३	१२	३	६
४	५	१४	११
१६	९	२	७

३४

१	११	१४	८
१६	६	३	९
४	१०	१५	५
१३	७	२	१२

३४

१	१३	१६	४
१२	८	५	९
६	१०	११	७
१५	३	२	१४

३४

१	१२	१३	८
७	१४	११	२
१६	५	४	९
१०	३	६	१५

३४

१	८	१०	१५
१३	१२	६	३
१६	९	७	२
४	५	११	१४

३४

१	१३	८	१२
१६	४	९	५
११	७	१४	२
६	१०	३	१५

३४

१	८	१२	१३
११	१४	२	७
६	३	१५	१०
१६	९	५	४

३४

१	१३	१२	८
१६	४	५	९
७	११	१४	२
१०	६	३	१५

३४

१	१३	१६	४
१२	८	५	९
७	११	१०	६
१४	२	३	१५

३४

१	१४	११	८
७	१२	१३	२
१६	३	६	९
१०	५	४	१५

३४

॥ [illegible] ॥

१	१२	८	१३
१६	५	९	४
१०	६	१५	३
७	११	२	१४

३४

१	८	१२	१३
१०	१५	६	३
१६	९	५	४
७	२	११	१४

३४

१	८	१३	१२
१४	११	२	७
४	५	१६	९
१५	१०	३	६

३४

१	१३	१२	८
१६	४	५	९
६	१०	१५	३
११	७	२	१४

३४

१	१५	६	१२
१०	८	१३	३
१६	२	११	५
७	९	४	१४

३४

१	७	१६	१०
१४	१२	३	५
११	१३	६	४
८	२	९	१५

३४

१	१०	१६	७
८	१५	९	२
११	४	६	१३
१४	५	३	१२

३४

१	१६	११	६
१०	७	४	१३
८	९	१४	३
१५	२	५	१२

३४

१	१०	७	१६
८	१५	२	९
१४	५	१२	३
११	४	१३	६

३४

१	१६	६	११
१०	७	१३	४
१५	२	१२	५
८	९	३	१४

३४

१	१५	४	१४
१०	८	११	५
१६	२	१३	३
७	९	६	१२

३४

१	७	१६	१०
१२	१४	५	३
१३	११	४	६
८	२	९	१५

३४

३४

१	११	१६	६
८	१४	९	३
१०	४	७	१३
१५	५	२	१२

३४

१	१६	१३	४
१०	७	६	११
८	९	१२	५
१५	२	३	१४

३४

१	११	६	१६
८	१४	३	९
१५	५	१२	२
१०	४	१३	७

३४

१	१६	४	१३
१०	७	११	६
१५	२	१४	३
८	९	५	१२

३४

१	१४	७	१२
११	८	१३	२
१६	३	१०	५
६	९	४	१५

३४

१	६	१६	११
१२	१५	५	२
१३	१०	४	७
८	३	९	१४

३४

१	१३	१६	४
८	१२	९	५
११	७	६	१०
१४	२	३	१५

३४

१	१६	१०	७
११	६	४	१३
८	९	१५	२
१४	३	५	१२

३४

१	१०	७	१६
८	१५	२	९
१२	३	१४	५
१३	६	११	४

३४

१	१६	७	१०
११	६	१३	४
१४	३	१२	५
८	९	२	१५

३४

१	१४	४	१५
११	८	१०	५
१६	३	१३	२
६	९	७	१२

३४

१	६	१६	११
१५	१२	२	५
१०	१३	७	४
८	३	९	१४

३४

१	११	१६	६
८	१४	९	३
१३	७	४	१०
१२	२	५	१५

३४

१	१६	१३	४
११	६	७	१०
८	९	१२	५
१४	३	२	१५

३४

१	१३	४	१६
८	१२	५	९
१५	३	१४	२
१०	६	११	७

३४

१	१६	४	१३
११	६	१०	७
१४	३	१५	२
८	९	५	१२

३४

१	१२	६	१५
१३	८	१०	३
१६	५	११	२
४	९	७	१४

३४

१	७	१६	१०
१२	१४	५	३
१३	११	४	६
८	२	९	१५

३४

१	१३	१६	४
८	१२	९	५
१०	६	७	११
१५	३	२	१४

३४

१	१६	११	६
१३	४	७	१०
८	९	१४	३
१२			

१	११	६	१६
	१४	[illegible]	

१	१६	७	१०
१३	४	११	६
	५	१४	३
	९	२	१५

३४

१	१०	१६	७
८	१५	९	२
१३	६	४	११
१२	३	५	१४

३४

१	१६	१०	७
१३	४	६	११
८	९	१५	२
१२	५	३	१४

३४

१	१३	४	१६
८	१२	५	९
१४	२	१५	३
११	७	१०	६

३४

१	१६	६	११
१३	४	१०	७
१२	५	१५	२
८	९	३	१४

३४

१	१४	१२	७
११	८	२	१३
६	९	१५	४
१६	३	५	१०

३४

१	१०	१५	८
७	१६	९	२
१२	३	६	१३
१४	५	४	११

३८

१	८	१५	१०
१४	११	४	५
१२	१३	६	३
७	२	९	१६

३४

१	८	१०	१५
१४	११	५	४
७	२	१६	९
१२	१३	३	६

३४

१	१४	११	८
१२	७	२	१३
६	९	१६	३
१५	४	५	१०

३४

१	१२	१४	७
१३	८	२	११
८	९	१५	६
१६	५	३	१०

३८

१	१०	१५	८
७	१६	९	२
१४	५	४	११
१२	३	६	१३

३४

१	८	१४	११
१५	१०	४	५
१२	१३	७	२
६	३	९	१६

३८

१	१२	८	१३
१४	७	११	२
१५	६	१०	३
४	९	५	१६

३४

१	८	११	१४
१५	१०	५	४
६	३	१६	९
१२	१३	२	७

३४

१	१२	१३	८
१४	७	२	११
४	९	१६	५
११	६	३	१०

३४

१	१५	१२	६
१०	८	३	१३
७	९	१४	४
१६	२	५	११

३४

१	११	१४	८
६	१६	९	३
१५	५	४	१०
१२	२	७	१३

३४

१	८	१२	१३
१४	११	७	२
१५	१०	६	३
४	५	९	१६

३४

१	१५	८	१
१२	६	१३	३
१४	४	११	५
७	९	२	१६

३४

१	८	१०	१५
१२	१३	३	६
७	२	१६	९
१४	११	५	४

३८

१	१५	१०	८
१२	६	३	१३
७	९	१६	२
१४	४	५	११

३४

१	१२	१५	६
१३	८	३	१
४	९	१४	७
१६	५	२	११

३४

१	११	१४	८
६	१६	९	३
१२	२	७	१३
१५	५	४	१०

३४

१	८	१४	११
१२	१३	७	२
१५	१०	४	५
६	३	९	१६

३४

१	१२	८	१३
१५	६	१०	३
१४	७	११	२
४	९	५	१६

३४

१	८	१३	१२
१५	१०	३	६
४	५	१६	९
१४	११	२	७

३४

१	१२	१३	८
१५	६	३	१०
४	९	१६	५
१४	७	२	११

३४

१	१४	१५	४
११	८	५	१०
६	९	१२	७
१६	३	२	१३

३४

१	१०	१५	८
७	१६	९	२
१४	५	४	११
१०	३	६	१३

३४

१	८	१२	१३
१५	१०	६	३
१४	११	७	०
४	५	९	१६

३४

१	१४	८	११
१५	४	१०	५
१२	७	१३	२
६	९	३	१६

३४

१	८	११	१४
१२	१३	२	७
६	३	१६	९
१५	१०	५	४

३४

१	१०	१०	८
१४	४	५	१३
७	९	१६	०
१२	६	३	१३

३४

१	११	१४	४
१	८	५	११
७	९	१२	६
१६	२	३	१३

३४

१	१०	१५	८
७	१६	९	२
१२	३	६	१३
१४	५	४	११

३४

१	८	१५	१०
१२	१३	६	३
१४	११	४	५
७	२	९	१६

३४

१	१५	८	१०
१४	४	११	५
१२	६	१३	३
७	९	२	१६

३४

१	८	१३	१२
१४	११	२	७
४	५	१६	९
१५	१०	३	६

३४

१	१४	११	८
१५	४	५	१०
६	९	१६	३
१२	७	२	१३

३४

१	११	६	१६
१४	८	९	३
१२	२	१५	५
७	१३	४	१

३४

१	७	१२	१४
१०	१६	३	५
१५	९	६	४
८	२	१३	११

३४

१	१४	१२	७
८	११	१३	२
१५	४	६	९
१०	५	३	१६

३४

१	१२	१५	६
१४	७	४	९
८	१३	१	३
११	२	५	१६

३४

१	१४	७	१२
८	११	२	१३
१०	५	१६	३
१५	४	९	६

३४

१	१२	६	१५
१४	७	९	४
११	२	१६	५
८	१३	३	१०

३४

१	१३	४	१६
१२	८	९	५
१४	२	१५	३
७	११	६	१०

३४

१	७	१४	१२
१०	१६	५	३
१५	९	४	६
८	२	११	१३

३४

१	१५	१२	६
८	१०	१३	३
१४	४	७	९
११	५	२	१६

३४

१	१४	१५	४
१२	७	६	९
८	११	१०	५
१३	२	३	१६

३४

१	१५	६	१२
८	१०	३	१३
११	५	१६	२
१४	४	९	७

३४

१	१४	४	१५
१२	७	९	६
१३	२	१६	३
८	११	५	१०

३४

१	१०	७	१६
१५	८	९	२
१२	३	१४	५
६	१३	४	११

३४

१	६	१५	१२
११	१६	५	२
१४	९	४	७
८	३	१०	१३

३४

१	१४	१५	४
८	११	१०	५
१२	७	६	९
१३	२	३	१६

३४

१	१२	१४	७
१५	६	४	९
८	१३	११	२
१०	३	५	१६

३४

१	१२	७	१४
८	१३	२	११
१०	३	१६	५
१५	६	९	४

३४

१	१२	७	१४
१५	६	९	४
१०	३	१६	५
८	१३	२	११

३४

१	१३	४	१६
१२	८	९	५
१५	३	१४	२
६	१०	७	११

३४

१	६	१२	१५
११	१६	२	५
१४	९	७	४
८	३	१३	१०

३४

१	१४	१५	६
[illegible]	१३	१०	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

६८
१०
५२

१	१५	१४	४
१२	६	७	९
८	१०	११	५
१३	३	२	१६

३४

१	१५	४	१४
८	१०	५	११
१३	३	१६	२
१२	६	९	७

३४

१	१५	४	१४
१२	६	९	७
१३	३	१६	२
८	१०	५	११

३४

१	११	६	१६
१४	८	९	३
१५	५	१२	२
४	१०	७	१३

३४

१	७	१४	१२
१०	१६	५	३
१५	९	४	६
८	२	११	१३

३४

१	१५	१४	४
८	१०	११	५
१२	६	७	९
१३	३	२	१६

३४

१	१५	१२	६
१४	४	७	९
८	१०	१३	३
११	५	२	१६

३४

१	१२	६	१५
८	१३	३	१०
११	२	१६	५
१४	७	९	४

३४

१	१४	७	१२
१५	४	९	६
१०	५	१६	३
८	११	२	१३

३४

१	१०	७	१६
१५	८	९	२
१४	५	१२	३
४	११	६	१३

३४

१	७	१२	१४
१०	१६	३	५
१५	९	६	४
८	२	१३	११

३४

१	१२	१४	७
८	१३	११	२
१५	६	४	९
१०	३	५	१६

३४

१	१४	१२	७
१५	४	६	९
८	११	१३	२
१०	५	३	१६

३४

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६

३४

१	१५	६	१२
१४	४	९	७
११	५	१६	२
८	१०	३	१३

३४

५८	४०	५२
४४	५०	५६
४८	६०	४२

१५०

५२	४०	५८
५६	५०	४४
४२	६०	४८

१५०

४८	६०	४२
४४	५०	५६
५८	४०	५२

१५०

४२	६०	४८
५६	५०	४४
५२	४०	५८

१५०

५२	५६	४२
४०	५०	६०
५८	४४	४८

१५०

४२	५६	५२
६०	५०	४०
४८	४४	५८

१५०

५८	४४	४८
४०	५०	६०
५२	५६	४२

१५०

४८	४४	५८
६०	५०	४०
४२	५६	५२

१५०

६८	३०	५२
३४	५०	६६
४८	७०	३२

१५०

३२	६६	५२
७०	५०	३०
४८	३४	६८

१५०

५२	३०	६८
६६	५०	३४
३२	७०	४८

१५०

५२	६६	३२
३०	५०	७०
६८	३४	४८

१५०

३२	७०	४८
६६	५०	३४
५२	३०	६८

१५०

६८	३४	४८
३०	५०	७०
५२	६६	३२

१५०

४८	७०	३२
३४	५०	६६
६८	३०	५२

१५०

४८	३४	६८
७०	५०	३०
३२	६६	५२

१५०

७८	२०	५२
२४	५०	७६
४८	८०	२२

१५०

५२	२०	७८
७६	५०	२४
२२	८०	४८

१५०

२२	८०	४८
७६	५०	२४
५२	२०	७८

१५०

४८	८०	२२
२४	५०	७६
७८	२०	५२

१५०

२२	७६	५२
८०	५०	२०
४८	२४	७८

१५०

५२	७६	२२
२०	५	८०
७८	२४	४८

१५०

४८	२४	७८
८०	५०	२०
२२	७६	५२

१५०

७८	२४	४८
२०	५०	८
५२	७६	२२

१५०

८८	१०	५२
१४	५०	८६
४८	९०	१२

१५०

१२	८६	५२
९०	५०	१०
४८	१४	८८

१५०

५२	१०	८८
८६	५०	१४
१२	९०	४८

१५०

५२	८६	१२
१०	५०	९०
८८	१४	४८

१५०

१२	९०	४८
८६	५०	१४
५२	१०	८८

१५

४८	१४	८८
९०	५०	१०
१२	८६	५२

१५०

४८	९	१२
१४	५०	८६
८८	१०	५२

१५०

८८	१४	४८
१०	५०	९०
५२	८६	१२

१५०

९८	०	५२
४	५०	९६
४८	१००	२

१५

२	९६	५२
१००	५०	०
४८	४	९८

१५

५२	०	९८
९६	५०	४
२	१००	४८

१५०

५२	९६	२
०	५०	१००
९८	४	४८

१५

२	१००	४८
९६	५०	४
५२	०	९८

१५०

९८	४	४८
०	५०	१००
५२	९६	२

१५०

४८	१००	२
४	५०	९६
९८	०	५२

१५०

४८	४	९८
१००	५०	०
२	९६	५२

१५०

५७	४०	५३
४६	५०	५४
४७	६०	४३

१५०

४३	५४	५३
६०	५०	४०
४७	४६	५७

१५०

५३	४०	५७
५४	५०	४६
४३	६०	४७

१५०

५३	५४	४३
४०	५०	६०
५७	४६	४७

१५०

४३	६०	४७
५४	५०	४६
५३	४०	५७

१५०

५७	४६	४७
४०	५०	६०
५३	५४	४३

१५०

४७	६०	४३
४६	५०	५४
५७	४०	५३

१५०

४७	४६	५७
६०	५०	४०
४३	५४	५३

१५०

५६	४०	५४
४८	५०	५२
४६	६०	४४

१५०

४४	५२	५४
६०	५०	४०
४६	४८	५६

१५०

५४	४०	५६
५२	५०	४८
४४	६०	४६

१५०

५४	५२	४४
४०	५०	६०
५६	४८	४६

१५०

४४	६०	४६
५२	५०	४८
५४	४०	५६

१५०

५६	४८	४६
४०	५०	६०
५४	५२	४४

१५०

४६	६०	४४
४८	५०	५२
५६	४०	५४

१५०

४६	४८	५६
६०	५०	४०
४४	५२	५४

१५

६५	३०	५५
४०	५०	६०
४५	७०	३५

१५०

३५	६०	५५
७०	५०	३०
४५	४०	६५

१५०

५५	३०	६५
६०	५०	४०
३५	७०	४५

१५०

५	८०	३५
१०	५	७०
६५	६०	४५

१५०

३५	७०	४५
६०	५	४०
५५	३०	६५

१५०

६५	६०	४५
३०	५०	७०
५५	४०	३५

१५०

४५	७०	३५
४०	५०	६०
६५	३०	५५

१५०

४५	६०	६५
७	५०	३०
३५	४०	७५

१५०

४	९०	१०
१००	५०	०
१०	८०	६०

१५०

६०	०	९०
८०	५०	२०
१०	१००	४०

१५०

१०	१००	४०
८०	५०	२०
६०	०	९०

१५०

१०	८०	६०
१००	५०	०
४०	२०	९०

१५०

६०	८०	१०
०	५०	१ ०
९०	२०	४०

१५

४०	१ ०	१०
२०	५०	८०
९	०	६०

१५०

९०	२०	४०
०	५०	१००
६०	८०	१०

१५०

९०	०	६
२०	५०	८०
४०	१००	१०

१५०

देढसो यत्रोका भेद दोसो होता है उसका नमूना दाखल ७२ यत्र दिया है.
बाकी सब गुरुमुखसे समज लेना.



परिशिष्ट नं. २

॥ अथ श्रीमहावीरजिनस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

(मूलकर्ता–श्रीपादलिप्तसूरिः टीकाकार–श्रीपुण्यसागरवाचकः)

प्रणतसुरनरालिव्रातपादारविंदं ।
विदितसकललोकालोकसद्ज्ञेयवृंदम् ॥
सविनयमथ नत्वा वर्धमान जिनेशं ।
किमपि विरचयेऽहं तत्स्तवस्यार्थलेशम् ॥ १ ॥

पूर्वं तावत् श्रीपादलिप्तसूरयोऽनेकयोगसिद्धा महांतः प्रभावकपुरुषा आसन्, तदन्वये सकलज्ञानविज्ञानविज्ञाः श्रीपुण्यतिलकसूरयो विहरतोऽवंतीपुर्यां समेताः तत्र च श्रीविधिपक्षगच्छाधिराजसरस्वतीलब्धप्रसादश्रीमन्महेंद्रसिंहसूरयः सति, तेषां महिमान सकलनागरिकजननिकरवदनकमलालंकारायमान श्रुत्वा विद्यामदध्मातचित्ता श्रीपुण्यतिलकसूरयो वादलिप्सया श्रीगुरुसमीपमागता तैरुक्त च भो मया सह वादो विधेयः तदा श्रीगुरुभिरुक्त? किं वृथायासेन वादेन? प्रयोजनमनुद्दिश्य मदधियोऽपि न प्रवर्तन्ते तदा श्रीपुण्यतिलकसूरिभिरुक्तं किं वृथायासः? यो य जयति स तं शिष्यीकरोतीत्याययो सधा, तदा गुरुभिरंगीकृत, प्रारब्धश्च वाद , श्रीगुरुभिर्मुहूर्तादेव ते जिता. ततः श्रीपुण्यतिलकसूरयः स्व धन्य मन्यमाना श्रीगुरून् प्रणम्य सस्तूय च शिष्या जाता श्रीगुरुभिरपि तेषां महत्त्वरक्षणार्थं दीक्षा दत्वा शाखाचार्यत्वे स्थापिता. तत्पूर्वजाना च श्रीपादलिप्तसूरिणां विरचितमिद वीरजिनस्तोत्रं सप्रभाव बहुयोगसिद्धिसपन्न दृष्ट्वा श्रीसमवसरणमहास्तोत्रे तृतीयमहास्तोत्र स्थापित, महत्त्व चास्य स्तोत्रस्यानेकयोगसिद्धिमहत्त्व प्रमाहिमत्वेन ज्ञेयं, श्रीउपसर्गहरस्तोत्रवत्, तदन्वये चाद्यापि नवशिष्यस्य दत्वा प्रथममिद स्तोत्र पाठयतीति अस्य प्रथम...

मूलम्—जयई नवनलिणकुवलय–विय
वीरोगइदमयगल–सुल

व्याख्या–वीरो जयतीत्यन्वयः विशेषेण ईरयति गच्छति कर्मशत्रुजयाय सन्मुखतया, कंपयति वा कर्मशत्रूनिति वीरः, ईरगतिकंपनयो पचाद्यच्, कर्मशत्रुसमूहजेतृत्वाद्दर्शितपराक्रमत्वेन वीरयते इति वा वीरः वीर-विक्रांतौ, पचाद्यच् पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात् श्रीमहावीरश्चतुर्विंश तितमो जिनो जयति उत्कर्षं प्राप्नोति, जि जयेऽकर्मकोऽयं धातुः, पंच-मारकपर्यंतं यावद्विद्यमानशासनत्वेन वर्तमाने लट् मंगलार्थं च प्रथमं जयतीति पदप्रयोगः, नमस्कारश्चाक्षिप्तः, यथा जयतींद्रियकषायकर्मपरीष होपसर्गादिशत्रुगणपराजयात्सर्वानप्यतिशेते उत्कर्षं प्राप्नोति, इत्थं सर्वा-तिशायी च भगवान् प्रेक्षावतामेवदय प्रणामाह, ततो जयतीति किमुक्तं भवति ? संप्रति प्रणतोऽस्मीत्यर्थः, किंविशिष्टो वीरः ? नवनलिनकुवलय विकसितशतपत्रपत्तलदलाक्षः, नवं नवीनं, यन्नलिनं सूर्यविकासिकमलं, पुनः कुवलयं चन्द्रविकासीकमलं, पुनः विकसितं च तत् शतपत्रं, शत-शब्दोऽत्र बहुत्वोपलक्षकस्तेन सहस्रपत्रादेरपि परिग्रहः अथ समासः— नलिनं च कुवलयं च नलिनकुवलये, नवे च ते नलिनं कुवलये च नवनलिनकुवलये, विकसितं तत् शतपत्रं च विकसितशतपत्रं, नवनलिन-कुवलये च विकसितशतपत्रं च नवनलिनकुवलयविकासितशतपत्राणि, तथा पत्तलं तीक्ष्णं यद्दलं पत्रं तद्वदक्षिणी नेत्रे यस्य स नवनलिनकुवलय-विकसितशतपत्रपत्तलदक्षः बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वांगात्षजिती षच्, पत्तलशब्दोऽत्र तीक्ष्णवाचकः यदुक्तं देशीनाममालायां श्रीहेमसूरिभिः– "पत्तलपडुयइआ तह । पत्तसमिद्धं च तिक्खंमि ॥" तथा च तद्वृत्तिः– पत्तलं पडुयइं पत्तसमिद्धं एते त्रयोऽपि तीक्ष्णार्थाः, पत्तलं पत्रबहुलमिति तु पत्रलशब्दभवमिति भगवच्चक्षुषोरहोरात्रविकासित्वाद्भयोः सूर्य-विकासिचन्द्रविकासिकमलयोरुपमानत्वमुक्तं पुनः किंविशिष्टो वीरः ? प्राकृतत्वाद्विशेषणस्य परनिपातत्वान्मदकलगजेंद्रसुललितविक्रमः, मदेन कलो मनोहरो मदकलो मदोत्कट इत्यर्थः, मदोत्कटो मदकल इति श्रीहेमसूरिः एवंविधो यो गजेंद्रः सकलगजलक्षणोपेतत्वेन गजेषु इन्दति परमैश्वर्यं भजतीति गजेंद्रः सकलगजश्रेष्ठः, तद्वत् सुअतिशयेन ललिता मनोहरा या गतिस्तया विशिष्टं क्रामति गच्छतीति मदकलगजेंद्रसुललित-विक्रमः, पुनः किंविशिष्टो वीरः ? भगवान्, भगो ज्ञानाद्यर्थः, स भगवान् भगोऽर्केज्ञान माहात्म्य–यशोवैराग्यमुक्तिषु ॥

रूपबुद्धिप्रयत्नेछा—श्रीधर्मैश्वर्ययोनिषु ॥ १ ॥ इति श्रीहेमसूरिः तत्नार्क-योनिवर्जं द्वादशभगशब्दार्थयुक्त इत्यर्थः ॥१॥ अथ श्रीवीरं कविराशिपति-

मूलम्—अज्जवि वहई सुतीत्थं। अखंडियं जस्स भरहवासंमि ॥
सो वद्धमाणसामी । तेलुक्कदिवायरो जयउ ॥ २ ॥

व्याख्या—स वर्धमानस्वामी श्रीवीरजिनो जयतु सर्वोत्कर्षेण प्रवर्ततां. किंविशिष्टो वर्धमानस्वामी ? त्रैलोक्यदिवाकरः, त्रय एव लोकास्त्रैलोक्यं, चतुर्वर्णानां स्वार्थे ष्यञ् वाच्य इति ष्यञ्, स्वर्गमर्त्यपातालरूपं, तत्र दिवाकर इव दिवाकरः सूर्यः केवलज्ञानेन तस्य प्रकाशकत्वात्, त्रैलोक्य-दिवाकरः स क ? यस्य वर्धमानस्वामिनः सुतीर्थं तीर्यते ससारार्णवोऽने-निति तीर्थं चतुर्विधः सघः सकलशुभगुणोपेतत्वेन शोभन तीर्थं सुतीर्थं अद्यापि दुःषमकालेऽपि अखंडितमविछिन्न परतीर्थ्योदिखडनारहितं भरत-वर्षे भरतक्षेत्रे वहति, धातुनामनेकार्थत्वात्प्रवर्तत इत्यर्थः अथाभिधेय शक्ति-

मूलम्—गाहाजुअलेण जिणं । मयमोहविवज्जियं जियाणंगं ॥
थोसामि तिसघाएण । तिण्णसंगं महावीरं ॥ ३ ॥

व्याख्या—अहं पादलिप्तसूरिर्महावीरं जिनं त्रिसंघातेन, त्रयाणां मनो-वाक्कायानां सघातः समुदायस्त्रिसघातस्तेन त्रिकरणशुद्ध्या स्तोष्यामि स्तुतिगोचर करिष्यामित्यर्थः केन ? गाथायुगलेन, विपुलाचपलाद्यार्या-लक्षणलक्षिता प्राकृते बहुल गाथेत्यभिधीयते, तयोर्युगल युग्मं तेन. किंविशिष्ट जिन ? मदमोहविवर्जित, आनद संमोहयोः संगमोत्था मत्तता मदः, मदोमुन्मोदसभेद इति श्रीहेमसूरिः स च जात्याद्यष्टप्रकारो मोहो मौढ्यमज्ञानमिति यावत, मदश्च मोहश्च मदमोहौ, ताभ्यां विवर्जितो रहितस्त, पुनः किंविशिष्ट जिन ? जितानंग, जितः स्ववशीकृतोऽनगः कामो येन 'जियकसाय' मित्याधुनिकः पाठः, तत्र जिताः कषायाः क्रोधाद्या येन त, पुनः किंविशिष्ट जिन ? तीर्णसंगं, तीर्णः पार प्राप्तः सगः ससारानुबध्यभिष्वगो, बाह्यातरभेदभिन्नो येन तं, तत्र बाह्यः पुत्रकलत्रादिरूपः, आतरश्च कर्मपुद्गलरूपः, तीर्णससारसमुद्रमित्यर्थः, तिसङ्गाग त निसगमित्याधुनिक' तत्र तमिती

जिनमिती योज्य प्रसिद्धानुभूतार्थं सन्दर्भो यच्छन्दोपादान नापेक्षते तिसङ्ग्रागमिति तिस्रः सध्याः समाहृता इति त्रिसध्य, गोस्त्रियोरिति ह्रस्वत्व त्रिमध्य तूपचैणवमिति श्रीहेमसूरयः, त्रिसध्यमेव त्रिसध्यक, स्वार्थे कन्, क्रियाविशेषणमिद दीर्घत्व प्राकृतलक्षणात्, निस्संगमिति, निर्गतः सगान्निस्सगस्तमित्यक्षरार्थः, अथास्या गाथाया रूपासिद्धिसुवर्णसिद्ध्यादयो भूयस्य सिद्धय उक्ताः सन्ति, पर किंचिद्दिग्दर्शनमात्रमुच्यते—

'गाहाजुअलेणात्ति' गा इति गगन अभ्रक अभ्रक मेचारय स्वच्छपत्र गिरिजामलमिति हेमसूरयः, दीर्घत्व च बहुत्वव्यापकं, बहुत्व च शुभ्रादिगुणोपेतत्वेन प्राधान्यव्यापक, तेन सिताभ्रक न तु कृष्णमित्यर्थः, हा इति हरिताल, दीर्घत्व पूर्ववत्, जुअलमिति तार, एतैस्त्रिभिर्युक्त जिन पारदं, कथभूत ? 'मयमोहविवज्जिय जियाणग' मलशिखिविषदोषत्रयापेत, 'थोसामित्ति' स्तभयिष्यामि, केन कृत्वा ? त्रिसघातेन सिताभ्रकतालतारत्रयाणा योगेन, तथौपधसमवायेन जारणस्वदनविधिं करोमि पुन. कीदृश जिन ? तीर्णसग, मृतसप्तगुणसंगोत्तीर्णं महावीरमिति रूप्य, इत्यक्षरयोजनामात्रमुक्त, विशेषाम्नायस्तु सद्गुरोरवसेयः॥३॥

अथ प्रतिज्ञातमेव गाथाद्वयमाह—

मूलम्—सुकुमालधीरसोमा । रत्तकिसणपडुरा सिरिनिकेया ॥
सीय कुसगहभीरू । जलथलनहमडणा तिन्नि ॥ ४ ॥

न चयति वीरलील । हाउ जइसुराहिमत्तपडिपुण्णा ॥
पकयगइदचदा । लोयणचकमियमुहाण ॥ ५ ॥ युग्मं ॥

व्याख्या—तवेत्यध्याहार्य हे वीर ! पकजगजेंद्रचद्रा 'तिन्नित्ति' एते त्रयस्तव लोचनचक्रमितमुखाना लीला हातु न चयतीत्यन्वयः, पकज कमल, गजेंद्रो द्विपश्रेष्ट, चद्रश्चद्रमाः, एषा द्वद्वः, पकजगजेंद्रचद्रास्ते तव सबधि लोचने नेत्रे, चक्रमित गगन, मुख च वदन, एषा द्वद्व लोचनचक्रमितमुखानि तेषा ननु द्वद्वश्च प्राणितूर्यसेनागानामित्येकवदेव स्यात्तत्कथ बहुत्व ? सत्य, अधिकरणैतावत्त्वे चेति, एते त्रय, एतेषा त्रयाणामित्येवरूपे द्रव्यपरिमाणवगमे नैकवद्भाव, यथा दशदतोष्टा इति लीलाविलास, हातु जतमौचितण्यर्थत्यारत्याजितु न चयति न शक्नुवति,

प्राकृतसूत्रेण शक्तृ शक्तौ इत्यस्य धातोः चय इत्यादेशः, न समर्था भवतीत्यर्थः. ते कीदृशाः ? यदि सुरभिमत्तप्रतिपूर्णाः, यदीति संभावनाया, सुरभि घ्राणतर्पणं पंकजं मत्तो गर्जितो हस्ती प्रतिपूर्णः षोडशकलावाश्चद्रः, एषां द्वंद्वः, अह संभावयामि, यद्येते पंकजादित्रयः सुरभिमत्तप्रतिपूर्णा भवति, तथापि भवतो लोचनचक्रमितमुखाना लीलां हातुं न शक्नुवतीत्यर्थः, तव लोचन पकजादप्यधिकसुदर, तव गमन गजेंद्रगमनादप्यधिकतर सुदरं, तव मुख सपूर्णचंद्रादप्याधिकसुंदरमित्यर्थः, एव सर्वत्र विशेष्यविशेषणशब्दा यथासख्य योज्याः, पुन कीदृशास्त्रयः ? सुकुमारधीरसौम्याः, सुकुमारं कोमल पकज, धीरो धैर्यवान् गजः, 'धीरो ज्ञे धैर्यसयुते इति श्रीहेमसूरिः, सौम्यः कमनीयश्चद्रः, ततो द्वद्वः पुन कीदृशास्त्रयः ? रक्तकृष्णपांडराः, रक्तं कमल, कृष्णो गजः, पांडरः श्वेतश्चद्रः, एषां द्वद्वः, पुनः कीदृशाः ! श्रीनिकेताः, श्रियः लक्ष्म्याः शोभाया वा निकेता , निकेतनि वसत्येष्विति निकेता गृहाणि, कितनिवासे, निपूर्वः, अधिकरणे घञ, श्रीनिवासस्थानानीत्यर्थः. पुन कीदृशाः? शीतांकुशग्रहभीरवः शीत हिम, अकुशः सृणि , ग्रहो राहुरुपरागो वा ततो द्वद्व' तेभ्यो भीरवो भीताः, पुनः कीदृशा ? जलस्थलनभोमडनाः जल पानीय, स्थल स्वभावोन्नतभूमि', रूढ्या भूमिमात्र वा, नभो व्योम, ततो द्वंद्वः, तेषां मडनाः, अलकरिष्णव स्युरित्यनेकार्थसग्रह. एवविधा अपि पकजगजेंद्रचद्रास्त्रयस्तव लोचनचक्रमणमुखानां शोभां न प्राप्नुवतीति तात्पर्यार्थ' अस्मिन् गाथाद्वये पादलेपजलज्वलनशस्त्रादिस्तभनगगनगमनाऽदृष्टीकरणदयोऽनेके आम्नाया. संति, ते तु सद्गुरुगम्या इति ॥ ४ ॥ ५ ॥ अथोपसहारमाह—

मूलम्—एव वीरजिणिदो । अच्छरगणसंघसंथुउ भयव ॥
पालित्तयमयमहिउ । दिसउ खय सव्वदुरियाण ॥ ६ ॥

व्याख्या—वीरजिनेंद्र. श्रीवर्धमानस्वामी, ममेत्यध्याहार्यं, मम सर्व दुरिताना सकलपातकाना क्षय नाश दिशतु, धातूनामनेकार्थत्वात्करोत्वित्यर्थः किंविशिष्टो वीरजिनेंद्रः ? सुरवधूना गणः समुदाय., तस्य ... संस्तुत.

यद्वा अप्सरोगणः सुरवधूसमूहः, सयश्चतुर्विधस्ताभ्या सस्तुत' अप्सरस उपलक्षणत्वात्समग्रदेवदेव्य , गणः, साधुसमुदाय', सोऽस्त्य र्शआदिभ्यअच् गणा' गणधरा इद्रभूत्यादय , सघ. श्रमणादिर्ब्र विध , तैः सस्तुतः पुन कीदृशो वीरजिनेंद्रः ? भगवान्, ज्ञाना गुणयुक्त., प्रथमगाथायामुक्तविशेषणत्वात्पुनरुक्तिदोषो , नाशकनीर. उक्त च—सज्झायज्झाण तवो-सहेसु उवएसथुइपयाणेसु ॥ सतगुणकित्त णासु य । न हुंति पुणरुत्तदोसाउ ॥ १ ॥ पुनः किंविशिष्टो वीरजिनेंद्र. ! एव पूर्वोक्तप्रकारेण पादलिप्तकमतिमहितः, लिप्तौ पादौ यस्य स पादलिप्त वाहिताग्न्यादिष्विति निष्टातस्य परनिपातः, स्वार्थे कनि, पादलिप्तक प्राकृते तु कगचजतदपयवाप्रायोलुगिति सूत्रेण दकारलोपेऽकारस्य सव र्णदीर्घे पालित्तय इति भवति, तस्य या मतिर्बुद्धिस्तया महित. स्तुति-रूपपूजया पूजितः, अर्थात् कासद्रहगच्छीयपादलिप्तसूरिकृतमेतत्स्तोत्र-मित्यर्थ' ॥ ९ ॥ विधिपक्षगणाधीशा. । सूरयः सूरिसद्गुणाः ॥ श्रीअमर-सागराख्या । विचरति महीतले ॥ १ ॥ तत्पक्षद्योतका. श्रीम-द्दयासागर-वाचका. ॥ सचारित्रगुणोपेता । ज्ञानविज्ञानपेशला ॥ २ ॥ तेषा प्रसाद-मासाद्य । पुण्यसागरवाचकै. ॥ महावीरस्तवस्येय । टीका विरचिता शुभा ॥ ३ ॥ नदाग्निमुनिभूसख्ये । वर्षे मास्याश्विने सित ॥ दशम्या रविवारे च । बुरहानपुरे पुरे ॥ ४ ॥ इति श्रीमहावीरस्तवस्यावचूरि. सपूर्णा ॥ श्रीरस्तु ॥

गाहा जुअल स्तुतिः आम्नायः

पादलिप्तसूरी विरचित स्वोपज्ञस्तोत्राम्नायः

गाहा जूअलेणजिण । मयमोह विवज्जिअ जिअ कसायं ॥
थोसामि तिसधाएण । तिण्णसग महावीरं ॥ १ ॥

आम्नाय गा० गाऽभ्रक ॥ हाहारितालो ॥ जूअलेणतार मुच्यते ॥ जिनं पारद वध भूत मयमोह विवर्जित जिआणगमल क्षिखिविप दोषत्रय-

वर्जितं योसामिति स्तंभयामिकेन कृत्वा त्रिसंघातेन सिताऽभ्रक हरि- योगेन तथौषध समवायेन जारणा स्वेदन विधिं विधास्यामि । कथंभूतं जिनं तीर्णसर्गं मृतसप्तगुणवेगोत्तीर्णं । एतावता- ऽने दर्शिता अधुनापीतविधिमाह महावीरमहे ममक्षाकं हा द्वारकंवी कृष्णाऽभ्रकंरसमित्यर्थः शेषा औपम्या समाना ॥ १ ॥

सुकुमाल धीरसोम । रत्तकसिपंडुरानिकेया ॥
सीअंकुस गहभीरु । जलथलमंडणातिण्णि ॥ २ ॥

आम्नाय ॥ सुकु. नाइणिधार नाइ सोमासोमवल्ली श्रयं रत्तरत्त शुंधिका बहुफलि कचनिका 'पांडुरी देवदाल' सिद्युगधेरकं पंचकरि रुधुरिंगणी लांगलिका कुसग्रह अहिखरबीजानि भीरुसंकोइणि 'लज्जालु जलमंडिका' जलच तादृशी नममडपिका थल अंगवल्ली ॥ २ ॥

नचयंतिवीरलीलं । हाउंजे सुरहिमत्त पडिपुण्णा ॥
पंकयगइंगचदा । लोअणचंकम्मिअंसुहाणं ॥ ३ ॥

आम्नाय इदानीं रोचनक्रमेण उद्घात विधिमाह। पंकयगगनं । गयंद मत्तनागं चद्रतार हेमं वा त्रयमपि रोचनमित्यर्थः तथाक्रामण । तथोद्- घाटनमित्यर्थः ॥ ३ ॥

एववीरजिणिंदो । अच्छर गणसंघसंथुओभयवं ॥
पालित्तयमइमहिओ । दिसउ खयं सव्वदुरिआणं ॥ ४ ॥

आम्नायः यदुक्तं तारहितारु सुवर्णदस्स सुवर्णिसूओ रेव नह यजइ अलि कामणु येदुग्धाइ एइनाइं दवि करणहोई सराइ एव कृत्वा जिणिंदो अच्छरगण इति अम्ल वर्गः वरगणइति क्षारवर्गः गणःसंघइति समुदा- येन एभिः सयुओ ससतुत्य स्तंभितेत्यर्थः भगवान् सेंद्र पुज्योभवति क्रमकृत् भवति । पालियमयमहिओ महितः परिकर्मितः दिशतु क्षय सर्वं दुरितानामित्यर्थः असणे इअ नतलोनिम्मलोहो इ सदणा राहिओ पारण रहिओ पसरं अकामिओ नेअ कमइ लेहेसु ॥ ४ ॥ स्तोत्रार्थः ॥ इति श्रीपालित्तयकृत स्तोत्र- हेमकल्प स्वोपज्ञावचूरी समाप्तो ॥
संवत १६३३ परसे नकल किया

यद्वा अप्सरोगण. सुरवधूसमूहः, सवथतुर्विधस्ताभ्या संस्तुत' यद्वा अप्सरस उपलक्षणत्वात्समग्रदेवदेव्य , गणा, साधुसमुदायः, मोऽस्त्येषां, अर्शआदिभ्यअच् गणा' गणधरा इंद्रभूत्यादय., सघ. श्रमणादिश्चतुर्विध', तैः संस्तुतः पुनः कीदृशो वीरजिनेंद्रः ? भगवान्, ज्ञानादिगुणयुक्तः, प्रथमगाथायामुक्तविशेषणत्वात्पुनरुक्तिदोषो नाशकनीय' उक्त च—सज्झायझाण तवो—सहेसु उवएसथुइपयाणेसु ॥ संतगुणकित्तणासु य । न हुति पुणरुत्तदोसाउ ॥ १ ॥ पुनः किंविशिष्टो वीरजिनेंद्र. ? एव पूर्वोक्तप्रकारेण पादलिप्तकमतिमहित., लिप्तौ पादौ यस्य स पादलिप्त , वाहिताग्न्यादिष्विति निष्ठांतस्य परनिपातः, स्वार्थे कनि, पादलिप्तकः प्राकृते तु कगचजतदपयवामाप्रोलुगिति सूत्रेण दकारलोपेऽकारस्य सवर्णदीर्घे पालित्तय इति भवति, तस्य या मतिर्बुद्धिस्तया महितः स्तुतिरूपपूजया पूजित , अर्थात् कासद्रहगच्छीयपादलिप्तसूरिकृतमेतत्स्तोत्रमित्यर्थ' ॥ ६ ॥ विधिपक्षगणाधीशाः । सूरयो भूरिसद्गुणाः ॥ श्रीअमरसागराह्वा । विचरन्ति महीतले ॥ १ ॥ तत्पक्षद्योतका श्रीम-द्दयासागरवाचका ॥ सचारित्रगुणोपेता । ज्ञानविज्ञानपेशला ॥ २ ॥ तेषा प्रसादमासाद्य । पुण्यसागरवाचकै ॥ महावीरस्तवस्येय । टीका विरचिता शुभा ॥ ३ ॥ नवाग्निमुनिभूसख्ये । वर्षे मास्याश्विने सित ॥ दशम्या रविवारे च । बुरहानपुरे पुरे ॥ ४ ॥ इति श्रीमहावीरस्तवस्यावचूरिः सपूर्णा ॥ श्रीरस्तु ॥

गाहा जुअल स्तुतिः आम्रायः
पादलिप्तसूरी विरचित स्तोपज्ञस्तोत्राम्नायः

गाहा जूअलेणजिण । भयमोह विवज्जिअ जिअ कसायं ॥
थोसामि तिसंघाएण । तिण्णसग महावीर ॥ १ ॥

आम्नाय गा० गाऽथर्कं ॥ हाहारिताली ॥ जूअलेणतार मुच्यते ॥ जिनं ५ वध भूत भयमोह विवर्जित जिआणगमल द्विविधविष दोषत्रय-

वर्जितं थोसामिति स्तभयामिकेन कृत्वा त्रिसंघातेन सिताऽभ्रक हरितालकंनारत्रयाणां योगेन तथौपध समवायेन जारणा स्वेदन विधि विधास्यामि । कथभूत जिन तीर्णसगं सूतसप्तगुणवंगोत्तीर्ण । एतावताश्चेते दर्शिता अधुनापीनविधिमाह महावीरमहे ममक्षाक हा हारकंवी कृष्नाऽभ्रकंरसमित्यर्थः शेपा औपध्या समाना ॥ १ ॥

सुकुमाल धीरसोम । रत्तकसिपडुरानिकेया ॥
सीअकुस गहभीरु । जलथलमंडणातिण्णि ॥ २ ॥

आम्नाय ॥ सुकु नाइणिधार नाइ सोमासोमवल्ली त्रयं रत्तरत्त दुग्धिका बहुफलि कचनिका 'पाडुरी देवदाल' सिश्रृंगबेरकं पचकरि लधुरिगणी लांगलिका कुसग्र अहिखरबीजानि भीरुसकोइणि 'लज्जलु जलमडिका' जलच तादृशी नभमडपिका थल अगवत्ती ॥ २ ॥

नच्चयतिवीरलीलं । हाउंजे सुरहिमत्त पडिपुण्णा ॥
पंकयगईगचद्दा । लोअणंचंकम्मिअंमुहाणं ॥ ३ ॥

आम्नाय इदानी रोचनक्रमेण उद्‌घात विधिमाहा पकयगगनं । गयंद मत्तनागं चद्‌तार हेमं वा त्रयमपि रोचनमित्यर्थः तथाक्रामण । तथोद्‌घाटनमित्यर्थ ॥ ३ ॥

एवंवीरजिणिंदो । अच्छर गणसंघसंथुओभयवं ॥
पालित्तयमइमहिओ । दिसउ खय सव्वदुरिआणं ॥ ४ ॥

आम्नायः यदुक तारहिताऽ सुवर्णदस्स सुचणिसुओ रेव नहू धज्जई अहि कामणु बेदुग्घाड एहनाई दवि करणहोई सराइ एव कृत्वा जिणिंदो अच्छरगण इति अम्ल वर्गः बरगणइति क्षारवर्गः गणःसघइति समुदायेन एभिः सथुओ सस्तुत्य स्तम्भितेत्यर्थः भगवान् सेंद्र पुज्योभवति कमकृद् भवति । पालियमयमहिओ महितः परिकर्मितः दिशतु क्षयं सर्वे दुरितानामित्यर्थः असणे इअ नतलोनिम्मलोहो इ सहणा रहिओ सारण रहिओ पसर अकामिओ नेअ कमइ लोहेस्तु ॥ ४ ॥ स्तोत्रार्थः

॥ इति श्रीपालित्तयकृत स्तोत्र हेमकल्प स्वोपज्ञावचूरी समाप्तो ॥
सवत १९९३ परसे नकल किया

परिशिष्ट नम्बर ३

—: उग्रवीर कल्प :—

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
उग्रवीर महाविष्नु । ज्वलतं सर्वतोमुखम् ।
१७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२
नृसिंह भीषणभद्र । मृत्यु मृत्यु नमाम्यहम् ॥ १ ॥

१ शिर	९ द भुजा	१७ द जंघ	२५ गुदा
२ ललाट	१० वा भुजा	१८ वा जघ	२६ इद्रिय
३ द नेत्र	११ द पार्श्व	१९ द जानु	२७ पृष्ट
४ वा नेत्र	१२ वा पार्श्व	२० वा जानु	२८ गला
५ द कर्ण	१३ उदर	२१ द टाग	२९ गर्दन
६ वा कर्ण	१४ नाभि	२२ वा टाग	३० दत
७ द स्कध	१५ द कटि	२३ द पग	३१ जिव्हा
८ वा स्कध	१६ वा कटि	२४ वा पग	३२ दाद

इस मन्त्रका जप १२५००० सवालाख कम अधिक नहिं जपना प्रथम सूर्य ग्रहणके दिन जपना जितना जपा जावे उतना जाप करे फिर सवालक्ष पुरा करे बीचमे नागा [अतर] न करे नहि तो मन्त्र चला जायगा पुरा करे सिद्ध हुया जबतक सवालक्ष न होवे तबतक लोहकी खीली मन्त्रके अक्षरके उपर ३२ अक्षरका एक नबर निकालकर खीली ठोकदे दरद नाश कार्य काले दरदवालेंको २१ वार पढकर पानी देवे दरद नास हो जायगा प्रयोगमे सदा जाप करना सवालक्ष पुरा न होय तबतक १०००हजार जाप वशीकरणमें मन्त्रनाम मन्त्र सपूट करना सम्मोहन [सामने] करना नाममन्त्रनाम, लक्ष्मीप्राप्ति श्रीँमन्त्र श्रीँ,

उच्चाटन	नामनाममन्त्र	राजवश्ये	क्लीँ मंत्र क्लीँ
विद्वेषण	मन्त्र मन्त्रनाम	शत्रुदमन	ह्रीँ मन्त्र ह्रीँ
आकर्षण	मन्त्रनाम मन्त्रनाममन्त्र	भूतोत्साघन	ॐ मंत्र ॐ
स्तभण	नाममन्त्रनाममन्त्र	बाधानिवारण	क्षौँ मन्त्र क्षौँ

जब मंत्रका जाप प्रारंभ करने बैठे पहिलें इस मंत्रको पढकर फिर मंत्र सुरु करें इसमें विधि लिखीहैं वेसे करलेवे आसन बिछाकर हाथमुह धोकर स्नानकर धोती सफेद धारणकरे अस्यमंत्रस्य ब्रह्माऋषी गायत्री छंदः महानृसिंहो देवता क्ष्रौं बीज श्रीशक्तिः ह्रीं कीलकं नृसिंह-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः

क्ष्रॉं अगुष्ठाभ्यांनमः	क्ष्रीं तर्जनीभ्यांनमः
क्ष्रूँ मध्यमाभ्यानमः	क्ष्रैं अनामिकाभ्यांनमः
क्ष्रौं कनिष्टभ्यांनमः	क्ष्रः करतलपृष्टाभ्यांनमः
क्ष्रॉं हृदयाय नमः	क्ष्रीं शिरसे स्वाहा ।
क्ष्रू शिखावौषट्	क्ष्रैं कवचाय हूं
क्ष्रौं नेत्राय वौषट	क्ष्रः अस्त्रायफट् ध्यान

रक्त वर्ण महाकायं सहस्त्रादित्यवर्चसम् ।
अष्ट बाहु शस्त्रधर सिंहानन हरिंभजे ॥

लं पृथवीनत्वंगंधसमर्पयामिनमः ह आकाशतत्वपुष्पंः यं वायुतत्वंधूप र अग्नितत्वंदीपं वं जलतत्वं नैवेद्यं

फिर मत्र ३२ अक्षरका उग्रवीरका जपना प्रारभ करदेना चाहिए । गंघ (चंदनलाल) पुष्प (लालकनेर) धूप (गूगल) दीप (तिलका-तेल) नैवेद्य (गुडगेहु)

किसी जगापर मंत्र प्रारभ करना हेवे तव तीन मत्रपढकर फिर मत्र पढना दिग् बधन ॐ सहस्त्रारे हूँफुट् तीनवार पढकर अपने चारोतर्फ अक्षत या सफेद सरसों छाडके, स्थानशुद्धि ॐ पवित्र वज्रमूर्ति ॐ फट् तीन वार पढके चारोतर्फ जल छांटना, आसन शुद्धि ॐ आसू रेखे वज्ररेखे हूं फट् बामे हातसे पकडकर आसनपर १० वारपढे अनुभुतं.

दादाजी श्री जिनदत्त सूरीश्वर आम्नाय

—बावन तोला पावरती. हेम कल्प—

हरताल मारण वि. प्रथम हरताल सोधन वि । हरताल बगदादी पत्र पईसा दो भार आणिजे, कली चुनो असिल सेर ८ आणीजे, कोरा कुडा माहि चूनो राखिजे, हरताल [illegible] गा कपडा रा तेरा पुढ माहि बांधी

गठडी कीजे चुनाका कुडामाहि गठडी हरतालकी मेलीजे उपर दररोज पाणी सिंचीजे चुनो पाणीसु नीलो राखीजे, इम मास २ सिंचीजे आपरी किसीकी छाया उपर पडन न दीजे एकांत राखीजे, किनही रो पग फेरो राखीजे नहीं मास दो पीछे काढीजे, पिछे दीन३घीकुआर रा रसमें खरल कीजे दिन ३ काला भागरा रा रसमें खरल कीजे, दिन ३ अर्क दुधमें खरल कीजे, दिन ३ थोहर कांटाली रा रसमें खरल कीजे सर्व दीन १२ खरल किजे पछे टिकडी बांधिजे, पछे सेर पाव पिपलरी राख हांडीमे घाल बिचमे टिकडी मेल पचाईजे अग्नी प्रहर ३२ दिजे, आपरी छाया उपर पडन न दीजे अग्नी शीतल होय, तब काढीजे सफेद बर्फ होय असल हरताल निपजे निसदेह बात छे इस्ट देवतारी पुजा किजे, पछे हरताल परीक्षा -बावन तोलाने पाव रती बावन तोला तांबो गालने पाव रती मार मेलीजे, कंचन होवे सही सत्य छई पिछे खानेकी परीक्षा नामर्दनु दिजे, तीन दिन तीन चावल दिजे सेर ३५ दुध तोलने खीर कर उपर पाईजे अत्री २१ बरोबर सुवाणीजे पण अस्त्री हार छुटे, पण आप धापे नहीं, खलास मोडो हुवई मीसरी पईसा ११ भार उपर खवाडीजे तरा सितल हुवे अनाज सेर७पक्षो खाय, नामर्द होय सो पक्षो मर्द हुवई अस्त्री विना वालाने दीजे नहीं, दीजे तो इद्री मारी संचीत उठे लोही पडे । निपट मर्दमी हुवे तिनने चावल एक दीजे महाकामी होवे । कोढवालेको चावल तीन दीजे, उपर रोगी चिणारी खिलावे कोढ जावे खाटो खारो न खावे । धोला चाठा वालाने चावल तीन दीजे, उपर चावल मुगारी खीचडी चाठा सफेद जाय । पांडुरोग वालेको चावल तीन दीजे चावल साठी जीमाईजे पांडुरोग जाय । पेट मार वालाको चावल तीन दीजे उपर घुली गहुरी दीजे, दुध न दीजे पतासा दीजे पेटमार जाय झोलो लागो होय तिनने चार दिन चार दीजे उपर उडदारी ने चावलारी खीचडी दीजे, सीताग झोलो सर्व समाध हुवे । अस्त्री सुहागनको नहीं दीजे, जो रोगरे वांस्ते देवे तो रोग जावे पिण तिनरे संतान हुवे नहीं तिनसु अस्त्री ने नहीं दीजे । उनने काम घणो व्यापे । जीणने मिरगी वालाने दिजे दीन तीन नागरवेलके पत्रमें दिजे मिरगी जाय खारा खाटो टालीजे गहुरो लपटोने दुध दीजे मिरगी

५५ वालाने दोरती चार दिन दिजे उपर चिणारी रोटी लुखी जीमाईजे